SAṂDHIKĀVYA-SAMUCCAYA

L. D. SERIES 72

GENERAL EDITORS

DALSUKH MALVANIA
NAGIN J. SHAH

EDITED BY

R. M. SHAH

RESEARCH OFFICER

L. D. INSTITUTE OF INDOLOGY
AHMEDABAD-9

L. D. INSTITUTE OF INDOLOGY AHMEDABAD-9

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

SAṀDHIKĀVYA-SAMUCCAYA

L. D. SERIES 72

GENERAL EDITORS

DALSUKH MALVANIA

NAGIN J. SHAH

EDITED BY

R. M. SHAH

RESEARCH OFFICER
L. D. INSTITUTE OF INDOLOGY
AHMEDABAD-9

L. D. INSTITUTE OF INDOLOGY AHMEDABAD 9,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संधिकाव्य-समुच्चय

संपादक

र. म. शाह

प्रकाशक

लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर अहमदाबाद ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Printed by

(i) Text pp. 1–56

Shivlal Jesalpura
Swati Printing Press
Rajaji's Street, Shahpur
Ahmedabad-380001.

(ii) Text pp. 57-136, Bhumika pp. 1-16

Mahanth Tribhuvandas Shastri
Shree Ramanand Printing Press
Kankaria Road,
Ahmedabad-380022.

Published by

Nagin J. Shah
L. D. Institute of Indology
Ahmedabad-380009.

FIRST EDITION

January 1980

"Printed with the financial assistance
of the Government of Gujarat"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रधान संपादकीय

डॉ. र. म. शाहे संपादित करेलां ई.स.नी १३मी थी १५मी सदीना गाळामां रचायेलां वीश संधिकाव्योनो समुच्चय 'संधिकाव्य-समुच्चय' नामे प्रकाशित करतां आनंद थाय छे. आ संधिकाव्यो संशोधित पाठ साथे सौप्रथम ज प्रकाशित थाय छे.

काव्यरसिको अने भाषाशास्त्रीओने उपयोगी सामग्री आ संधिकाव्योमांथी उपलब्ध थशे. आ संधिकाव्यो भाषानी दृष्टिअे अपभ्रंश अने प्राचीन गुजराती वच्चेनी कडी समान छे. बीजा प्राचीन गुजराती काव्यप्रकारो करतां आ काव्यप्रकारमां अपभ्रंशनी असर विशेष छे. सांस्कृतिक सामग्रीना अभ्यासनी दृष्टिअे पण आ काव्योनुं महत्त्व छे.

डॉ. शाहे अभ्यासपूर्ण भूमिकामां संधिकाव्यनुं स्वरूप, तेनो उद्‌भव अने विकास, संचित संधिकाव्योनुं विषयवस्तु अने मूलस्रोत, तेमनुं कर्तृत्व अने रचनासमय, छंदोविधान अने प्रतिपरिचय — आ बधानी समुचित माहिती आपी छे. वळा, अंते तेमणे भाषानी दृष्टिअे महत्त्व धरावता शब्दोनी सूचि आपीने ग्रंथने वधु उपयोगी बनाव्यो छे. आ बधा माटे डॉ. र. म. शाह अभिनंदनने पात्र छे.

जूनी गुजराती साहित्यकृतिओना प्रकाशनमां सहकार आपवा बदल गुजरात राज्यना भाषानियामकश्री हसितभाई बुच अने नायब भाषानियामक श्री ई. शि. जोषीपुरानो हुं अंतःकरणपूर्वक आभार मानुं छुं. आ ग्रंथना प्रकाशनमां आर्थिक सहाय करवा बदल गुजरात सरकारनो हुं आभारी छुं.

ला० द० भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर,
अमदावाद : ३८० ००९
१ जान्युआरी १९८०

नगीन शाह
अध्यक्ष

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनुक्रम

भूमिका १–१४

प्रास्ताविक, संधिकाव्य : स्वरूप, उद्भव अने विकास, विषय–वस्तु अने मूल–स्रोत, कर्तृत्व अने रचना-समय, छंदोविधान, प्रति-परिचय, उपसंहार.

मूळ पाठ १–१२०

(१) रिसह–पारणय–संधि १–८

(२) वीरजिण–पारणय–संधि ९–१९

(३) गयसुउमाल–संधि २०–२९

(४) सालिभद्द–संधि २८–३६

(५) अवंतिसुकुमाल–संधि ३७–४२

(६) मयणरेहा–संधि ४३–४७

(७) अणाहि–संधि ४८–५०

(८) जीवाणुसट्ठि–संधि ५१–५२

(९) नमयासुंदरि–संधि ५३–५८

(१०) चउरंग–भावण–संधि ५९–६४

(११) आणंद–सावय–संधि ६५–७१

(१२) अंतरंग–संधि ७२–८२

(१३) केसी–गोयम–संधि ८३–८९

(१४) भावणा–संधि ९०–९५

(१५) सील–संधि ९६–९८

(१६) उवहाण–संधि ९९–१००

(१७) हेमतिलयसूरि-संधि १०१–१०४

(१८) तव–संधि १०५–१०९

(१९) अणाहि–महरिसि–संधि ११०–११७

(२०) उवएस–संधि ११८–१२०

शब्दकोष १२१–१३२

शुद्धिपत्र १३३–१३६.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भूमिका

प्रास्ताविक

ईसुनी १३मी थी १५मी शताब्दी सुधीना त्रणसो वर्षना गाळामां प्राचीन गुर्जर भाषामां रचायेला 'संधि' नामे ओळखातां वीश काव्यो संशोधित पाठ साथे संगृहीत करी अहीं प्रथम वार प्रगट करतां आनंद थाय छे.

गुजरातमां ईसुनी बीजी सहस्राब्दीना प्रारंभथी ज भाषामां प्रादेशिक वलणो देखा देवा लाग्या हता. जो के शिष्टमान्य साहित्य–भाषा तरीके अपभ्रंशनुं स्थान हेमचंद्राचार्यना समय सुधी अविचळ हतुं, छतां तेमां य प्रादेशिक लाक्षणिकताओ स्पष्टपणे जणाती हती. भोजे गुर्जरोने पोतानो अपभ्रंश प्रिय होवानुं कह्युं छे, ते पण आवा गुर्जर लाक्षणिकताओवाळा अपभ्रंशने माटे ज दशमीथी बारमी शताब्दी सुधीना आ अपभ्रंशनी गणी गांठी रचनाओ ज आपणने प्राप्य छे–धाहिलनुं पउमसिरिचरिय, साधारणनी विलासवई–कहा, हरिभद्रनुं नेमिनाहचरिय अने केटलीक प्राकृत कृतिओमांनो अपभ्रंश अंश वगेरे.

हेमचंद्राचार्यनी पछी तो प्रादेशिक तत्त्वोथी भरपूर भाषानुं ढगलाबंध साहित्य मळवा लागे छे. रास, चोपाई, फागु, वीवाहलु, कक्क, चर्चरी वगेरे जेवा नवा काव्य–प्रकारोमां रचायेलो सेंकडो कृतिओनी जैन भंडारोमांथी थयेली उपलब्धि अने छेल्ला पचासेक वर्षमां आवी अनेक कृतिओना थयेलां प्रकाशनोथी उपरोक्त हकीकत सिद्ध थाय छे.[1] आ प्रादेशिक तत्त्वोथी भरेली भाषा ते प्राचीन गुर्जर भाषा.[2]

लगभग १२ मी शताब्दीना अंतथी मळती संधिओ पण आ प्राचीन गुर्जर भाषानी रचनाओ छे. जो के तेनुं बाह्य स्वरूप सीधुं अपभ्रंशमाथी ऊतरी आव्युं होई रासादि अन्य काव्योनी तुलनाए तेमां अपभ्रंशनी असर विशेष छे.

त्रणसो वर्षना गाळामां रचायेल आ संधिकाव्योमां प्राचीन गुर्जर भाषाना तत्कालीन सीमाप्रदेश एटले के हालना गुजरात, पश्चिम राजस्थान अने माळवाना भाषा, इतिहास अने संस्कृतिना अभ्यास माटे महत्त्वपूर्ण सामग्री सचवाई छे.

संधिकाव्य : स्वरूप, उद्भव अने विकास

जेम संस्कृत महाकाव्य सर्गोमां अने प्राकृत महाकाव्य आश्वासोमां विभक्त थाय छे, तेम अपभ्रंश महाकाव्य 'संधि' नामक भागोमां विभक्त थाय छे.[3] अपभ्रंशनुं उपलब्ध साहित्य जोवाथी ए वातनी तरत ज प्रतीति थाय छे के अधिकतर अपभ्रंश महाकाव्यो 'संधिबद्ध' के 'संधिबंध' छे. बे-चारथी लई सोथी पण अधिक सुधीनी संधिओमां रचायेलां चरित-काव्यो, कथा-काव्यो अने पुराण-महापुराणो अपभ्रंशनी ज विशेषता छे.

आ 'संधिबंध' ना संधिनुं विभाजन पाछुं 'कडवक' मां थाय छे. प्रारंभमां संधिबंध काव्योमां आ कडवक आठ पंक्तिओ के कडीओनुं रहेतुं अने संधिना आरंभमां तथा प्रत्येक

---

१. जुओः गुजराती साहित्यनो इतिहास, गु. सा. परिषद, भा–१, विभाग–२.

२–प्राचीन गुजराती अने अपभ्रंश वच्चेना संबंध तथा प्रा. गु. नी लाक्षणिकताओ व. माटे जुओ–गुजराती साहित्यनो इतिहास भा–१ (प्रकरण–२ अने ४, ले. ह. चू. भायाणी)

३. 'पद्यं प्रायः संस्कृत-प्राकृतापभ्रंश-ग्राम्यभाषा-निबद्ध-भिन्नान्त्य-वृत्त-सर्गाऽऽश्वास-संध्यवस्कंध-बंधं सत्संधिशब्दार्थ-वैचित्र्योपेतं महाकाव्यम् ।।' —काव्यानुशासन ८.६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कडवकना अंतमां 'ध्रुवक' के 'घत्ता' नामे आळखाती एक एक कडी रहेती.[1] जो के उपलब्ध संधिबंध काव्योमां कडवकनी कडीओनी संख्या नियत होय तेम जणातुं नथी. ते आठथी मांडी वीश-पचीस सुधीनी पण जोवा मळे छे.[2] कडवकनी पंक्तिओ अंत्यानुप्रासवाळी अने मात्रामेळ छंद जेवा के पद्धडिआ, वदनक, पारणक इत्यादिमांथी कोई एकमां रचवामां आवती. संधिनी आरंभनी कडी तथा दरेक कडवकने अंते आवती कडी-घत्ता-नो छंद कडवकना छंदथी जुदो रहेतो.

आ 'संधिबंध' महाकाव्यनुं लघु स्वरूप आपणुं संधिकाव्य छे. संधिकाव्यनुं बाह्य स्वरूप 'संधिबंध'ना एक संधि जेवुं छे.—ध्रुवक एटले संधिनी शरूआतनी एकाद कडी, पछी प्रासबद्ध पंक्तियुगलोवाळां कडवको अने दरेक कडवकना अंतमां घत्ता. कडवकोनी संख्या क्वचित एकाद -बे परंतु मोटा भागे पांचथी पंदर सुधी अने दरेक कडवकनी अंदर आठथी मांडी चालीस सुधीनी प्रासबद्ध पंक्तिओ. केटलांक संधिकाव्योमां अंतमां कर्तानुं नाम के परिचय आपती लघु प्रशस्ति. आ थयुं संधि-काव्यनुं बाह्य कलेवर.

प्राकृत कथा के काव्यमां कोई विशिष्ट प्रसंगनुं वर्णन करवुं होय, कोई विशिष्ट व्यक्तिनुं नानुं चरित्र मूकवुं होय के रसपरिवर्त्तन करवुं होय त्यारे अपभ्रंश भाषा प्रयोजवानी एक रूढि दशमी शताब्दी पछीना जैन लेखकोमां जणाई आवे छे. धनेश्वरसूरिनुं **सुरसुंदरिचरित** (रचना ई. स. १०३८), वर्धमानसूरि-कृत **आदिनाथचरित अने मनोरमाकथा** (रचना ई. स. १०८४), देवचंद्रसूरि-रचित **मूलशुद्धिप्रकरण-टीका**(ई. स. १०८९)अने **शांतिनाथचरित** (ई. स. ११०४), आम्रदेवसूरिकृत **आख्यानकमणिकोश-वृत्ति** (ई. स. ११३४), सोमप्रभसूरिकृत **कुमारपाल-प्रतिबोध** (ई. स. ११८४) अने **सुमतिनाथचरित** वगेरे अनेक प्राकृत कृतिओमां अपभ्रंशना छूटक अंशो छे.

आमां देवचंद्रसूरिरचित **मूलशुद्धिप्रकरण**-वृत्ति (ई. स. १०८९) मां सर्व प्रथम ज एक संधिकाव्य मळे छे. **सुलसाख्यान** के **सुलसाचरित** नामक आ काव्य १७ कडवकनुं बनेलुं छे. मूळ ग्रंथथी अलग एकला आ संधिनी प्रतिओ पण मळे छे. तेथी ए प्रसिद्ध पण हशे एम मानी शकाय छे. कर्ताए तेने 'संधि' तरीके पण ओळखावेल छे. आम अत्यार सुधी प्राप्त थतां संधिकाव्योमां आ आद्य छे. आ पछी आम्रदेवसूरि-विरचित **आख्यानकमणि-कोशवृत्ति**—

१. 'संधयादौ कडवकान्ते च ध्रुवं स्यादिति ध्रुवा ध्रुवकं घत्ता वा ॥ कडवक-समूहात्मकः सन्धिरस्त-स्यादौ । चतुर्भिः पद्धडिकाद्यैश्छन्दोभिः कडवकम् । तस्यान्ते ध्रुवं निश्चितं स्यादिति ध्रुवा ध्रुवकं घत्ता चेति संज्ञान्तरम् ॥' —छन्दोऽनुशासन (सटीक) ६.१

२. स्वयंभूकृत **पउमचरिय**, पुष्पदन्तकृत **महापुराण**, **जसहरचरिय**, **णायकुमारचरिय**, साधारण-कृत **विलासवई-कहा** इत्यादि ग्रंथो जोतां आ वात स्पष्ट थाय छे.

३. काव्यनो अंत आम छे.—

एह **संधि** पुरिसत्थ-पसत्थिय देवचंदसूरीहिं समत्थिय ।
इय बहुगुणभूसिउ, जिणसुपसंसिउ, सुलसचरिउ धम्मत्थियहं ।
निसुणंत-पढंतह, भत्तिपसत्तह, देउ मोक्खु मोक्खत्थियहं ॥

सुलसाख्यान, मूलशुद्धिप्रकरणवृत्ति, पृ. ५६.
(संपा. अ. मो. भोजक, अमदावाद १९७१)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जेमां सो उपरांत प्राकृत आख्यानो संग्रहाया छे–मां पण बे संधिकाव्यो मळे छे (१) **सामप्रभाख्यान अने** (२) **चारुदत्ताख्यान.** आ उपरांत हजी अप्रगट प्राकृत साहित्यमां संधिकाव्यो होवानो घणो संभव छे. आम अगियारमी शताब्दीना अंतभागमां ज संधिकाव्यो रचावानी शरूआत थई गयेली.

उपरोक्त त्रणे संधिओनी भाषा शिष्टमान्य अपभ्रंश छे. आ पछी छेक सो वर्षना गाळा पछी रत्नप्रभसूरि-कृत **उपदेशमालावृत्ति** (ई. स. ११८२) मां संधिकाव्यो मळे छे. अहीं आवतां भाषा–स्वरूपमां वधु ने वधु प्रादेशिक वलणो नजरे पडे छे. बीजुं, संधिकाव्यनी स्वतंत्र रचनाओ पण मळवा लागे छे, तेम ज तेनो विषय पण आख्यायिका के चरित्रनो ज न रहेतां व्यापक बनवा लागे छे. अहीं ग्रंथस्थ संधिओना विषयवस्तु तरफ नजर नाखवाथी आ हकीकत स्पष्ट थाय छे,

उपदेशप्रधान होवा छतां आकर्षक घटना-विधान, सरळ भाषा अने प्रवाही छंदोरचनाने कारणे संधिकाव्यो भाववाही ऊर्मिकाव्यो बनी शक्यां छे. संधिकाव्यनो आ प्रवाह छेक अढारमी सदीना अंत सुधी चाले छे[1] ए स्वाभाविक छे के पंदरमी सदी पछीनी संधिओनी भाषा वधु ने वधु अर्वाचीन थती जाय छे.

विषय–वस्तु अने मूळ-स्रोत

१. ऋषभ-पारणक-संधि :

आ संधिनो विषय प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेवना जीवन–प्रसंगनो छे. प्रथम दीर्घ तपश्चर्याने अंते भगवानने पौत्र श्रेयांसकुमारे इक्षुरसथी करावेल पारणानो प्रसंग केन्द्रमां राखी भगवानना गृहस्थ-जीवन, तपश्चर्या अने मुनि-जीवननुं टूंकु वर्णन कविए कर्युं छे.

आवश्यक-निर्युक्तिमां आ प्रसंग सौ प्रथम उल्लेखायो छे.[2]

२. वीरजिन-पारणक-संधि :

आमां चरम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामीने चन्दनबालाए करावेल पारणानो विषय केन्द्रमां छे. पिताना राज्यनो नाश अने मृत्यु, मातानुं अपहरण अने अवसान, पोतानी बेहाल दशा–आवी अवस्थामां राजकुमारी चन्दनबाला भगवान महावीरने भावपूर्वक पारणुं करावी महापुन्यनुं उपार्जन करे छे

'अंतकृत्दशा' मां चन्दनबालानी कथा मूळस्वरूपमां मळे छे.

३. गजसुकुमाल-संधि :

देवकीना पुत्र अने कृष्णना नाना भाई गजसुकुमालनी प्रेरक कथा आ संधिमां छे. कुमारावस्थामां ज वैराग्यरंग लागतां भगवान नेमिनाथ पासे दीक्षा लई, ते ज दिवसे एक रात्रिनी प्रतिमा (एक प्रकारनुं निश्चल ध्यान) धारण करी गजसुकुपाल उग्र परीसह समभावपूर्वक सहन करी अंतकृत् केवली थई निर्वाण पामे छे.

आ कथा 'अन्तकृत्दशा सूत्र'मां त्रीजा वर्गमां आवे छे.

---

१. जुओ–अपभ्रंश भाषा के संधिकाव्य और उनकी परम्परा : अगरचंद नाहटा ('राजस्थानी' वर्ष १, पृ. ५५–६४)

२. अहीं तथा पछीना आगमग्रन्थोना संदर्भो **Prakrit Proper Names, Parts 1-2 (L. D. Series-28 and 37)** ना आधारे आपवामां आव्या छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. शालिभद्र संधि :

एक दरिद्र कामवाळीनो पुत्र पोताना माटे महामुश्केलीथी माताए रांधेल खीर साधुने वहोरावी, अतिशय पुण्य प्राप्त करी, मरीने गोभद्र सार्थवाहना पुत्र शालिभद्र रूपे जन्मे छे. जेना वैभवनी वात सांभळी राज श्रेणिक पण चकित थई जाय छे, तेवो शालिभद्र पोते य स्वतंत्र नथी एम जाणतां ज बधो वैभव त्यजी साधु बनी जाय छे. एनी सुंदर कथा आ संधिमां छे.

'स्थानांग सूत्र' नी अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिमां आ कथानक प्रथम वार मळे छे.

५. अवंतिसुकुमाल संधि :

महावैभवशाळी सार्थवाह-पुत्र अवंतिसुकुमालने आर्य सुहस्तिसूरिना प्रातस्वाध्यायगानथी जातिस्मरण थाय छे अने ते माताना अनिच्छा छतां वैभव छोडी दीक्षा ले छे. अने ते ज दिवसे उग्र तपश्चर्या करी, शीयाळे शरीर फोली खावा छतां ध्यानमां अडग रही, केवळज्ञान अने निर्वाण साथे ज पामे छे.

'आवश्यकचूर्णि' मां आ कथानक प्रथम वार आवे छे.

६. मदनरेखा संधि :

'उत्तराध्ययन सूत्र' ना नवमा 'नमि-प्रव्रज्या' नामक अध्ययनमां आवता नमि राजर्षिनी कथा नेमिचन्द्रसूरिकृत 'सुखबोधा' नामक टीकामां विस्तारथी आपवामां आवेल छे. प्रस्तुत संधिनी कथावस्तु ए ज छे. नमि राजर्षिनी माता मदनरेखा जैन सतीओमां प्रसिद्ध छे. बारमी शताब्दीमां थयेल भा. जिनभद्रसूरिए संस्कृतमां 'मदनरेखा-आख्यायिका' नामे विस्तृत रचना आ कथानक लईने करेल छे.

७. अनाथि संधि :

मनुष्य गमे तेटली भौतिक समृद्धि धरावतो होय पण एना पोताना ज जन्म, जरा अने मृत्युना विषयमां ए परतंत्र छे, निःसहाय छे ए दर्शावती अनाथि मुनिनी कथा 'उत्तराध्ययन सूत्र'-गत वीशमां 'महानिर्गंथाय अध्ययन' मां आवे छे. आ संधिमां तेम ज १९ मी संधिमां आ कथानकने काव्यरूप अपायुं छे.

८. जीवानुशास्ति संधि :

संधिना नाम प्रमाणे आमां जीवोने अनुशास्ति एटले के शीखामण आपवामां आवी छे. जीव केवी केवी गतिमां जईने, केटलां दुःखोने अंते मनुष्य-भवमां आवे छे अने त्यां विषय-रसमां लुब्ध थई देव-गुरु-धर्मने भूली जाय छे—ए दर्शावी कवि जीवने उपदेश आपे छे अने जिन भगवानने अनुसरवा कहे छे.

९. नर्मदासुंदरी संधि :

जैन धार्मिक साहित्यमां सती नर्मदासुंदरीनी कथा पण प्रसिद्ध छे. 'आवश्यक-सूत्र' नी निर्युक्तिमां नर्मदासुन्दरीनुं नाम मळे छे. तेनी पल्लवित थयेल कथा आ.देवचन्द्रसूरि-कृत मूलशुद्धिप्रकरण-वृत्ति (ई. स. १०८९) मां सौ प्रथम मळे छे. ई. स. ११३० मां महेन्द्र-सूरि नामक आचार्ये प्राकृत भाषाबद्ध विस्तृत नर्मदासुन्दरीकथा रची छे. अहीं ए ज वस्तु संधिरूपे मळे छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०. चतुरंग-भावना-संधि :

उत्तराध्ययन सूत्रना तृतीय अध्ययननुं नाम **चतुरंगीय** अध्ययन छे. तेमां जीवोने दुर्लभ एवी चार वस्तुओ गणावी छे–मनुष्यत्व, धर्मश्रवण, धर्मश्रद्धा अने संयमनी शक्ति. 'उत्तराध्ययन' नी प्रसिद्ध टीका 'सुखबोधा' मां आ चारे दुर्लभ वस्तुनी सदृष्टांत चर्चा मळे छे. ए ज वस्तु अहीं संधिरूपे रजू थई छे.

११. आनंद-श्रावक-संधि :

सप्तम अंग 'उपासकदशा'-ना प्रथम अध्ययनमां आवतुं आनंद उपासकनुं जीवनचरित्र आ संधिनो विषय छे. आनंद भगवान महावीरना जीवनकाळमां थयेला तेमना अनुयायी मुख्य श्रावकोमांनो एक हतो. श्रावकनी अगियार प्रतिमा पाळी तेणे महान अवधिज्ञान मेळव्युं हतुं ते कथा आ संधिनो विषय छे.

१२. अंतरंग संधि :

आ एक रूपकात्मक काव्य छे, अंतरंग शत्रु मोहरूपी राजाने पराजित करी जिनेन्द्र भगवंते भव्य जीवोने केवी रीते बचाव्या तेनुं वर्णन नाट्यात्मक रीते आमां करवामां आव्युं छे.

आ रचना मौलिक जणाय छे. प्राचीन गुर्जर भाषामां रूपककाव्य तरीके मळती जूज रचनाओमां आथी आ महत्वपूर्ण छे.

१३. केशी–गौतम संधि :

'उत्तराध्ययनसूत्र' ना २३ मा 'केशी-गौतमीय' अध्ययनमां २३ मा तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथना एक गणधर केशी अने भगवान महावीरना प्रथम शिष्य गौतम गणधरना मिलननी वात छे. ते प्रसंगे भ. पार्श्वनाथ अने भ. महावीरना अमुक सिद्धांतोमां देखाती भिन्नता विशे केशी गणधरने थयेल शंकाओनुं गौतम निवारण करे छे. आ बे वच्चेना संवादने कविए कुशळतापूर्वक आ संधिमां गुंथी लीधो छे.

१४. भावना संधि :

वैराग्यने उत्कारक एवी १२ भावनाओ जैन धार्मिक साहित्यमां जाणीती छे. छेक 'आचारांगसूत्र' ना द्वितीय श्रुतस्कंधमां १२ भावनाओ वर्णवाई छे अहीं एने केन्द्रमां राखी सामान्य मनुष्ये जीवनमां शुं करवुं जोईए एनो उपदेश आपवामां आवेल छे. अहीं आपेला मनुष्य-जन्मनी दुर्लभता अंगेना दश दृष्टांतो हरिभद्रसूरि-रचित उपदेशपदमां आवे छे.

१५. शीलसंधि :

शील एटले के चारित्र्यनो महिमा अहीं गावामां आव्यो छे. भगवान महावीर प्रणीत पांच महाव्रतमां चोथुं ब्रह्मचर्य व्रत छे. तेना पालनथी थता अपूर्व लाभ अने भंगथी थतां नुकशाननां अनेक दृष्टांतो आपी कविए शीलपालननो उपदेश आप्यो छे.

१६ उपधान संधि :

आमां जैन–धर्म–प्रसिद्ध उपधान-नामक तपश्चर्यानुं माहात्म्य जणावी, तेना अनुष्ठाननी विधि विगते आपवामां आवी छे.

१७ हेमतिलकसूरि संधि :

ईस्वी चौदमी सदीना प्रारंभकाळे थई गयेला हेमतिलकसूरि नामक आचार्यना जीवन-प्रसंगोने रजू करती आ संधि तेमना ज कोई शिष्य के प्रशिष्ये रची होवानो संभव छे. अने

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेथी ऐतिहासिक महत्त्व धरावे छे. हेमतिलकसूरि वडगच्छना आचार्य वज्रसेनसूरिना पट्टशिष्य हता. तेमना मुनि–जीवनना अगत्यना बनावोनी सालवारी संधिमां आ प्रमाणे छे–दीक्षा सं. १३५३ (ई.स.१२९७),वाचनाचार्य–पदवी सं. १३७० (ई.स.१३१४), आचार्यपद सं.१३७४ (ई. स.१३१८) अने स्वर्गवास सं.१४१२ (ई. स १३५६)

१८. तप संधि :

आमां जैन धर्म प्रणीत बार प्रकारना तपनुं माहात्म्य दर्शावी तप करवानो उपदेश करवामां आव्यो छे. जीभनी लोलुपताथी थतां दुःखोनुं वर्णन करी कवि मनुष्योने तेनाथी वारे छे. तप करी जन्म सफळ करनार तपस्वीओना दृष्टांतो आपी कवि तपनो महिमा करे छे.

१९ अनाथि-महर्षि संधि :

आ संधिनुं कथावस्तु ७ मी अनाथि संधि प्रमाणे ज छे. अहीं एने अनेकविध वर्णनोथी पल्लवित करवामां आव्युं छे.

२० उपदेश संधि :

संधिना नाम प्रमाणे आमां सीधो सरळ उपदेश ज आपवामां आवेल छे. प्रथम श्रावकना बार व्रत पाळवानो अनुरोध करी पछी कवि सामान्य सदाचरणना विविध नियमो पाळवानो उपदेश करे छे.

कर्तृत्व अने रचना-समय

संधि १–५

प्रथम पांच संधिना रचयिता आ. रत्नप्रभसूरि छे. आचार्य वादिदेवसूरिना शिष्य आ. रत्नप्रभसूरि १३मा शतकना एक प्रखर जैन दार्शनिक अने कवि हता. एमणे संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश आदि विविध भाषाओमां विपुल साहित्यसर्जन कर्युं छे.

वादिदेवसूरि-रचित न्यायग्रन्थ 'प्रमाणनयतत्त्वालोक' नी 'रत्नाकरावतारिका' नामक प्रसिद्ध टीका आ. रत्नप्रभसूरिनी महत्वपूर्ण कृति छे.[1] आ ५००० श्लोक प्रमाण संस्कृत गद्य रचना तेमनी दार्शनिक तथा कवि बन्ने तरीकेनी योग्यता पुरवार करवा समर्थ छे. 'मतपरीक्षापञ्चाशत' एमनो बीजो दार्शनिक ग्रंथ गणाय छे, परन्तु ते हजु सुधी उपलब्ध थयो नथी.

'नेमिनाथचरित्र' अने 'पार्श्वनाथचरित्र' ए बे एमना रचेला महाकाव्यो छे. जेमां क्रमे २२मा अने २३मा तीर्थंकरना जीवनचरित्र वर्णवायेल छे 'नेमिनाथचरित्र' ए १३६०० श्लोक प्रमाण प्राकृत भाषाबद्ध रचना छे. तेनी रचना स. १२३३ (ई.स.११७७) मां थई छे.

अत्र संगृहीत संधि काव्यो जेमांथी लीधा छे ते 'दोघट्टी वृत्ति' नामक प्रसिद्ध टीका, रत्नप्रभसूरिए धर्मदास गणिनी 'उपदेशमाला' नी विशेष वृत्ति रूपे रचेली छे. १११५० श्लोक प्रमाण आ वृत्ति संस्कृत गद्यमां छे. तेमां प्राकृत कथाओ उपरांत अपभ्रंश पद्यांशो पण घणा छे. आ दोघट्टी वृत्तिनी रचना सं. १२३८ (ई. स. ११८२)मां तेमणे भरूचमां आवेल अश्वावबोध तीर्थमां रहीने करी छे.[2]

१. रत्नाकरावतारिका, खं. १–३ संपा. दलसुखभाई मालवणिया, अमदावाद, १९६५–६९.
२. उपदेशमाला–दोघट्टी वृत्ति, संपा. आ. हेमसागरसूरि, मुंबई,१९५८.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संधि ६–१०

संधि ६ थी १० ना रचयिता जिनप्रभसूरि आगमिक गच्छना आचार्य हता. तेमना गुरुनुं नाम देवभद्रसूरि हतुं.[1] आ देवभद्रसूरिए सं. १२५० (ई. स. ११९४) मां अंचल-गच्छनो त्याग करी नवो आगमिक या त्रिस्तुतिक नामे ओळखातो गच्छ स्थाप्यो हतो.[2]

आ जिनप्रभसूरिए प्राकृत, अपभ्रंश, अने प्राचीन गुर्जरभाषामां घणी नानी नानी कृतिओ रची होवानुं जणाय छे. तेओनी कर्मभूमि गुजरात होय तेम लागे छे. तेमणे केटलीक कृतिओ शत्रुंजय गिरि पर रहीने रची होवानी नोंध छे.[3] पांच संधि उपरांत तेमनी नीचेनी सूचि मुजबनी कृतिओ उपलब्ध छे–

ज्ञानप्रकाशकुलक, चतुर्विधभावनाकुलक, युगादिजिनकुलक, सुभाषितकुलक, धर्माधर्मविचारकुलक, आत्मसंबोधकुलक, गौतमचरित्रकुलक, भवियचरिउ, भवियकुडुंबचरिउ, मल्लिचरिउ, वइरसामिचरिउ, जंबुचरिउ, सुकोशलचरिउ, महावीरचरिउ, छप्पनदिक्कुमारी-जन्माभिषेक, पार्श्वनाथजन्माभिषेक, जिनजन्ममह, जिनस्तुति, नेमिनाथजन्माभिषेक, नेमिनाथ रास, चाचरिस्तुति, गुरुस्तुतिचाचरि, अंतरंगविवाह, मोहराजविजयोक्ति, सर्व-चैत्य-परिपाटी–स्वाध्याय वगेरे.

पांच संधिमांथी १. मयणरेहा संधि अने २. नमयासुंदरि संधि–ए बेनो रचना-समय संधिना अंते कविए जणावेल छे, क्रमे सं. १२९७ (ई. स. १२४१) अने सं. १३२८ (ई. स. १२७२). बाकीनी संधिओ पण आ गाळानी ज होवा संभव छे. कविनो कवनकाळ आम घणो विशाळ जणाय छे.

संधि–११

आ संधिना कर्ता विनयचन्द्रसूरि ईस्वीसननी तेरमी सदीमां थई गया. तेमना गुरुनुं नाम रत्नसिंहसूरि हतुं.

विनयचन्द्रसूरि बहुभाषाविद् विद्वान कवि हता. तेमणे १. **मुनिसुव्रतस्वामिचरित** २. **पर्युषणा कल्पनिरुक्त** (र. सं. १३२५) ३. **दिपालिका कल्प** (र. सं. १३४५) ए त्रण संस्कृत ग्रंथो उपरांत प्राचीन गुजरातीमां पण केटलीक लघु कृतिओ रची हती.[4] जेमां **उवएसमाल-कहाणय-छप्पय** अने २, **नेमिनाथचउपई** बन्ने प्रकाशित थयेल छे.[5] तदुपरांत एक **'बारव्रत रास'** नामक रचना पण एमना नामे मळे छे.[6]

'काव्यशिक्षा' कार विनयचन्द्रथी प्रस्तुत कवि जुदा छे. जो के तेओ समकालीन हता.

विनयचन्द्रसूरिनो समय सं. १२८५ थी १३४५ (ई. स.१२२९ थी १२८९) मनाय छे.[7] **'आनन्द संधि'** नी रचना आम ई. स. १२८९ पूर्वेनी छे.

१. पत्तनस्थप्राच्यजैनभाण्डागारीयग्रंथसूची, भा.१, गा० ओ० सीरीझ-७६, १९३७.
२. पट्टावली–समुच्चय भा–२, संपा. दर्शनविजयजी, अमदावाद, १९५०, पृ. १६२.
३. जैन गूर्जर कविओ, मो० द० देशाई, भा–१, पृ. ७९.
४. जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास, मो. द. देशाई, पेरा० ६०७.
५. प्राचीन-गुर्जर-काव्य-संग्रह, संपा. ची. डा. दलाल, वडोदरा, १९२०, पृ. ८ थी २६
६. तेरमा चौदमा शतकना त्रण प्राचीन गुजराती काव्यो, संपा. डो. ह. चू. भायाणी, मुंबई, १९५५, पृ.१३.
७. जैन परम्परानो इतिहास, त्रिपुटि मुनि, भा. २, पृ. ३०८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संधि–१२

१२मी अंतरंगसंधिना कर्ता रत्नप्रभगणि छे. प्रथम पांच संधिना कर्ता रत्नप्रभसूरिथी आ कर्ता भिन्न छे. कविना गुरुनुं नाम धर्मप्रभसूरि छे. संधिनी ताडपत्रीय प्रतिमां प्रशस्ति आम छे–

॥ सं-त् १३९२ वर्षे आषाढ शुदि गुरौ ॥ ग्रंथाग्रे श्लोक २०६ ॥ श्री धर्मप्रभसूरि-रत्नप्रभकृतिरियम् ॥

'धर्मप्रभसूरि' पछी 'शिष्य' शब्द छूटी गयो जणाय छे. प्रतिनुं लेखन वर्ष सं. १३९२ (ई. स. १३३६) छे. आथी संधिनी रचना ते पूर्वे होवानुं निश्चित थाय छे.

संधि–१३

१३ मी केशी-गौतम-संधिना कर्ता अज्ञात छे. आ संधिनी जूनामां जूनी प्रति सं. १४८६ (ई. स. १४३०)नी मळे छे. ते परथी रचना-समय ई. स. १४३० पूर्वे निश्चित छे.

संधि–१४

१४मी भावनासंधिना कर्तानुं नाम जयदेव मुनि छे. तेओ पोताने शिवदेवसूरिना प्रथम शिष्य तरीके ओळखावे छे. जयदेव नामक एक करतां वधु जैन मुनिओना उल्लेख मळे छे, पण तेमां कोई शिवदेवसूरि-शिष्य जयदेवनो उल्लेख मळयो नथी.

संधिनी प्राप्य जूनी हस्तप्रतिनो लेखन संवत १४७३ (ई. स. १४१७) छे. तेथी रचना ते पूर्वेनी होवानुं निश्चित छे.

संधि १५–१६

आ बन्ने संधिना कर्ता एक ज छे. तेओए बन्ने संधिमां मात्र पोताना गुरु जयशेखर-सूरिनुं नाम आपेल छे.

श्री हेमचन्द्राचार्य जैन ज्ञानमंदिरना हस्तप्रतोना सूचिपत्रमां नं. ७३०७ पर प्रस्तुत शील-संधिनी प्रति नोंधायेल छे, तेमां कर्तानुं नाम वज्रसेनसूरि आपेल छे. ज्यारे 'जैन ग्रंथावलि' मां आ ज शीलसंधिना कर्ता तरीके 'जयशेखरसूरि–शिष्य ईश्वर गणि' नाम आप्युं छे. आ बन्ने नामो शंकास्पद छे.

शीलसंधिनी जूनी हस्तप्रति सं. १४८६ (ई. स. १४३०)नी उपलब्ध छे. तेथी रचना-काळ ते पूर्वे निश्चित थाय छे.

संधि–१७

१७ मी हेमतिलकसूरि-संधिना कर्ता अज्ञात छे. संधिमां ज हेमतिलकसूरिना स्वर्गवासनुं वर्ष सं. १४१२ (ई. स. १३५६) नोंधायेल छे. ते पछीना पचासेक वर्षना गाळामां संधिनी रचना थई होवानुं मानी शकाय.

संधि–१८

१८ मी तपसंधिना कर्ताए पोताने चंद्रगच्छना सोमसुंदरसूरिना शिष्य विशालराजसूरिना शिष्य तरीके ओळखावेल छे. चंद्रगच्छ (पाछळथी तपागच्छ)ना ५०मा पट्टधर सोमसुंदरसूरिनो समय सं. १४३०–१४९९ (ई. स. १३७४–१४४३) छे. तेमना शिष्य विशालराजसूरिनो समय अनुमाने सं. १४५० पछी मूकी शकाय. आथी तेमना शिष्य तपसंधिकार सं. १५०० नी आसपास आवे. वळी संधिनी हस्तप्रतमां सं. १५०५ आपेल छे. जेने रचना–वर्ष मानी शकाय.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संधि-१९

१९ मी अनाथि महर्षि संधिना कर्ता अज्ञात छे. हस्तप्रतना आधारे रचना ई. स. १४३० पूर्वेनी निश्चित गणाय.

संधि-२०

२० मी उपदेश संधिना कर्तानुं नाम हेमसार छे. ते सिवाय कोई माहिती मळती नथी.

छंदोविधान

पहेलां जोयुं तेम संधिकाव्योमां संधिबंध महाकाव्योमां प्रचलित मात्रामेळ छंदो ज वपराया छे. केटलीक संधिओमां एक मात्र हस्तप्रत ज मळवाने कारणे शुद्ध पाठ मळता न होवाथी छंदमां पण शुद्धि जणाती नथी.

घत्ता अने ध्रुवकना छंद :

अहीं प्रस्तुत बधां ज संधिकाव्योना कडवकोना अंते आवतां घत्तामां एक ज छंद षट्पदी वपरायो छे. १०+८+१३=३१ मात्रा (अंत u u u) तथा १-२, ४-५ अने ३-६ पदना अंते प्रास-ए लक्षणो षट्पदीना छे. संधिओनी आद्य कडी एटले के ध्रुवक संधि ३, ४, अने ५ सिवायनी संधिओमां छे तेमां संधि १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, १९ अने २० ना ध्रुवकनो छंद उपरोक्त षट्पदी ज छे. संधि ६, ७, ८, अने ९ मां आद्यकडी प्राकृत गाथा छे अने तेनी पछी बीजी कडी षट्पदीमां छे. संधि १, २ तथा १७ मां ध्रुवकनो छंद वदनक छे. (वदनकनुं लक्षण नीचे कडवकना छंदमां आपेल छे). संधि १८ मां ३१-३१ मात्रानी बे पंक्ति ध्रुवक रूपे छे.

कडवकना छंद :

कडवकोमां ३ छंद वपरायां छे.

(१) पद्धडी-मोटा भागना संधिकाव्योमां कडवकना छंद तरीके पद्धडी छंद वपरायेल छे, तेनुं लक्षण छे-४+४+४+४ = १६ मात्रा (अंत्य ज गण जरुरी, बीजे ज गण विकल्पे अने अन्यत्र निषिद्ध), नीचेनां कुल ७८ कडवकोमां ते वपरायेल छे—

संधि. १· कड० ३, १०, १३, १४; सं. २. क० ३, ९, १० ११, १२; सं. ३. क० २, ३, ४, ५, ६, ७, ९, १०, १२; सं. ४-क० ३, ४, ९, १०, १५; सं.५-क. १, २, ७, ९, ११; सं. ६-क. १-५ (बधां) ;सं. ७. क. १-२ (बधां) ; सं. ९-क. १, ४; सं. १०-क. १-५ (बधां); सं. ११ क. १ थी ९(बधां); सं. १२, क. १-६, ८-९; सं. १४. क. १, ३, ५; सं. १५ क. १, ३; सं. १६ क. १-४ (बधां) ; सं. १८ क. १, ३; सं. १९-क. १, २, ५, ९, १०; सं. २०-क. १-३ (बधां)

(२) वदनक—बीजा नंबरे वपरायेल छंद वदनक छे. तेनुं लक्षण छे —६+४+४+२= १६ मात्रा (अंत्य ४ मात्रा —u u अथवा- —) नीचेना कुल ६३ कडवकोमां वदनक छे-

सं. १ क. १, २, ४,५, ६-९, ११, १२,१५; सं. २ क. १, २, ४-८, १३-१८; सं. ३ क. १, ८, ११, १३, १४; सं. ४ कड. १, २, ७, ८,१३, १४; सं. ५ क. ३, ४, ८, १०; सं. ९ क. ३; सं. १३ क. १-१४ (बधां) सं. १७ क. १-८(बधां) ; सं. १९ क. ६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(३) मदनावतार—uu u uu×४ गण=२० मात्रानो मदनावतार छंद नीचेना कुल २३ कडवकोमां वपरायेल छे—

सं. २ क. १९,२०; सं. ४ क. ५, ६, ११, १२; सं. ५ क. ५, ६; सं. ८ क. १, सं. ९ क. २; सं. १२ क. ७; सं. १४ क. २, ४, ६, सं. १५ क. २, ४; सं. १८ क. २, ४; सं. १९ क. ३, ४, ७, ८, ११.

प्रति-परिचय

संधि १–५

P. प्रथम पांच संधि धर्मदासगणिनी उपदेशमाला पर रत्नप्रभगणिए रचेली 'दोघट्टी' नामथी प्रसिद्ध प्राकृत टीकानी अंदर आवेल छे. आचार्य हेमसागरसूरिए संपादित करेल प्रस्तुत सटीक उपदेशमाला मुंबईथी १९४८मां आनंद-हेम जैन ग्रंथमालामां प्रकाशित थई छे. तेमां ABCD चार हस्तप्रतो वपराई छे. जेमांथी A हस्तप्रत शांतिनाथ ताडपत्रीय ग्रंथ भंडार, खंभातनी लेखन-संवत १३९४ नी छे. अहीं मुख्यत्वे तेनो पाठ अनुसरवामां आवेल छे. तेनी संज्ञा अही P. आपेल छे.

L. ला. द. भारतीय संस्कृति विद्यामन्दिरनी, कागळनी प्रति नं. २६१६५, अनुमाने १७मा सैकामां लखायेली, माप–२६×११ से. मी. ना २१३ पत्रो (पत्र १लुं खूटे छे), सुवाच्य अने प्रायः शुद्ध. आ प्रतिनी संज्ञा L छे. तेमां पांचे संधिना स्थळो नीचे मुजब छे-

(१) ऋषभ-पारणक संधि	पत्र	१६ अ थी	१८ ब
(२) वीर–जिन-पारणक ,,	पत्र	१८ ब थी	२१ ब
(३) गजसुकुमाल ,,	पत्र	१०१ ब थी	१०४ अ
(४) शालिभद्र ,,	पत्र	११३ अ थी	११६ अ
(५) अवंतिसुकुमाल ,,	पत्र	११६ अ थी	११८ अ

B. सद्गत आ. श्री. जिनविजयजीए उपदेशमालावृत्तिनां संधि-काव्योनी एक नकल करावेली ते माननीय श्री भायाणी साहेब द्वारा मने मळी. केटलाक पाठ माटे में तेनो उपयोग करेल छे. तेनी संज्ञा B छे.

संधि ६–८

संधि ६,७ अने ८ त्रणे खेतरवसही पाटक जैन ज्ञान भंडार, पाटणनी एक मात्र ताडपत्रीय प्रति परथी संपादित करेल छे. तेनो नंबर १२ (नवो नं. ६) छे. ३५×५ से. मी. मापना २६४ पत्रोमां पत्र १६७–अ थी १७३ ब सुधीमां मयणरेहा संधि, १७३ ब थी १७६ ब सुधीमां अनाथिसंधि अने १७६ ब थी १७९ अ सुधीमां जीवानुसट्ठिसंधि लखायेल छे. आखी प्रतिमां नानी मोटी ५४ प्राकृत-अपभ्रंश-प्राचीनगुर्जर रचनाओ छे. तेमांथी लगभग त्रीशेक तो संधिकार आगमिक जिनप्रभसूरिनी कृतिओ छे.

संधि ९

संघवी पाटक भंडार, पाटणनी नं. ३११ नी ताडपत्रीय प्रतमां पत्र ९९ ब थी १०६ अ सुधीमां नमयासुंदरि संधि लखायेल छे. ते प्रतिनी माइक्रोफिल्म ला. द. भारतीय संस्कृति विद्यामन्दिरमां नं. $\frac{७२}{३}$ (८) नी छे. तेना परथी प्रस्तुत संधिनुं संपादन करायेल छे.

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

संधि–१०

श्री हेमचन्द्राचार्य जैन ज्ञान मंदिर, पाटणनो नं. ३२०२ नी कागळनी एक मात्र प्रति परथी आ संधि संपादित करेल छे. अनुमाने १६ मी सदीनी, २५.५×१०.५ से. मी. मापना १५ पत्रोनी प्रतिमां नीचे मुजबनी रचनाओ लखायेल छे–

(१) चतुरंग संधि पत्र– १अ–३ब
(२) भावना संधि पत्र ३ब–६अ
(३) अपूर्ण प्राकृत स्तोत्र पत्र ६ अ–ब (पत्र ७–८ खूटे छे)
(४) प्राकृत श्रीकवच, अपूर्ण पत्र ९ अ–१० ब
(५) अंतरंग संधि पत्र १० ब–१५ अ (जुओ संधि नं. १२)
(६) अपूर्ण प्राकृत स्तुति पत्र १५ अ–१५ ब

आ संधिनी एक ताडपत्रीय प्रति शांतिनाथ ताडपत्रीय ज्ञान भंडार, खंभातमां छे. ते अनुमाने वि. सं. १३५० पूर्वनी छे. परन्तु ते प्रति मेळववी मुश्केल होई उपरोक्त कागळनी प्रति परथी संपादन करवामां आवेल छे.

संधि–११

A. ला. द. भारतीय संस्कृति विद्यामन्दिरना पुण्यविजयजी संग्रहनो नं. १२८६ नी कागळनी प्रति. पत्रो–७९थी १००, माप–२७.५×११.५ से. मी., लेखन संवत-१४८६ (ई.स. १४३०)- प्रति खंडित होवा छतां तेमां चार संधिओ होवाने कारणे अने प्राचीन होवाने कारणे महत्त्व-पूर्ण छे. तेमां नीचे मुजब कृतिओ छे–

(१) आर्द्रकुमार विवाहलऊ अपूर्ण पत्र-७९ सुधी
(२) अजितशांति नमस्कार पत्र ७९–८०
(३) शीलसंधि पत्र ८०–८१
(४) आनंद संधि पत्र ८१–८३
(५) केशीगौतम संधि पत्र ८४–८५
(६) अज्ञातकृत अनाथि संधि पत्र ८५–८७
(७) पुष्पमाला प्रकरण पत्र ८७–१००
(८) प्रश्नोत्तर-रत्नमालिका पत्र १००–अपूर्ण

B. हेमचन्द्राचार्य जैन ज्ञान मन्दिर, पाटणनी कागळनी प्रति, नं. ९०३२, लेखन-समय अनुमाने १६ मी शताब्दी. २५.५×११ से.मी. ना मापना ७ पत्रोमां नीचे मुजब कृतिओ छे-

(१) केसी-गोयम संधि पत्र १ अ–२ ब
(२) अनाथि अध्ययन पत्र २ ब–४ अ
(३) उपदेश संधि पत्र ४ अ-४ ब
(४) आनंद संधि पत्र ४ ब–७ अ

संधि–१२

A. तपगच्छ भंडार, पाटण नो ताडपत्रीय प्रति नं.१६ मां पत्र- १ थी १२ पर आ संधि लखा-येल छे. ला. द. भारतीय संस्कृति विद्यामंदिरमां तेनी माइक्रोफिल्म नकल छे, जेनो नं. हे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पा० १७७ (२) छे. तेना परथी आ संधि संपादित करेल छे. प्रतिनुं लेखन वर्ष सं.१३९२ (ई.स. १३३६) छे.

B. हेमचन्द्राचार्य जैन ज्ञानमन्दिर, पाटणनी कागळनी प्रति नं. ३२०२ परथी पाठांतरो लीधेल छे. आ प्रतिना परिचय माटे जुओ संधि १० नो प्रति परिचय.

संधि–१३

A. ला. द. विद्यामंदिर, पुण्यविजय संग्रहनी प्रति नं.१२८६ परिचय माटे जुओ संधि नं.११.

B. ला द. विद्यामंदिर, पुण्यविजय संग्रहनी प्रति नं. १८३५, २६×३.११ से. मी. मापना २ पत्रोमां एक आ संधि ज लखेल छे. लेखन–समय अनुमाने १७ मी सदी. अंतमां 'श्रा. सोभी–पठनार्थमलेखि श्री उदयनंदेसूरि–शिष्येण' ए वाक्यथी प्रत धरावनार अने लखावनारनी माहिती आपी छे.

संधि–१४

A ला. द. विद्यामन्दिर, पुण्यविजय संग्रहनी कागळनी प्रति नं. २८४१. पत्र-४ थी ४६. संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश अने प्राचीन गुजरातीनी ५१ लघु कृतिओ आ गुटकामां छे. पत्रांक २३ पर लेखन संवत १४७३ (ई.स. १४१७) लखेल छे. पत्र ४३–४४ उपर भावना संधि अने पत्र ४२–४३ पर शील संधि लखायेल छे.

B. ला. द. विद्यामंदिर, पुण्यविजय संग्रहनी कागळनी प्रति नं. ३६९७, पत्र-३, २६×११. १ से. मी. मापनां. अनुमाने १६ मा शतकमां महिर्शानक (महेसाणा)मां लखायेल आ प्रतिमां एक आ संधि ज छे.

संधि–१५

A. ला. द. विद्यामंदिर, पुण्यविजय संग्रहनी प्रति नं. १२८६. जुओ संधि–११ ना प्रति-परिचयमां.

B. उपरोक्त संग्रहनी नं.-२८४१ नी प्रति. जुओ संधि–१४ ना प्रति-परिचयमां.

संधि–१६–१७

आ बे संधिनी नकल श्री अगरचंदजी नाहटाए, बिकानेरना अभय जैन ग्रंथालयनी प्रतिओ परथी करेली. प्रति–परिचय नोंधेल नथी.

संधि–१८

A. श्री हेमचन्द्राचार्य जैन ज्ञानमंदिर, पाटणनी कागळनी प्रति नं. ९०३४. २६×११ से. मी. मापना २ पत्रमां एक ज संधि लखायेल छे. अंत आ प्रमाणे छे.
॥ इति तपः संधिः समाप्ताः ॥ छ ॥ सं. १५०५ वर्षे ॥
॥ श्री तपस्संधि लिखिता देवकुले श्री तपापक्षे कृतमस्ति ॥
आ उपरथी जणाय छे के वि.सं. १५०५ (ई. स. १४४९) लेखन संवत छे.

B. उपरोक्त ज्ञानमंदिरनी ज कागळनी प्रति, नं. ९०३५. २६×११ से. मी. मापना २ पत्रोमां आ संधि ज छे. आनो लेखन समय अनुमाने १६ मी शताब्दी गणाय.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संधि–१९

ला. द. विद्यामंदिरना पुण्यविजयजी संग्रहनी नं. १२८६नी एक मात्र प्रति उपरथी आ संधिनुं संपादन करेल छे. परिचय माटे जुओ संधि ११ नी प्रति-A.

संधि–२०

A. हेमचंद्राचार्य जैन ज्ञान मंदिरनी प्रति नं. ९०३२. जुओ संधि ११ नी प्रति B.
B. ए ज ज्ञानमंदिरनी कागळनी प्रति नं. ९०३३. २६×११ से. मी. मापना २ पत्रो पर १ शील संधि अने २ उपदेश संधि लखायेल छे.

* * *

आ पहेलां केटलांक संधिकाव्यो जुदा जुदा समये जुदा जुदा सामयिक-ग्रंथादिमां प्रसिद्ध थयेल छे—मुनि श्री जिनविजयजीए प्राकृत 'नर्मदासुन्दरिकथा' ना परिशिष्टमां 'नर्मदासुंदरि-संधि', पं बेचरदासजी दोशीए संस्कृत 'मदनरेखा–आख्यायिका' ना परिशिष्टमां 'मदनरेखा-संधि', प्रा. मधुसूदन मोदीए 'भावना संधि', मुनि रमणीकविजयजीए 'आनंदसंधि' अने डा० हरिवल्लभ भायाणी तथा श्री अगरचंद नाहटाए 'प्राचीन-गुर्जर–काव्य-संचय' मां 'केशीगौतम संधि', 'शीलसंधि' अने 'नर्मदासुंदरि संधि' संपादित करी प्रकाशित करेल छे. वळी श्रीअगरचंद नाहटाए वर्षो पूर्वे 'राजस्थानी' नामक सामयिकमां संधिकाव्योनो परिचय आपतो लेख लखेल तथा डा० भायाणीए पोताना लेखादिक संग्रहोमां एक करतां वधु वार संधिकाव्यो विशे परिचयात्मक नोंध लखेल छे. आ बधी सामग्रीनो उपयोग करवा बदल हुं उपरोक्त विद्वानो नो आभारी छुं.

संधिकाव्यो अंगे उपर जणाव्या प्रमाणेनुं कार्य थयुं होवा छतां अद्यां उपरांतनी संधिओ-नी हजु सुधी संशोधनात्मक आवृत्तिओ थई न हती, तेम ज प्रकाशित थयेल केटलीक संधि-ओनी वधु जूनी अने सारी हस्तप्रतो हवे सुलभ थई हती, आथी उपलब्ध बधी ज संधिओ संशोधित आवृत्ति अने शब्दकोश साथे प्रसिद्ध थाय तो ते अपभ्रंश अने प्राचीन गुर्जर भाषा-ना अध्ययन-संशोधनमां एक महत्त्वपूर्ण सामग्री बनी रहे एवा ख्यालथी आ नम्र प्रयास में कर्यो छे.

छ वर्ष पहेलां अमदावादमां भरायेल प्राकृत सेमिनार माटे में संधिओ विशे परिचयात्मक लेख लखेल ते समये मने प्रगट अप्रगट संधिओ जोई जवानी तक मळी. त्यार बाद में अनेक संधिओ संपादित पण करी. दरमियानमां मारी पासेनी आ सामग्री अने तैयारी जोईने मु० श्री भायाणी साहेबे आ बधी संधिओ समुच्चयरूपे प्रगट करवा प्रेरणा आपी. अने ए रीते आ समुच्चयनुं कार्य साकार थयुं. श्रीभायाणी साहेबना अमूल्य सलाहसूचनो अने सतत मार्गदर्शन विना आ ग्रंथ तैयार करवानुं कार्य मारे माटे मुश्केल हतुं. तेमना प्रत्ये मारी कृतज्ञता व्यक्त करुं छुं. ला. द. ग्रंथमाळामां आ ग्रंथ प्रकाशित करवा बदल तथा वारंवार ताकीद करी प्रकाशन झडपी कराववा बदल ग्रंथमाळाना सामान्य संपादको पू. श्री दलसुखभाई मालवणियाजी तथा मु. श्री. नगीनभाई शाहनो हुं अत्यंत आभारी छुं उपधानसंधि तथा हेमतिलकसूरि–संधिनी नकलो जाणीता विद्वान श्री अगरचंदजी नाहटाए पोतानी पासेनी प्रतोमांथी में लख्युं के तरत

जरूरी मोकली ते बदल तेमनो पण हार्दिक आभार मानुं छुं. पाटणना श्री हेमचन्द्राचार्य ज्ञानमंदिरना ट्रस्टीगणनो पण पोताना संग्रहनी हस्तप्रतो सद्भावपूर्वक उपयोग माटे आपवा बदल अत्रे आभार मानुं छुं.

१६ मार्च, १९७९. —र. म. शाह

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संधिकाव्य–समुच्चय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संधिकाव्य-समुच्चय

१. रिसह-पारण-संधि

[कर्ता : रत्नप्रभसूरि रचनासमय : ई. स. ११८२]

[ध्रुवक]

जं किर पाव-पंकु[1] पक्खालइ भवियह मोक्ख-सोक्खु[2] दिक्खालइ
संधिबंध-संबंध-रवन्नउं चरिउ तं रिसह-जिणिंदह वन्नउं ।१

[१]

दाहिण-भरहखंड-चूडामणि साव-सुवन्न[3] नाइ सोयामणि
अत्थि अउज्झ[4] नामि सुपसिद्धी नयरि पउर-धण-धन्न-समिद्धी ।२
पढम-राय-कारणि कारावियं मणि-कंचणिहिं सक्कि संपाइय
सिहर-चारु-चेइयहर-चंगी[5] सयल-विलासि-लोय-नव-रंगी[6] ।३
सरल-पियाल-वणुज्जल-वाडी[7] जिव जहिं तेव तरुणि[8] परिवाडी
गय-वाहण हय-साहण हिंडहिं ईसर-लोय तहा वि ज मंडहिं ।४

घत्ता

जिण-मंदिर-उब्भड धुव्विर-धयवड रणझणंत-किंकिणि-रविण
जा गज्ज-निरंतर हसइ गुणुत्तर सक्क-नयरि निय-विहविण[9] ॥१

[२]

[10]कुलगर-नाहि-पुत्तु तं पालइ रिसह-नरिंदु सुरिंदु व लालइ
[11]पढमु जु नय-निहि पढमु पयावइ जण-ववहारु पहिल्लउ दावइ ।१
घरिणी घणुज्जल-पेम-गहिल्ली[12] तासु सुमंगल-नामि पहिल्ली
अवर वि आसि सुनंद सु-राणी सयलंतेउर-मज्झि[13] पहाणी ।२

1. L कंकु 2. L मोक्खु सुक्खु 3. L सोवन्न 4. L यउज्झ 5. L चेईहरि चंगी
6. L विलास लोयण नव० 7. L ०ज्जय वाडी 8. P जहिं तरुणि तव परि० 9. L वेहविण
10. P कुलगरु 11. P पढमुज्जनय० 12. L प्रेम गहि० 13. L मज्झ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पढमु सुमंगल-देविहि दुद्धरु बंभी-जुयलि जाउ भरहेसरु
बाहुबलिउ[1] बाहुबलि सुनंदहि सुंदरि-जुयलि जाउ जस-कंदहि ।३
राणी पुणु पसवेइ सुमंगल सील-समुज्जल कय-जय-मंगल
अट्ठाणवइ[2] पवर तणुब्भव अउणापन्न-जुयल अपुणुब्भव ।४

घत्ता

दस-दुगुणा लक्खह[3] पालिवि पुव्वह कुमर-वासु लीला-लडहु
तेसट्ठि ति अग्गल पुणु कय-मंगल रज्ज-लच्छि पालेइ पहु ॥२

[३]

जहिं केवलु बज्झइ मत्त-दंति स-सुवन्न-दंड[4] वर-छत्त-पंति
निवडंति पास जूयार-हट्टि पुणु मारु सुणिज्जइ सारिवट्टि[5] ।१
निसुणिज्जइ वेसहं केस-भारु अवलोयहिं[6] मुणिवर परहं दारु
दारिद्द-मुद्द दीसेइ[7] देसि वर-तरुणि-जणह मज्झ-प्पएसि ।२
धणवंत दिंत न हु करहिं काणि उग्गाहहिं निवइ न बिउण-दाणि
संतु[8] वि अवजाणहिं धणि जणाहं [9]छलु आणहिं नो पुणु लोभिताहं ।३
हक्कार-मक्कार-धिक्कार-रूव इय नीइ पयट्टहिं दंड-भूय
न हु अत्थि अत्थि-जणु तित्थु कोइ तिणि दाण-मणोरहु विहलु होइ ।४

घत्ता

इय जणु तोसेविणु रज्जु करेविणु पुव्व-लक्ख-तेसट्ठि पहु
सिरि-नाहि-तणुब्भवु गय-भव-संभवु संजम-रज्जु महेइ[10] लहु ॥३

[४]

रिसहु महा-महिनाहु तियासी अच्छिवि पुव्व-लक्ख घरवासी
लोगंतिय-देवहिं[11] विन्नत्तउ दाणु देइ वारिसिउ निरुत्तउ ।१

---

1. P बाहुबलि 2. P ०वइ जणेइ तणु० 3. L लखह 4. L छत्त वर दंड
5. L सारवट्टि 6. L अवलोहि P अह लोयहिं मुणि पर 7. L दीसइ न 8. P संभु
9. L घणु आणहि 10. P महेलइ 11. L देविहि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक्कहं कडय-किरिड-कचोला वियरइ अन्नहं पडिपट्टोला
मरगय-मोत्तिय-माणिक्क-हीरा[1] पउमराय अप्पइ अवरीरा ।२
गय-हय-गंधसार-घणसारहिं[2] के वि करेइ कयत्थु सुसारहिं[2]
कसु वि कणय-कलहोय वि देइ इय मग्गण-जण सम्माणेइ ।३
कच्छ-महाकच्छाइ[3]-नरिंदिहिं सहुं चउ-सहसिहिं कय-आणंदिहिं
परिवज्जिय सावज्ज समुज्जलु पहु चल्लिउ चिंतेवि त मंगलु ।४

घत्ता

चित्तह बहुलट्ठमि छट्ठ-तवुत्तमि रिसहनाहु सिद्धत्थ-वणि
बत्तीस-सुरिंदिहिं विहियाणंदिहिं सेविउ संजमु लेइ खणि[4] ॥४

[५]

कसिण कुडिल कोमल कुंतल तउ[5] उप्पाडइ पहु सिरह निरुतउ
वज्जसारु चउ-मुट्ठि करेइ पंचम हरि-विन्नत्तु धरेइ ।१
अंसत्थलि घोलंत ति[6] सामिहिं सहहिं सिरोरुह सिवगइ-गामिहिं
दिन्न दिक्ख-मंगलि नं[7] मंगल कंचण-कलसुप्परि नीलुप्पल ।२
कच्छाइहिं वि दिक्ख पवन्नी[8] जिण-अणुमाणि न उण जिणि-दिन्नी[9]
[10]विहरहिं जिण-अणुमग्गि ति लग्गा छण-चंदह जिव[11] रिक्ख-समग्गा ।३
निव-कुमार नमि-विनमि जिणिंदह असि-कर करहिं सेव सच्छंदह
पोइणि-पन्न-पुडलिहिं छंटहिं [12]पुप्फ-पयरु पहु-पुरउ पयट्टहिं ।४

घत्ता

अन्नह दिणि[13] आवइ महिम करावइ फणिवइ जिण-अग्गइ सुपरि।
नमि-विनमि-कुमारह वियरइ सारह खयर-रज्जु वेयड्ढधरि ॥५

[६]

निरसणु झाणि मोणि पहु हिंडइ निय-विहारि महि-मंडलु मंडइ
जणि वणि काउसग्गु थिरु कप्पइ मणिमउ थोर-थंभु जिव दिप्पइ[14] ।१

1. P हारा 2. L ०सारिहिं 3. P ०कच्छाहिं 4. L खणु 5. L वउ
6. P सामाहिं 7. P ज 8. P. पवन्न 9. P दिन्न 10. L विहरिहिं
11. L. जं 12. P पुप्फयरु पहु-पुरओ 13. P दिणइ 14. L दप्पइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

को वि भिक्ख भिक्खयर न जाणइ अज्ज वि जणु तिणि भिक्ख न आणइ
छुहिउ पिवासिउ घरि घरि हिंडइ जंगमु कप्परुक्खु महि मंडइ ।२
[1]कि वि नर तरल-तिक्ख-तुक्खारिहिं सामि निमंतहिं तिहुयण-सारिहिं
कणय-कडय-कडिसुत्त-किरीडिहिं अवरि पवर-कप्पूरिहिं बीडिहिं ।३
तार-तरलतर-तिक्ख-कडक्खहिं हरिस-परावस जा खलु पेक्खहिं
अवरि ताउ ढोयहिं निय-कन्ना तइयहिं जेहिं दिट्ठु ते धन्ना ।४
सामि सव्वु तमकप्पु [2]विगप्पिवि झत्ति नियत्तइ किंपि अजंपिवि
कच्छ-पमुक्ख[3] भिक्ख अलहंतय छुह-बाहिय हुय तावस ते गय ।५

घत्ता

जिणु निरसणु हिंडइ दुरियइं खंडइ मंडइ[4] महियलु निय-पइहिं
तहिं समइ जि वंदहिं ते चिरु नंदहिं संपूरिज्जहिं[5] संपइहिं ॥६

[७]

उन्हालइ दीहरतर वासर अग्गि-फुलिंग-तुल्ल तरणिहिं कर
तिव्वु तवइ तवु जगि वक्खाणिउ तह वि न सामिउ पारइ पाणिउ ।१
वरिस-कालि घणु वरिसइ वाइं जण-सरीर थरहरहिं खराइं
निप्पकंपु निम्मलउ निरुत्तउ झाणु झाइ जिणनाहु तिगुत्तउ ।२
सीयालइ सीयलउ समीरणु वाइ तुसार-सारु सोसिय-वणु
अइ-दीहर-रयणीसु निरंतरु अविचल-चित्तु झाइ परमेसरु ।३
विहरिवि पुर-पट्टण-गिरि-गामिहिं निरसण-पाणु अडवि-आरामिहिं
वच्छर-छेहिं जिणिंदु तिगुत्तउ गयपुर-पट्टण-बारि पहुत्तउ ।४

घत्ता

जं जणिहिं रवन्नं तरुवर-छन्नं धवलहरिहिं अइ-धवलु किउ
धण-धन्न-समिद्धं भुवण-पसिद्धं महि-महिलहिं तिलउ व्व[6] ठिउ ॥७

---

1. P केवि 2. P विगप्पहि 3. P पमुख 4. P मंडलि 5. P संपूरिज्जइ
6. P त्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[८]

तं सोमजसु महाजसु पालइ नियं-कुलु गुण-गउरवि उज्जालइ
तसु सेयंसु आसि जुवराउ पुत्तु [1]पवित्त-कित्ति जसवाउ ।१
सुरगिरि सुमिणइ सामु सु पिक्खइ अमिय-कलसि सित्तउ सइं लक्खइ
अइ अइयारि तेण सो सोभिउ विज्जुल-चक्कवालु नं थंभिउ ।२
किरण-जालु रवि-बिंबहं पडियं कटरि सहइ पुणु कुमरिहिं जडियं
सिट्ठि विसिट्ठि[2] दिट्ठु एयारिसु सुमिणउ सोमजसि सुणि जारिसु ।३
समरंगणि जुज्झंतह वीरह कुमरि दिन्नु साहिज्जु[3] सुधीरह
तिणि पर-पक्खु परो वि पराइउ भुवणि जेण सो चेव विराइउ ।४

घत्ता

पसरह ते अक्खहिं[4] मिलिया एक्कहिं नियं-सुमिणइं परिसा-पुरउ
परमत्थु न बुज्झहिं नरवइ पुच्छहिं सो कहेइ फलु कुमरुदउ ॥८

[९]

अह सेयंसु गवक्खि निसन्नउ रिसह-जिणेसरु पेक्खइ धन्नउ
गयपुर-पुर-पोलिहिं पविसंतउ मुत्तिमंतु [5]नं धम्मु उवंतउ[6] ।१
पुलइवि तं सउन्न-उत्तंसु[7] सुमरइ पुव्व-जाइ सेयंसु
आसि विदेह-वासि हउं सारहि वइरनाह[8]-पुहवीसहि सारहि ।२
वइरसेण-तित्थंकर-पासि वइरनाहु गच्छाहि वु आसि
अहमवि साहु साहु संजायउ अह सव्वत्थ-विमाणि परायउ ।३
चविय[9] कुमारु जाउ संपइ हउं वइरसेण-तित्थंकरु सुमरउं
तारिसु वेस-विसेसु वहंतउ रिसहु वि तित्थ-नाहु पहु पत्तउ ।४

घत्ता

निरसणु निम्मच्छरु विहरिउ वच्छरु विहरावित्रु केणावि न हु
जइ मज्झु घरंगणि जग-चिंतामणि एइ त विहरावेमि पहु ॥९

---

1. L कित्तिसार 2. P विसिट्ठि 3. L सोहिज्जु 4. L अक्खइ 5. P जिण धम्मु
6. L उचिंतउ 7. L ०सु 8. L ०नाहु 9. L चविउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१०]

चिंतंतह एरिसु बारि पत्तु सेयंसह सामिउ जग[1]-पवित्तु
तो हरिसि[2] माइ न कुमारु अंगि नो घरि न बारि न हु दुग्गि दंगि ।१
चिंतइ सुतुट्टु हउं अज्जु जाउ हउं अज्जु तिलोक्कहं एक्कु राउ
मइ पत्तु खार-संसार-पारु उग्घाडिउ निरु निव्वुइ-दुवारु ।२
मइ भग्ग अणंगह आण गाढ उप्पाडिय काल-कराल-दाढ
मइं दिन्नु नरय-कूयह पिहाणु उक्खणिउ त सासय-सुह-निहाणु ।३
पडिलाहउं अज्जु जएक्क-नाहु लहु होमि हियय-निव्वुइ-सणाहु
मह अप्पसु रे वर-भूरि-भक्ख घय-खीरि-खंड-खज्जूर-दक्ख ।४

घत्ता

इत्थंतरि पत्तउ कलस-निहित्तउ महुरु सुसीयलु खोय-रसु
ढोयणिउ त लेविणु करिहिं करेविणु कुमरुप्पाडइ हरिस-वसु ॥१०

[११]

[3]पाणि-पियामहु पाणि पसारइ अविवर-पवरंजलि वित्थारइ
सिरि-सेयंसु कुमारु पलोयइ तहिं बहु नव-रस-कुंभ वि रोयइ ।१
सहइ सधार जेव गिरिहुंतउ गंग-पवाहु कुंडि पवडंतउ
दीसइ रस-विसेसु सोहंतउ न उण तिलोयनाह-मुहि जंतउ ।२
जिणु अच्छिद्द-पाणि तेणंजलि बिंदु वि पडइ नेव धरणीयलि
तसु सिह जाइ जाव रवि-मंडलु पासि पलुट्टइ[4] बिंदु वि नो खलु ।३

घत्ता

सेयंसि सुहावउ जिणु[5] जिव सम्मउ समइ पत्तु नव-खोय-रसु
जग-गुरु पाराविउ तणु निव्वाविउ वित्थारिउ तिय-लोइ जसु ॥११

[१२]

पत्तु पत्तु सव्वुत्तमु सामिउ चित्तु पवित्तु भत्ति उन्नामिउ
वित्तु खोय-रसु अवसरि आविउ तिहिं[6] मेलावउ पुन्निहिं पाविउ ।१

1. P जगि 2. L हरिसु 3. P पाणपिया० 4. L पलोट्टइ 5. P जिण मइसम्मउ
6. L तहिं मेलाविउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जं गोवाल-बालि[1] रिसि दिन्नउ तासु वि तारिसु फलु संपन्नउ
जं पुणु दिज्जइ जिण-पहु पत्तह कासु सत्ति फलु तासु कहंतह[2] ।२
पत्त-दाणु दोगच्चु विहंडइ[3] भुवण[4]-लच्छि आणइ बलिमंडइ[5]
भोग अभंगुर भवि भुंजावइ भवु[6] भंजिवि सुहु सिद्धिहिं दावइ ।३
एक्कु जि पत्त-दाणु परिदिज्जइ किं चिंतामणि-पाहणि[7] किज्जइ
इह-पर-लोग-दाणु तं साहइ चिंतामणि पुणु टगमग चाहइ ।४

घत्ता

मणि-रयण[8]-सुवन्निहिं अरु पणवन्निहिं[9] पुप्फिहिं पयरु पवंचियउ
गुड्डी[10] उच्छलिय दुंदुहि वज्जिय जयइ सुदाणु पघोसियउ ॥१२

[१३]

उप्पाइय देविहिं पंच-दिव्व घरि कुमरहिं कुसल-महानिहि व्व
[11]जुवराइं अउरु नरराइं सारु आरद्धउ वद्धावण-पयारु ।१
पहिरेवि चीर नव-रंग-रत्त पविसंति तरुणि गहियक्खवत्त
सीमंति ताहं कुंकुम-थबक्क फल-बीडां दिज्जहिं कय-चमक्क ।२
वज्जंति तूर अइ-तारतारु नच्चंति नारि अइ-फार-चारु
विजयावलि पयडहिं भूरि भट्ट अरु उदउ उदउ जोगियहं थट्ट ।३
तह पाउल-लीला वइस-लीलु गाएवि[12] कुमारह सच्चु सीलु
वद्धारिवि चंदणु भालवट्टि निय-रंगि पयट्टिहिं चारु नट्टि ।४

घत्ता

नव-पल्लव-सोभिय तोरण उब्भिय गयउरि घर घर बारि जणि[13]
वर-दाणइं दिज्जइ[14] मग्ग छड्डिज्जइं[15] झयझवाल झलहलहिं खणि ॥१३

[१४]

परमेसरु पारिवि गउ विहारि पुरि नयरि देसि दुह-दुरिय-हारि
आवेवि कुमरु पयडिय-पमोय ते पुच्छहिं तावस सयल लोय ।१

1. L बालइ 2. P कहंतइ 3. P विहडइ 4. P भुवणि 5. L बलिमंडइ
6. L भउ 7. L पाहणु 8. P रयणि 9. P पणवन्नहिं 10. P गुडी
11. P जुवराइ 12. L गाइएवि 13. L जिणि 14. P दिज्जहिं 15. L छड्डिज्जहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पारण-विहाणु पइं किंव कुमार जाणियउ जिणह कय-सुकय-सार
सेयंसु पयासइ पुव्व-भवु जिव जाइ-सरणि जाणियउं सव्वु ।२
पुंडरिगिणि-नयरिहिं रिसह-जिउ[1] सिरि-वइर-नामु[2] संसार-भीउ
जिण-पासि आसि सूरि प्पहाणु तित्थयर-कम्म-करणेक्क-ताणु ।३
हउं सारहि तिणि सहुं गहिय-दिक्खु सिक्खिय-दुपक्ख-अक्खंड-सिक्खु
मइं जाणिउ मुणिहिं अकप्पु कप्पु तुब्भ वि कहेमि तं जण अणप्पु ।४

घत्ता

जाणिवि सेयंसह पासि सुवंसह जणु अखंड-भिक्खाए विहि
तो जिणवर-सीसहं चरण-गुणीसहं भिक्ख पयट्टइ सोक्ख[3]-निहि ॥१४

[१५]

विहरिवि वरिस-सहसु छउमत्थउ केवलि जायउ[4] जाउ कयत्थउ
बहुलेक्कारसि फग्गुण-मासह पुरिमतालि जिणु आसि विलासह ।१
समवसरणु सक्केहिं कराविउ तहिं जि[5] चउव्विहु संघु सुठाविउ
भरहह पंच-पुत्त-सय दिक्खिय तह नत्तुय सय-सत्त सुसिक्खिय ।२
जे वि[6] हुया वण-तावस हुंता ते सव्वे वि साहु संवुत्ता
चउरासी गणहरह मुहाणइ भरह-पुत्तु पुंडरिउ महा-मइ ।३
[7]चउरासी जइ सहस-जगुत्तम तिन्नि लक्ख साहुणी सुसंजम
भरहु पहिल्लउ सावगु सुप्परि गोमुहु जक्खु देवि चक्केसरि ।४
कमि कमि अट्ठाणवइ बाहुबलि सामि-पुत्त संजाया केवलि
सामिहि पुव्व-लक्खु पज्जाऊ ते चउरासी पुणु सव्वाऊ ।५

घत्ता

दस-सहसिहि साहुहु सह महबाहुहु अट्ठावइ विच्छिन्न-रिणु
[8]माहाऽइम-तेरसि निस्सम-सुह-रसि गउ निव्वाणि जुगाइ-जिणु[9] ॥१५

1. P जिवु 2. L वइरनाहु 3. L सुक्ख 4. P जायइ 5. P जिव
6. L ति 7. L साहु चउरासी य सहस 8. P महाइम. 9. अंत : P L
॥ इति श्री ऋषभ-पारणक-संधिः समाप्तः ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२. वीरजिण-पारणय-संधि

[कर्ता : रत्नप्रभसूरि रचना-समय : ई. स. ११८२]

[ध्रुवक]

तिसलादेवि-कुक्खि[1]-कलहंसह खत्तिय-नायवंस-अवयंसह
छिन्न-सुवन्न-सुवन्न-सरीरह पारण-संधि भणउं[2] जिण-वीरह २

[१]

दाहिण-भरह-खंडि संजायउ खत्तियकुंडु गामु[3] विक्खायउ
ग-तार-पायार-विराइउ आसि नयरु न परेहिं पराइउ ४
जहिं जिण-मंदिर-मंडवि सोहहिं मणि-पुत्तलिय-पंति मणु खोहहिं
नगर-निरक्खण-कउतिगि पत्तो अणिमिस अच्छर नं[4] तूरंती ६
तं पसिद्धु सिद्धत्थह नंदणु नामि[5] नंदिवद्धणु जस-वद्धणु
अगणिय-गुण-गण-सिद्धि[6]पसिद्धउ धण-कण-कंचण-कोडि-समिद्धउ ८

घत्ता

उब्भड-भड-वारणु अनय-निवारणु जस-रंजिय-नीसेस-सुरु
चारहडि-पहाणउ अइबलु राणउ[7] पालइ कुंडग्गाम-पुरु ॥९

[२]

तासु सहोयरु आसि कणिट्ठउ वद्धमाणु नामिण गुण-जिट्ठउ[8]
सुरगिरि सुर-असुरिहिं कय-मज्जणु जण-संजणिय-कम्म-सम्मज्जणु २
तेण[9] नंदिवद्धणु आपुच्छिउ नियमु[10] पुन्नु[11] मह संपइ निच्छिउ
जं माया-पियरिहिं पहवंतिहिं नाहं समणु होमि जीवंतिहिं ४

1. L कुक्षि 2. L भणिउ 3. L गामि 4. L न त्तरंती 5. L नदवद्धणु
6. P सिट्ठि 7. L राणु 8. P. जेट्ठउ 9. L तेणि 10. P निममु
11. B पुव्वु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पढमु माइ पर-लोइ पराई पुणु संपइ ताउ वि जस-वाई
भाय करेहि चित्तु ता सज्जउं अणुजाणहि[1] पव्वज्ज पव्वज्जउं[2] ६
वीरह वयणु सुणिवि एयारिसु वज्ज-घाउ सिरि निवडइ जारिसु
बाह-नीर-नीरंध[3]-कयच्छउ भणइ नंदिवद्धणु कय-निच्छउ ८

घत्ता

पंचत्तहं पत्तउ हउं परिचत्तउ ताइं भाय कित्तिय दियह
संपइ पइ मुक्कउ जण घरि थक्कउ ता हियडउं[4] फुट्टिसइ मह ॥९

[३]

विलवंतु नंदिवद्धणु निएइ पुणु मणु न सामि कोमलु करेइ
मन्नाविउ वंसवरेहिं ताव पडिखाविउ[5] वच्छर दोन्नि जाव २
तो ताहं वयणि जुग-दीह-बाहु घर-वासि वसइ पहु भाव-साहु
कय-बंभु अदंभु असंग-सोगु परिहरिय-सव्व-सावज्ज-जोगु ४
उवसरिय झत्ति लोगतिएहिं 'वय-समउ सामि' विन्नत्तु[6] तेहिं
वियरइ अणच्छु वच्छरिउ दाणु पसराउ जाव सिर-उवरि भाणु ६
मोत्तिय-[7]मरगय-माणिक्क-अंक मणि-कंकण[8]-कणय-किरीड-चक्क
हय-गय-रह-पडि-कप्पड-पडप्प मग्गण-जणाहिं दिज्जइं अणप्प ८

घत्ता

इय तीसहिं वासिहिं बिहिं उववासिहिं चंदप्पह-[9]सीयाए गउ
अवरण्हह गिण्हइ वइ तारुन्नइ मग्गाइम-दसमीहिं वउ[10] ॥९

[४]

तहिं खणि मणपज्जाउ जिणिंदह उप्पन्नउ पय-पणय-सुरिंदह
विहरिवि नाइसंड-वण-हुंतउ कुल्लग-सन्निवेसि पहु पत्तउ २
गोवुवसग्गि निसिहिं संताविउ [11]बल-बंभणि पायसु पाराविउ[12]
सहइ दुवालस-वास सुदूसह सामि उग्ग-उवसग्ग-परीसह ४

1. P अणुजाणह 2. L पव्वज्जहिं 3. L नीयंध 4. L हियडं 5. P पडिक्खाविउ
6. P विन्नत्तउ 7. L मराय 8. P कंचण कंकण किरीड 9. P सीबीयाए
10. L तउ 11 L बहल 12. L पराविउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कहिं वि कराल-ताल-उत्ताला भेसहिं भीसण-तणु वेयाला
कहिं वि सुमत्त-दंति दंतग्गल [1]ढुक्कहिं चुक्क चित्त कोवग्गल
कत्थ वि खर-नहरंकुर-दुद्धर केसरि केसर-भासुर-खंधर
कत्थ इ फुड-फुलिंग-फारप्फण कुडिल-कराल-काल-फणि उव्वण

घत्ता

जिव मेरु महीहरु सिहर-निरंतरु न हु वायहि कंपावियइ
उवसग्ग-परीसहि अइसय-दुसहि वीरु[2] तेव किं चालियइ ॥९

[५]

वरिसि दुवालसि महि-विहरंतउ दुसह-परीसह-अहियासंतउ[3]
उग्गुवसग्ग-वग्गि[4] अपमत्तउ [5]सामिसालु कोसंबिहि पत्तउ
नवउ नियमु तहिं लेइ जिणेसरु एयारिसु तिहुयण-परमेसरु
राय-कन्न निरु असरिस-वेसिहिं रोयंती [6]सिरि मुंडिय-केसिहिं
गुत्ति निहित्त नियाणिय-नीसहि निगड-निजंतिय [7]तिहिं उववासिहिं[8]
सुप्प-कोणि कुम्मास करेविणु घर-बरु पय अंतरि[9] देविणु
भिक्ख-कालि टलियइ जइ जत्थइ तो पारइ पहु अन्नह नेच्छइ[10]
पइदिणु पविसइ सामिउ भिक्खह दुसह-परीसह सहइ तितिक्खह
खंड-खीरि-खज्जूर-करंबय विहरावहिं[11] कि वि मंडी मंडय
अवर दिंति वर-लड्डुय लेविणु पहु न लेइ पुणु जाइ वलेविणु

घत्ता

पइदिणु हिंडंतह दुरिय दलंतह अहियासंतह भुक्ख-तिस
चउमास अइच्छिय भिक्ख न इच्छिय तणु होई[12] सामिहि सुकिस ॥११

[६]

आसि सयाणिउ राउ रणुद्धरु समइ तम्मि कोसंबिहि बंधुरु
हुंती तासु मिगावइ राणी चेडा-रायह धूय पहाणी

1. L मां आ चरण नथी. 2. P धीरु 3. P अहियासिंतउ 4. P उग्गुवसग्गि वग्गु
5. P सामि विसालु 6. P सिर मुंडिय 7. L तहि 8. P उववासिहिं 9. P अंतर
10. L नीच्छइ 11. L विहरावइ 12. हुई

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिरि-तिसलादेविहि भत्तिज्जी[1] सामिहिं माउल-भइणि मणोज्जी
जाणिउ तीए पुरीहिं वसंतउ आभिग्गहिउ घरिहिं विहरंतउ
निरसणु सामि तेण दुह-तत्ती तज्जइ रहसि राउ रोयंती[2]
सामिहि नियमु कोइ न हु नज्जइ घरि घरि जाइवि झति नियत्तइ
ता पिय तुज्झ रज्जि किं किज्जइ किं विन्नाणि जाणि साहिज्जइ
जाव न सामि अभिग्गहु जाणिउ आलु ताव[3] तुहुं राउ सयाणिउ

घत्ता

इय वयणु सुणेविणु नरवइ दुम्मणु हक्कारावइ जइ [4]सुजम
वंदिवि ते पुच्छइ साहु सुनिच्छइ परम-तवस्सिहिं जे नियम ॥९

[७]

[5]दव्व-खित्त-कालिहिं अरु भाविं कहिय अभिग्गह तेहि स-भाविं
राइ कहाविय तो पुर-नारिहिं जिणु विहरावउ विविह-पयारिहिं
का वि नारि मंगल गायंती मोयग देइ नियंगु छियंती
कंस-पत्ति कुम्मास[6] वहंती अवर विमुक्क-केस रोयंती
का वि हु पाइहि दावणि दाविय वियरइ वासिउ भावण भाविय
अवर करण-चारी-संचारिहिं नच्चिचरि[7] खीरि देइ सहुं वारिहिं
आसवारु[8] कुंतग्गि करेविणु मंडा को वि देइ पणमेविणु
तह वि न सामिउ पाणि पसारइ वलिवि जाइ निय-नियमु न हारइ

घत्ता

तउ देवि [9]सयाणिउ सेट्ठि सवाणिउ सत्थवाहु सव्वो वि जणु
अइ दुक्खावडियउ चिंता चडियउ अच्छइ निच्चु ससोग-मणु ॥९

[८]

इओ य—
राउ सयाणिउ धाडिहिं धाविउ नावासइ निसि चंपहिं[10] आविउ
नियय-सेन्नि जग्गहु घोसावइ लुंटहिं लोय जासु जं भावइ

1. P भतिज्जी 2. L रेयंती 3. L तुह 4. P सुसंजम 5. L देव-खेत्त 6. L कोमास 7. P नच्चिर खीर 8. L असवारु 8. L सयाणिउ 9. P चडियउ 10. L चंपइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक्कि अगि दहिवाहणु नट्ठउ हरि करि [1]कंसु कोसु सउ ट्ठउ
पाविय पाइकि धारिणि राणी अनु तसु वसुमइ धूय सियाणी ४
कोसंबिहि सो पुरिसु उवेई मह पाणप्पिय होसु भणेई
धारिणी सील-कलकु कलती हियडउ फुट्टिवि पर-भवि पत्ती ६
पाइकु पच्छत्तावु[2] करंतउ मरिसइ एह इ एउ मुणंतउ
महुर-महुर-वयणिहिं संभासइ जिव गय-सोग बाल सा भासइ ८

घत्ता

अणुणिंतउ सारिहिं विविह-पयारिहिं कोसंबिहिं सो पत्तु नरु
पणवीहिहिं [3]हिंडइ सिरि तिणु अडुइ जिव पावइ पर[4]-दव्व-भरु ॥९

[९]

अह तत्थ धणावहिं[5] दिट्ठ सेट्ठि सा नाइ कुसुम-सर-चाव-लट्ठि
सुकुमार गोर पत्तल सुदेह नं चलिर [6]सुवन्न-सुवन्न-रेह २
[7]पेक्खिवि सिट्ठि तं तत्थ पत्तु जिव धूयहि तिव धारइ ममत्तु
उल्लविय-मोलि सा लइय तेण न पेल्लिउ तसु [8]पुन्नोदएण ४
निय-भवणि नीय सा सेट्ठि बाल घण-कुडिल-काल-सुपलंब-बाल
पुत्ति व्व तेण अप्पिय पियाए मूलाए निच्चु निरवच्चियाए ६
निय-गुणिहिं तीए नीसेस-लोउ फुडु विहिउ फुरिय-फार-प्पमोउ
हिम-सीयलाए भुवण-प्पसिद्धु तिणि चंदण त्ति नवु नामु लद्धु ८

घत्ता

भुवणह वि पियारी सा जय-सारी मूलाए न सुहाइ मणि
किं कत्थइ कोसिउ होइ सुतोसिउ जइ [9]तवेइ अंबरि तरणि ॥९

[१०]

जा तीए सार-सोहग्ग-गेह मूला निएइ नव-रूव-रेह
ता चित्ति धसक्किय चिंतवेइ निय-भज्ज एह नणु धणु करेइ २

1. L कंसु सो कोसु सु मट्ठउ 2. P पच्छुतावु 3 P उड्डुइ L. उदुइ
4. P परु 5. L धणावइ 6. L सवत्त सुवन्न 7. L पक्खेव सेट्ठि 8. P पुन्नोदयएण
9. P तावइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जइ हूय एह किर सेट्ठि-घरणि ता हुंतु मणोरह मज्झ मरणि
जो खीरि-खंड-खज्जूर खाइ खल-भक्खणि तासु कि चित्तु जाइ ४
जइ छिंदउं बाली एह वाहि तो होइ अवसु मह मण-समाहि
सा कुणइ तासु अवमाणणाउ अक्कोसण-तज्जण-तालणाउ ६
सा सहइ सव्वु जिव जच्च-भिच्चु आराहइ निय-जणणि व्व निच्चु
पुण एरिसु तं पइ तासु झाणु विस-कुंभु जेंव कय-विस-पिहाणु ८

घत्ता

अह अन्नह सो दिणि अइ ऊसुगु मणि उस्सूरह धणु आवियउ
दासीयणु पुच्छइ को वि न अच्छइ निय-कज्जिहिं को कहि वि गउ ॥९

[११]

ता चंदण चल्लिय नीरु लेवि निय ताय पाय धोएमि बे वि
पुण पुण वि तेण वारिज्जमाण पक्खालइ पय विणएक्क-ताण २
समभरि लुलंतु कुंतल-कलाउ कद्दमि पडंतु [2]अंबोल्लयाउ
सइं धरिउ धणावहि लील-लट्ठि पय धोय जाव बालाए कट्ठि ४
मज्जारि जेंव [3]कोणइ निलुक्क धण-मज्ज सव्वु[4] तं नियइ चुक्क
[5]चंडक्किय चिंतइ एउ दिट्ठु ता मज्झ[6] कज्जु निच्छइ [7]विणट्ठु ६
ता जाव जाइ घर-बारि एहु निय पुत्ति करु सकलकु देहु
ता सिट्ठि पियारइ केसपासि निय[8]रोसु सहावउ बोड दासि ८

घत्ता

[9]न्हाविउ हक्कारइ सिरु मुंडावइ पाएहिं नियलइं [9]निक्खिवइ
चारगि पइसारइ कंबिहिं मारइ [10]वारि वारि तालं दियइ ॥९

[१२]

तो तीए चेडि-चेडाइ-वग्गु निट्ठुर-गिराहिं भासिउ समग्गु
जो सेट्ठि कहेसइ एहु अत्थु सो मारिसु कारिसु अह अणत्थु २

1. P. विणएण एक्कताण 2. L अम्मोययाउ 3. P केणइ 4. L तां 5. L. चंडिक्किकउ 6. L मज्झि 7. P. विणिट्ठु 8. P मां आ चरण नथी. L. निय रोसु सहायउ छोड दासि 9. P निक्खिवइ 10. मां 'वारि वारि' पाठ नथी.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अह एइ सिट्ठि न हु नियइ बाल गुण-रयण-माल सिय-जस-विसाल
हु रमण-केलि-नीसह-सरीर सुहि सुत्ति होसइ मज्झि धीर ४
न हु नियइ दुइज्जइ दिणि वि जाव उक्कंठ-विसंठुलु सेट्ठि ताव
जणु परियणु पुच्छइ आयरेण न हु कहइ कोइ मूला-भएण ६
चिंतेवि सवा(या)णी सहिय-पासि निरु रमइ कहिं वि सा गुणह रासि
अह कह वि पत्तु वासरु चउत्थु तो जाउ सेटिठ कोविण विहत्थु ८

घत्ता

आबालहिं [1]बालहिं [2]तउ गुणमालहिं थेर-दासि धीरिम धरिवि
मूला-दुच्चिचट्ठिउ कहइ जह-ट्ठिउ [3]मरणु जाव अंगीकरिवि ॥९

[१३]

तो मणि दुक्खिउ धणु [4]अइयारिं हणिउ किं मोग्गर-गाढ-पहारिं
अइ-वेगि गउ चारग-बारिं ताल अप्फालेइ कुठारिं[5] २
निय-कर-कमलि कउलु वहंती दुल्लहुलु बाल दिट्ठ रोयंती
ति-दिवस-निरसण भुक्खहिं भुरुली करि-उम्मूलिय-कमलिणि-तुल्ली ४
छुहिय-[6]बाल तउ भोयणु चाहइ मूला-थवियउं किं पि न पावइ
दिटठ कह वि कुम्मास ति लेविणु अप्पिय सुप्पह कोणि [7]करेविणु ६
धणु गउ नियलउग्घाडण-कारणि कारुहु कस्सइ सइ हक्कारणि
चंदण ते कुम्मास पलोयइ पिइय-हरु सुमरेविणु रोयइ ८

घत्ता

न हु तारिसु विज्जइ अतिहि [8]जं दिज्जइ तिहिं उववासहं पारणइ
जइ तह वि अवत्थहिं पावउं दुत्थहिं तो पारावउं को वि जइ ॥९

[१४]

एत्थंतरि तित्थेसरु पत्तउ चंदण-पुन्निहिं पेल्लिज्जंतउ
तरणि तिव्व-तव-तेय-विराइउ कचणु चित्तभाणु नं तावि उ २

1. P बालाहि 2. L तो 3. P मरणि 4. L अइयारइ 5. L कुठारइं 6. L बाल सा तइ घणु चाहइ 7. L धरेविणु 8. L जु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जंगमु कप्परुक्खु किं आयउ सुरगिरि अवरु एत्थु किं जायउ
कुसुमबाणु [1]किं दिक्ख-समिद्धउ विहरइ अहव धम्मु तणु-बद्धउ
सा[2] परमेसरु पेक्खिवि चिंतइ अरि रि अतिहि मइं पाविउ संपइ
कटरे मह पुन्नह परिवाडी पूरी अतिहि-तणी राहाडी
उट्ठिय [3]पिक्खिवि पहु घरि आउ [4]उबर-बाहिरि मेल्लइ[5] पाउ
भणइ सबाह-पवाह [6]सुभासहि पारहि पहु [7]तुहुं इय कुम्मासहि

घत्ता

पहु एउ सुणेविणु नियमु सरेविणु दव्वाईहि महग्घविउ
निय-पाणि पसारइ अंजलि धारइ सा [8]वहिरावइ सुप्पि किउ ॥९

[१५]

पारगामि-पारणय-महूसवि सपरिवारि संपत्तइ वासवि
वाहिं देव-दुंदुहि आणंदिय वरिसहिं कुसुम-समूह[9]-सुगंधिय
रयण-कणय[10]-ककण-मणि-हारा वरिसहिं तक्खणि ते वसुधारा
घरि घरि तोरण वदुरवालिहिं किज्जहिं चेलुक्खेव[11]झयालिहिं
बपु रि सुदाणु सुदाणुग्घोसिहिं[12] नच्चिर सूर-समूह जणु[13] तोसिहिं[14]
सिरि सिररुह-भरु बाल्ह जाउ सरलु तरलु नं मोर-कलाउ
नियल विलीण विलीणा रीसहिं मणिमय-नेउर पाइहिं दीसहिं
पहिरिय पंच-रंग पडि कप्पड पट्ट हीर नवरंग[15] महुब्भड

घत्ता

मरगय-माणिक्किहिं मोत्तिय-चउक्किहिं पउमराय-विद्दुम-दलिहिं
समलंकिय-भूसण अवगय-दूसण पहिरिय अंगिहि उज्जलिहिं ॥९

[१६]

सिंधुर-खंधराहिं[15] आरूढउ राउ सयाणिउ नीइ-अमूढउ
देवि मिगावइ [16]सहुं संपत्तउ रायत्थाण-जणो वि पहुत्तउ

1. L तं 2. P सो 3. L पेक्खवि 4. L अंबरि 5. L मिल्हइ 6. L सभासहि 7. L तुह 8. L विहरावइ 9. L समूहिं 10. L कणय-मणि-मोत्तिय-हारा 11. P कवालिहिं 12. P •ग्घोसहिं 13. L जिण 14. P तोसहिं 15. L राग

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तहिं अन्ने वि पत्त तंबोलिय- सालिय-हालिय-नालिय-मालिय
जोहारेविणु विहुणिय माऊ चंदण-बाल सिराहइ राऊ ४
सुदरि सुदरु जम्मु [1]तुहारउ नामुविकत्तणु तुह गुणकारउ
तुह परि तियसिहि [2]जसु सलहिज्जइ जग-धवलहरु जेण धवलिज्जइ ६
पइ पाराविउ वीर-जिणेसरु अन्नहि कसु वि न एत्तिउ गुणभरु
किं मायंगह घरि करि बज्झइ रंकह कामधेणु किं दुज्झइ ८

घत्ता

एवहिं पइं खालिउ महिलह टालिउ थी-कलकु न संघडइ
चंदणह महा-मइ देवि मिगावइ इय भणेवि पाइहिं पडइ ॥९

[१७]

निवु वसुहारहिं सत्तण लग्गउ तउ सक्केण [3]निरक्खिउ थक्कउ
धणु जसु कासु वि चंदण अप्पइ [4]लहइ सु एत्थु न अन्नु पहुप्पइ २
ताउ धणावहु सो धण-सामिउ तेण तीए तसु चेव पणामिउ
नरनाहेण वि तसु अणुजाणिउ घर-अब्भिंतरि सेट्ठि पराणिउ ४
संपुलु नामि महल्लउ आसि आविउ देवि-मिगावइ-पासि
चदणबाल तत्थ सो पेक्खवि पाय-पडिउ रोयइ ओलक्खिवि ६
कहइ मिगावइ भणिउ सु तक्खणि एह राय-दहिवाहण-नदणि
वसुमइ त्ति [5]निरु धारिणि-जाई जाणिउं चंपा-भंगि इहाई ८

घत्ता

तो देवि नियंती भणइ [6]रुयंती भाइणिज्जि तुह होसि महु
वच्छे आलिंगसु मइं निव्वावसु इय आलिंगइ सा सुबहु ॥९

[१८]

कय-जोहारु [7]राउ सुरराइं भणिउ निसुणि मह सासणु काई
बाल नेहि निय-गेहि नरेसर पालहि केवि मास सुह-निब्भर २

1. L तहारउ 2. P तसु 3. L निरक्किउ 4. L लेइ 5. P निरधारिणी 6. L रोयंती 7. P रायउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वीरह नाणि जाइ उक्कोसइ सिस्सिणि पढम-[1]पवत्तिणि होसइ
करिहिं चडाविउ चंदण तक्खणि नीय नरेसरि निय-मदिरि [2]खणि ४
गयउ सक्कु धवलहरि धरेविणु चंदण देव-दूस वर देविणु
कन्नंतेउर-मज्झि रमंती अच्छइ [3]जिण-केवलु पडिखंती ६
गामागर-नगरिहिं विहरंतउ जंभिय-गामि सामि संपत्तउ
उजुवालिय-नइ-तीरि जु[4] सालु तसु तलि ठिउ तव-छट्ठ-विसालु ८

घत्ता

अह वरिसि दुवालसि गयइ अणालसि [5]छहिं मासिहिं पक्खग्गलिहिं
सिय दसमि विसाहह तिहुयण-नाहह नाणु जाउ झामियकलिहिं ॥९

[१९]

मिलिय बत्तीस तियसेस चलियासणा महिम [6]नाणस्स तस्सावहतिं क्खणा
अह समवसरणु किरणावली-राइय[7] रयण-तवणिज्ज-रुप्पेहिं उप्पाइयं २
तत्थ तित्थेसु सोहंत-सीहासणो खणु समासीण होऊण चउराणणो
पत्तु तत्तो वि पावाइ पावण-गुणो तत्थ तित्थं समत्थेइ चउहा जिणो ४
ठाविया ताव एक्कारसुब्भड-गुणा गणहरा गोयमाई तहा नव गणा
तियस-नाहेण तत्थाणिया चंदणा दिक्खिया [8]मयहरी ठाविया सामिणा ६
पुण वि विहरइ महिं नाहु मंडंतओ भविय-कमलाइं भाणु व्व भासंतओ
खाइयं दंसण सेणिओ पाविओ तित्थ नामं महत्थं समत्थाविओ ८

घत्ता

सिद्धत्थह नंदणु भव-निक्कंदणु केसरि-लंछण-लछियउ
[9]चउदह जइ सहसह सामिउ सुजसह देउ देउ मह वंछियउ ॥९

[२०]

पाडिफद्धि[10]पसिद्धि च सिद्धि[11] तए देव कुव्वंतु[12] गोसालु गजिउ जए
मज्झिमं पत्तु पावापुरिं अप्पणो जाणिऊण च निव्वाणु निस्सम-गुणो २
चरमु निस्समु समोसरणु सुविराइयं [13]सुकसालाए पावाए आपूरियं
तीस वासाइं तुममासि गिह-वासिरो बारसद्धं च छउमत्थवत्थाधरो ४

1. L पवित्तिणि 2. P खाणी 3. L जिणु केवलि 4. L तीर जि सालू 5. L छइ 6. L नाहस्स 7. P मालियं 8. L महयरी 9. L मां आ पंक्तिनो पाठ ज नथी (चउदह ...वंछियउ सुधी) 10. L पाडिपद्धि 11. L सिद्धि 12. L गुव्वंतु 13 L सुक्कसालाए

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तीसऊणाइं ताइं तए धारियं तित्थु सुपसत्थु सव्वत्थ वित्थारियं
सामि सव्वाउ बाहत्तरी ते नियं सत्त-हत्थ-प्पमाणेण निव्वाहियं[1] ६
जक्खु पच्चक्खु कय-रक्खु तुह सासणे आसि मायंगु नामेण गय-दूसणे
सम्मदिट्ठीण साहेज्ज-कज्जे रया देवया तुज्झ तित्थम्मि सिद्धाइया ८

घत्ता

सिरि-तिसला-नंदणु कणयच्छवि-तणु पज्जंकासण[2]-संठियउ
कत्तियमावस्सहि साइहिं गोसहिं एक्को च्चिय निव्वाणि गउ ॥९

1. L निव्वाइयं 2. L पज्जंकासणि

अंतः P. L. इति चंदनबाल-पारण-संधि ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. गयसुउमाल-संधि

[कर्ता : रत्नप्रभसूरि रचना-समय : ई. स. ११८२]

[१]

आसि नयरि बारवइ पसिद्धिय सावय-सुवन्न सुवन्न-समिद्धिय
जा जोयण बारह दीहत्तणि सक्कि करावियं नव-पिहुलत्तणि २
जहिं धण-कणय-कोडि सज्जिज्जहिं दाणि मणोरह जणह न पुज्जहिं
भेरि-सद्द-निद्दारिय-रोगिहिं धन्नंतरि मन्नियइ न लोगिहिं ४
करइ तत्थु(१ रज्जु)[1] राणि-वरण-सारउ नारायणु नारीहिं पियारउ
चाव-चाय-चारहडि-अचुक्कउ कुनय-कुसंग-कलकिहिं मुक्कउ ६
जसु निरु निवसइ नेमि [2]भडारउ माणसि हंसु जेम्व[3] जयसारउ
खायग-सम्म-दिट्ठि-सुविसिट्ठउ नेमि जिणेसरि[4] जो उवइट्ठउ ८
सच्चहा अवरु रुप्पिणी राणी सयलंतेउर-मज्झि पहाणी
विहरंतउ सिरि-नेमि-जिणेसरु तहिं कयाइ [5]पत्तउ परमेसरु १०

घत्ता

कुलसेल-जिणंतह गिरि-उज्जिंतह लक्खारामि समोसरणु
तक्खणि तियसिंदिहिं किउ सच्छंदिहिं भव-भयत्त-[6]जंतुहुं सरणु ॥ ११

[२]

किय देव-देवि देसण सुचंग नर-अमर-असुर-राएक्क-रंग
खणि मुणिहिं जाय विहरणह वार अणुसरहिं साहु-जण घर-दुवार २
अह देवइ-देविहिं दुन्नि पुत्त विहरंत भवण[7]-अंगणि पहुत्त
[7]बिहु ताह अणीयजसो त्ति पढमु [8]महसेणु बिइज्जउ पोढ-पसमु ४
[9]ते साहु-सीह पिक्खेवि बे वि निय-अंगि माइ देवइ न देवि
सा देइ सिंह-केसर रसाल नव-लड्डुय गडुय जिव विसाल ६
विहरावि जाव देवइ बइट्ठ जइ-जुयल अन्न तावहिं पविट्ठ
मुणि अजियसेणु गुणगण-समग्गु अरु निहयसेणु अणुमग्ग-लग्गु ८

---

1. L गणि 2. L भराडउ 3. L जेव 4. L णिसर 5. P पत्तु 6. P जंतुह 7. P बिहि 8. L नहसेणु 9. P तो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विहरावइ देवइ देवि ते वि वियसंत-चित्त मोयगिहिं बे[1] वि
खणमेत्ति तइज्जउ तत्थ पत्तु संघाडउ सुमुणिहि अप्पमत्तु १०
अग्गेसरु मुणिवरु देवसेणु अणुपह-पयट्टु पुणु सत्तुसेणु
विहराविय ते वि हु मोयगेहिं निय-भाव-भत्ति अइ-कोउगेहिं १२

घत्ता

ते वि हु विहराविवि चिरु निज्झाइवि चिंतइ चित्ति[2] चमक्किकयइ
किं एहु भराडउ मुणि संघाडउ वार वार घरि एइ हइ ॥१३

[३]

पय पणमिवि पुच्छइ मुणिकुमार ते देवइ तो[3] वर-भत्ति-सार
किं तुम्ह साहु दिसि-मोहु एहु जं वार वार मह घरि उवेहु २
अह लहह[4] न कत्थइ एत्थु थामि घण-धन्न-समिद्धइ भिक्ख सामि
अंतरिय चित्ति अहवा वि अम्हि अवरि[5] वि मुणेमि ते चेव तुम्हि ४
अह पभणहिं साहु महाणुभावि परमत्थु कहहुं सुणि एक्क-भावि
भद्दिलपुरि अच्छइ नाग-सिट्ठि तसु सुलस भज्ज पइ-पेम्म-सिट्ठि ६
जिण-धम्मि रम्मि अणुराय-रत्त [6]ते दो वि देव-गुरु-पाय-भत्त
सुय अम्हि ताहं सुसरिक्ख-रूव जण छा वि पुन्न-कारुन्न-कूव ८
पडिबुद्ध धम्म-देसण सुणेवि महि विहरहुं नेमिहिं दिक्ख लेवि
ता जाणउ तिहिं संघाडएहिं परिवाडि पत्त[8] ते तुज्झ गेहि १०

घत्ता

इय सा निसुणंती हरिसु वहंती रोमंचंचिय-काय-लय
मुणि दो वि ति वंदइ [9]सुहु अहिणंदइ चिंतइ तक्खणि तोस-गय ॥११

[४]

हउं जाव नियउं ए साहु-सीह हरि-तुल्ल-रूव रज्जह निरीह
ताव सइं हसइ वियसेइ[10] चित्तु नं अमिय-वारि नयणिहिं निहित्तु २

1. L देवि 2. L चित 3. L ते 4. P लहइ 5. P अवरे वि मुणामि 6. P तो 7. P संघडएहिं 8. P पत्ता 9. P मुहु 10. P विहसेइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कय-सत्त-रूवु किर कन्हु एसु सिरिवच्छ-सुलंछिय-वच्छदेसु
हउं बाल-कालि अइमुत्ति वुत्त जीवंत जगुत्तम अट्ठ पुत्त ४
ता होहि महारा अंग-जाय ते छा वि साहु निरु कन्ह-भाय
हय-विहि-विलासि केणावि पत्त तहिं सुलस-नाग-मंदिरि सुगत्त ६
पसरुट्ठिय जाइवि जिण-सगासि सो [1]पुच्छिउमिच्छइ नाण-रासि
निय-पाणि-परिट्ठिय-कंकणेण किर कांइं करेवउं दप्पणेण ८
रवि-उग्गमि देवइ[2] पत्त देवि जिण-नाह-पासि रहि आरुहेवि
पणमित्तु पुरट्ठिय सा सुनाणु बोलावइ अवसरि भुवण-भाणु १०

घत्ता

ससुरासुर-परिसहिं [3]धम्मुक्करिसहिं तसु टगमग-जोयंतियहिं
देवइ आमंतिवि गुरु अणुचिंतिवि सामि पयंपइ दय-उदहि ॥११

[९]

पइं धम्मसीलि[4] चिंतिउ [5]जु चित्ति तं सच्चु चेव न हु का वि भंति
ते पुत्त तुज्झ हरिणेगमेसि संचारिय [6]अवसरि सुलस-रेसि २
मय-वच्छहि ताहि छ अंग-जाय तुह अप्पिय कंसह मारणाय
निय-तणय-विओग-विवाग-गम्मु तुह फलिउ एउ किउ सइ जु कम्मु ४
पइं पुव्व-भवंतरि रयण-रत्त अवहरिय सवक्किहिं आसि सत्त
तहिं ठावि मुक्क वर-काचखड सुसरिक्ख-रूव[7] कारिवि अखंड ६
विलवंतियाए तसु ताह मज्झि पइं एक्कु तमप्पिउ सुगुण-मज्झि
इय सत्त-रयण-चोरिक्क-तणउ पइं पत्तउ फलु मण-दुक्खु घणउ ८
ज खणिण पुणऽप्पिउ रयणु एगु तिणि हरि जणेइ तुह सुहु अणेगु
इय सुणिवि देवि देवइ निरुत्तु महु-महुरु नेमि-जिणनाह-वुत्तु १०
जिण-दंसिय वंदइ ते सुसाहु [8]उरुरुहिहिं झरंतिहिं पय-पवाहु

घत्ता

अह सा ते वंदइ मुणि अभिणंदइ धन्न पुन्न जगि तुम्हि[9] पर
अरु मज्झ विसारी बहु-गुण धारि [10]कुक्खि सलक्खण पुत्त[11] धर ॥१२

1. P पुच्छिसुमिच्छइ 2. P देवए 3. L धम्मु करेसहिं 4. L धम्मशील 5. P जं 6. L अवर वि सु० 7. P रुवाकारि अखंड 8. P उररु० 9. L तुम्ह 10. L कुक्षि सलक्षण 11. P पुत्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[६]

जं मोक्ख-सोक्ख-साहण-समत्थु छहिं सज्जिउ संजमु सुप्पसत्थु
हरि-भूवइ भुंजइ भारहद्धु जस-तोसिय-गण-गंधव्व-सिद्धु २
हउ जगि कयत्थ एक्क जि निरुत्त ज सत्तहिं इय पुत्तेहिं जुत्त
निय-गिह पहुत्त झूरत होइ जं पालिउ न हु निय-बाहु कोइ ४
करयल-निहित्त निम्मल कवोल अइ-तरल-सरल-नीसास-लोल
[2]ढुलुहुलुढुलंत-नयणंसु-धार हरि दिट्ठ देवि सोयधयार ६
तिणि[3]पुच्छिय पणमिवि चित्त-दुक्खु किं कुणसि माइ [4]एत्तिउ असुक्खु
तुह लंघिय केणइ किंतु आण कु वि सिद्धु[5] मज्झि न मणोरहाण ८
मह देव अंब आएसु देहि तिहुअणि वि इट्ठु किं तुह कहेहि
आणेमि अब अविलबमेव निय [6]जणणिहि फेडउं दुक्खु जेम्व १०

घत्ता

अह भुवण-महासइ देवइ भासइ अवरु दुक्ख लेसो वि न हु
जं पुण नो पालिउ एक्कु वि लालिउ स-सिसु खुडुक्कइ तं जि महु ॥११

[७]

तुहुं पालिउ ताव जसोय वच्छ अवरे वि पढम सुलसाए सच्छ
अह हरिय तुम्हि सत्त वि सुबाल भुक्खियहं जेवं वर-खीरि-थाल २
अइ धन्न पुन्न ता चेव नारि अरु साव सलक्खण सोक्खकारि
सयमेव जाहिं पउ पज्झरंतु निय-अंकि बालु पालिउ पियंतु ४
हरि हरिणि गावि वानरि वि धन्न निय-बाल जि पेक्खहिं सुपसन्न
हउं दइवि सुदूमिय दुक्ख भूरि किय[7] कोइल जिव निय डिंभ दूरि ६
ता तह करेसु सारंगपाणि जह पालउ बालु [8]सलोल-वाणि
ओमिति भणेविणु बंभयारि एगंति निसन्नउ दाणवारि ८
पत्थरिवि दब्भ-सत्थरउ सुट्ठु अट्ठम-तवेण उवविट्ठु विट्ठु
मणि धरिवि पुव्व-संगइय[9] देउ [10]आकंपिय आवइ भणइ एउ १०

1. L जइ 2. P दुलुहुलुढुलंत 3 P तिण 4. P एत्तिअसुक्खु 5. P सिट्ठु मणि 6. P जणणि फे० 7. L जिय 8. L सलोण-वाणि 9. P संगइउ 10 P आकंपइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

कहि केण निमित्तिण कन्ह पयत्तिण पइं हउ सुमरिउ रत्ति-दिणु
अह कन्हि वि वासिउ[1] कज्जु पयासिउ देवइ देवउ पुत्त-रिणु ॥११

[८]

भणइ देउ हरि होसइ बालउ देवइ-देविहिं सव्व-गुणालउ
पुणु जोव्वण-भरि नेमि-जिणेसहं पासि दिक्ख लेसइ सिय-लेसहं २
इय भणेवि सुरु गउ सुरवासह हरि वि पत्तु निय-रज्ज-विलासह
अवसरि सुविणउं[2] देवइ देक्खइ मुहि मयगलु पविसंतउ लक्खइ ४
समइ बालु सुकुमालु [3]सुलक्खणु देवइ-देविहिं जाउ वियक्खणु
वद्धावणउं कारावि उ केसवि निय-अणुजाय-भाय-जम्मूसवि ६
घर-दुवार-सोहहिं [4]सुविसालहिं उब्भिय-तोरण-वंदुरवालहिं
वर-नवरंग-रत्त[5]-पट्टंसुय विसहिं सुवासिणि अक्खवत्त-जुय ८
ठावि ठावि सुय-माइय[6] गिज्जहिं चट्टहिं[7] चोट्टहिं ओप्पड दिज्जहिं
पाउल मंगल राउलि वच्चहिं फिरि फिरि वार-विलासिणि नच्चहिं १०

घत्ता

घण-तूराडंबरि अइसय-सुंदरि वित्तउ वद्धावणय-रसु
अह सुमिणायत्तउ नामु निरुत्तउ दिन्नउ गयसुकुमालु तसु[8] ॥११

[९]

सुरगिरि-सिरग्गि जिव कप्परुक्खु तिव वड्ढइ बालु विसाल-सुक्खु
खेल्लावइ[9] देवइ खेल्लणेहिं बोल्लावइ लल्लुर-वयणुलेहिं २
परिसीलिय-अविकल-कल-कलाउ संपत्त[10] पुन्न-तारुन्न-भाउ
परिणेइ कुमरु अइसय-सुरूय मा-उवरोहि दुमयराय-धूय ४
अणुरूवु पभावइ तासु नामु निय-हत्थि भल्लि जा करइ कामु
तह सोम-सम्म-दिय-अंग-जाय सोमाभिहाण विहियाणुराय ६
खत्तिय-कलत्त-संभव सुवन्न परिणीय तेण अवरा वि कन्न
अह तम्मि चेव समयम्मि सामि विहरंतु पत्तु पुर-नगर-गामि ८

1. L भासिउ 2. P सुविणं 3. L सलक्खणु 4. P सुविलासहिं 5. P घट्टंसुय
6. L माइए 7. L वट्टह चोट्टिहिं 8. L तहिं 9. L खेलावइ 10. L संपुन्न

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ठिउ रिट्ठनेमि सेविउ सुरेसि बारवइ-नयरि रेवय-पएसि
सकलत्तु पत्तु वंदणहं रेसि सुकुमाल-कुमरु निस्सम-सुहेसि १०

घत्ता

देसण निसुणेविणु चित्ति धरेविणु संसारहि [1]सुविरत्त-मणु
घरवासु विसज्जइ दिक्ख पवज्जइ जिणहं पासि परिचत्त-रणु ॥११

[१०]

पव्वज्ज पवज्जहिं दो वि भज्ज सह सोम-पभावइ भुय[2]-अवज्ज
सुकुमाल-साहु अइ-चंग-अंगु जाणियइ जाउ किर मुणि अणंगु २
विन्नवइ नमेविणु नेमि-नाहु जोडिय-करग्गु सुकुमाल-साहु
जइ [3]उवदिसहु सहि उवसग्गु निसि करउं मसाणि तं काउसग्गु ४
अणुजाणिउ गय-मुणि गउ मसाणि उस्सग्गु करिवि ठिउ मोण-झाणि
न चलेइ सुरेहिं वि सुद्धभाउ सुर-सेलु जेंव निक्कंप-काउ ६
अह कह वि [4]दुजाइ सु सोम-सम्मु तहिं ठावि पहुत्तउ कूर-कम्मु
अवलोइवि गयसुकुमाल-साहु चिंतेइ तिव्व-कोवग्गिदाहु ८
परिणिवि अणेण मह धूय धुत्ति पासंडु लियावियं रम्म-मुत्ति
तसु तणी वट्ट हा हा हयासि लहु लइय विडंबिय [5]सुगुणरासि १०

घत्ता

ता एहु स लीहइ अवसरि ईहइ वइरिउं साहउं अप्पणउ
इय सीसि चियानलु जालइ अग्गलु कूर-कम्मु सो निग्घिणउ ॥११

[११]

जिव जिव सिरु दुज्जाइ सु जालइ तिंव तिंव सुमुणि खमा-रसु ढालइ
जिव जिव सिरु दहेइ वइसानरु तिंव तिंव होइ कम्मु छारुक्करु २
मणि मुणिवरु वर-भावण भावइ खणि खणि सुक्क-झाणु संभावइ
एहु देहु जइ डज्झइ डज्झउ मह जिउ कम्म-कलंकिहि सुज्झउ ४
दढ-तिल-जंतुप्पाइय-पीलण खंदग-सीस सहाविय[6] वेयण
चरण-चवेड देवि विद्दारिउ वग्घि सु साहु सुकोसलु मारिउ ६

1. L सुचरित्तु 2. L चुय 3. L देव दिसहु 4. L हुजाइ 5. L सुहगुरासि
6. L सहाइय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महुर-नरिंदि दंड-अणगारिहिं सिरु छिन्नउं तरवारि-पहारिहिं
तह वि ति अप्पमत्त निय-सत्तहिं कह वि न चित्ति चुक्क सतत्तहिं ८
जइ वि तिव्व तणि वेयण दुक्कइ तह[1] वि मुणिंदु न झाणह चुक्कइ
जं किर एहु मह कारणि बंभणु अहह होइ दुग्गइ-दुक्खिंधणु १०

घत्ता

इय भावण-जुत्तह तसु गुणवंतह मुणिहिं देह-चाएण सहुं
केवलु संजायउ मोक्खु वि आयउ सुर करंति निव्वाण-महु ॥११

[१२]

अह उग्गउ पुव्व-गिरिंदि भाणु गय-मुणिहि जेव तं[2] दिव्व-नाणु
हरि हरिसिउ देवइ-देवि-जुत्तु संचलिउ भाय-वंदण-निमित्तु २
अंतरपहि पेक्खइ फट्ट-चीरु अइ-चिरतर-जर-जज्जर-सरीरु
सिरि करिवि इट्ट दूरह वहंतु निय-ताय-हेउ देउलु करंतु ४
सयमेव देवि साहेज्जु तासु निप्पाइउ हरि तं सुहकलासु
जाइवि नमेवि सिरि-नेमिनाहु[3] पुच्छइ कहिं अच्छइ नवउ साहु ६
पभणइ जिणिंदु गोविंद तेण परमप्पउ पाविउ खम-गुणेण
वउ लेवि देवि निसि काउसग्गु स सहिंसु अग्गि-उग्गोवसग्गु ८
जह [4]इह उवंति तइं रायमग्गि साहिज्जु[5] दियह दिन्नउ निसग्गि[6]
तह तासु सीसि जालंति जलणु दिन्नउ [7]दुजम्मि तं सिद्धिकरणु १०

घत्ता

पुच्छिउ दामोदरि बहु-दुह-निब्भरि [8]किं करि मइं सो जाणिवउं
जंपइ [9]जायव जिणु पइं पिक्खेविणु जासु सीसु फुडु फुट्टिवउं ॥११

[१३]

परमेसरु पणमेवि जणद्दणु पिउवणि पत्तउ कय-अक्कंदणु
गयसुकुमाल-काउ गय-जीविउ पेक्खइ पुहविहिं पडिउ पलीविउ २
ण्हाण-विलेवण-पूय पयावइ तसु सयमेव ससोगु करावइ

1. P तह वि एउ मज्झु मणि खुडुक्कइ । 2. P तं जेव 3. P नेमनाहु 4. P इय 5. L सोहिज्ज 6. L निसग्गु 7. L डजम्मि 8. L किव किर सइ 9. L तं जिणु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अगर-गंधसारिहिं सक्कारइ जणणि-मुक्क-पोक्कार निवारइ ४
सोगावेगु माइ मा[1] किज्जउ पर परमत्थु महत्थु मुणिज्जउ
धन्नु पुन्नु वन्नियइ सया मुणि अमरिहिं गयसुकुमालु महा-मुणि ६
जसु निमित्तु तवु तिव्वु तविज्जइ नीरसु नीरु [2]निरन्नह पिज्जइ
पुव्व-कोडि-संजमि पाविज्जइ जं सिव-सुहु तं पत्तु महा-जइ ८
इय संबोहिवि माइ चडावइ रहवरि हरि नयरिहि जा आवइ
ताव तासु तं पिक्खवि विप्पहि सिरु फुट्टउं सयखंडु दुरप्पहि १०

घत्ता

जायव-चूडामणि जाणिउ सो मणि विप्पु दड्ढ[3] गय-साहु सिरु
तउ काल-बलद्दिहिं[4] डिंडिम-सद्दिहिं कड्ढाविउ नयरीहिं निरु ॥११

[१४]

उत्तम अनइ निसग्गि न दुक्कहिं मज्झिम अन्नि निवारिय थक्कहिं
अहमह अनउ निरंभइ राउलु अन्नहं होइ लोगु अइ-आउलु २
गयसुकुमाल-महामुणि-मारणि उत्तमंगि चिय अग्गिहिं जालणि
अत्थि सु कोइ नेव जायव-जणि जो न जाउ अइ-दुक्खिउ तक्खणि ४
तिणि वेरग्गि लग्गि अइ-अग्गलि विणु वसुदेवि एक्कि जस-उज्जलि
नव दसार पव्वज्ज पवज्जहिं परिवारिय पाएण स-भज्जहिं ६
सामि-माइ सिवदेवि महासइ सव्व-विरइ-संजमु[5] उल्लासइ
सत्त पुत्त अवरि वि वसुदेवहिं तहिं अवसरि वर-संजमु सेवहिं ८
जउकुमार दुव्वार वि दिक्खिय [6]जिण-सगासि जइ-सिक्ख सुलक्खिय
कन्हि स-कन्न सव्वि दिक्खाविय न हु कय-नियमि का वि[7] परिणाविय १०

घत्ता

इय गयसुकुमालिहि चरिउ अबालहि अइ-साहस-निव्वाह-वरु
जो पढइ भत्ति-भरि गुणइ महुर-सरि जाइ दूरि तसु दुरिय-भरु ॥११

1. P म 2. L निरुत्तह 3. P दट्ठ 4. L बलिद्दिहिं 5. L संयमु 6. L मां आ चरण नथी. 7. L काउ

अंतः P. L. ॥ इति गजसुकुमाल संधि : ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. सालिभद्र-संधि

[कर्ता : रत्नप्रभसूरि रचना-समय : ई. स. ११८२]

[१]

सालिगामु नामेण पसिद्धउ आसि गामु धण-धन्न-समिद्धउ
धन्ना नामि का वि विहवंगण तहिं कम्मयरी आसि अकिंचण २
तसु अहेसि संगमु इगु अंगउ लोयहं वच्छरु य चारंतउ
माइ कयाइ तेण रोएविणु मग्गिय खीरि करग्गि धरेविणु ४
तं पेक्खवि सा रोयण लग्गी प्रिय सुमरेविणु नीधण चंगी
मिलिय सइज्झी पुच्छहिं कारणु कहियइं तीए करिंति निवारणु ६
बहिणि न जाणइ बेट्टउ काइं मह कहिं तंदुल-दुद्ध-घयाइं
अप्पिय तहिं ताइं तो पायसु रद्धउ सिद्धउ तीए महारसु ८
परिवेसिवि सा थालि विसालइ पायसु पुत्तह पत्त परालइ
तसु घर-बारि तवस्सि तिगुत्तउ मासखमण-पारणइ पहुत्तउ १०

घत्ता

तउ चिंतइ संगमु गुण-गण-संगमु कटरि पुन्न-परिवाडि महु
जउ साहु महा-तउ अवसरि आगउ विहरावउ वर-खीरि सहुं ॥११

[२]

उट्ठइ थालु विसालु सु लेविणु मुणि पडिगाहइ गुण चिंतेविणु
खीरि देवि सो चिंतइ तित्तउ[1] नं सव्वंगु [2]सुहारसि सित्तउ २
कटरि कटरि अवसरु संजायउ भरिउ थालु खीरिहि मुणि आयउ
बपुरि बपुरि मुणि-सीह-पसाऊ मह दिंतह खंडियउ न भाऊ ४
माइ पुण वि परिवीसइ पायसु जिमइ जाव[3] सो धाइ महायसु
रयणि अजीरमाणि जेमणि तिणि वासिय-वमणि मरेइ तहिं दिणि ६
पत्त-दाणि तिणि आउ निबद्धउ नर-भवि उब्भड-भोग-समिद्धउ
कामधेणु-कप्पद्दुम-अग्गलु जयइ[4] सुपत्त-दाणु जय-मंगलु ८

1. L तंतउ 2. P सुहरसि 3. L जाइ सो धाइ 4. P जइइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अह रायग्गिहि आसि पसिद्धउ सत्थवाहु गोभद्दु समिद्धउ
दाण-सील-सोहग्ग-समग्गल[1] भद्दा भज्ज[2] तासु जस-उज्जल[3] १०

घत्ता

इय सा गुण-सारी पियह पियारी पुणु दुक्खिय अच्चंत मणि
जं होइ न चंगउ एक्कु वि अगउ पुज्जिज्जंति वि देव-गणि ॥११

[३]

सा सालिखेत्तु सुमिणइ कयाइ पिक्खेवि दुक्ख-पर-पारि जाइ
सुमिणत्थु समत्थइ सत्थवाहु तुह[4] होसइ पुत्तु पलब-बाहु २
ते दिवस मास तो[5] जाय तासु गउ संगमु गब्भि गुणेक्क-वासु
डोहलउ [6]सालिखेत्तोवभोगि सा माणइ अंगि [7]अरोगसोगि ४
अह जाउ बालु वर-लग्गि लग्गि जह सहस-किरणु उदयग्ग-मग्गि
गोभद्दि भद्दु पारद्धु भवणि जम्मूसवु पुत्तह चित्ति पवणि ६
गहियक्खवत्त अइहव उविंति भड भट्ट चट्ट जय जय भणंति
अइ-तारतारु वज्जंति तूर दिज्जंति चीर कप्पूर पूर ८
पत्थावि पइट्ठिउ नामु भद्दु सुमिणाणुसारि तसु सालिभद्दु
पइवासरु वड्ढइ पोढ-सुक्खु जिव नंदण-काणणि कप्परुक्खु १०

घत्ता

[8]पत्तइ तारुन्नइ नयण-मणुन्नइ मयण-रूव-रेहा-निघसु
सोहग्ग-समग्गलु सोहइ सो खलु सुरकुमारु महि-गउ अवसु ॥१२

[४]

समविहव-इब्भ-बत्तीस-कन्न परिणाविउ इब्भि सुवन्न-वन्न
सह भुंजइ ताहिं सु भूरि भोग सुचमक्किय जेहिं समग्ग लोग २
आराहिवि रम्मु जिणिंद-धम्मु कइया वि अलक्किउ[9] कालधम्मु
गोभद्दु विमाणिउ देउ जाउ निय-नाणि नियइ निय-अंगजाउ ४
पडिबंध-बद्धु आवेइ गेहि निय-सुयह सव्वु पूरइ सिणेहि
सुर-निम्मिय नव नव खज्ज-पेज्ज अमिओवम अप्पइ भक्ख-भोज ६

1. P समग्गलु 2. P भज्जु 3. P. उज्जलु 4 L तुहु 5. L ते 6. L ० खित्तेव ० 7. L आरोगिसोगि 8. P तार तरुन्नइ 9. L अलंकिय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पइवासरु कप्पड नेत्तवट्ट पडिपट्ट हीरपट्ट उय-पट्ट
मणि-कणय-कडय-कुंडल-कीरीड निसि ठवइ सालि खट्टहिं सनीड ८
सुरभोग सु भुंजइ सह-पियाहिं सुर-लोइ जेव सुरु अच्छराहिं
महमहइ अगर-कप्पूर-वासु रवि-कर [1]वि न लग्गहिं अंगि तासु १०
कइया वि रयण-कंबल सुतार तहिं आणिय वणिजारइहिं सार
बहु-लक्ख-मोल्ल सुमहग्घ भणिउ निव-सेणिगि ताहं न को वि किणिउ १२

घत्ता

राउलु मिलेविणु कंबल लेविणु ते विलक्ख निग्गय वणिय
भद्दा-घरि आविय ते मणि भाविय भणिय-मोल्लि सव्वइ किणिय ॥१३

[५]

चेल्लणाए निवो[2] तो इमं जंपिओ[3] किं न एगो[4] वि मे कंबलो[5] अप्पिओ
एग-जोगं पि मोल्लं न ते पुज्जए कज्ज-सज्ज न जं तेण किं किज्जए २
सेणिएण पुणो सायरं वाणिया एह मे देह एगो[6] ति ते भाणिया
भणहिं निव नत्थि एगो[6]वि सव्वे गया सत्थवाहीए भद्दाए अंगीकया ४
तो नरिंदेण भद्दा वि सद्दाविया आह नरनाह सव्वे वि खंडीकया
सालिभद्दस्स तब्भारियाणं तहा[7] पाय-पुंछणकए हुंति निच्चं जहा ६
सेणिओ तं सुणेऊण सोहण-जसो चिंतए कय-चमक्केण चित्तेण सो
केरिसो सालिभद्दो भवे सो वणी कामदेवोवमो एरिसो जो धणी ८
पेक्खियव्वो सुही सव्वहा सो मए महि-गओ सुर-कुमारो व्व जो सोहए
तो भणावेइ भद्द महीवासवो सालिभद्दो इहोवेउ नयणूसवो १०

घत्ता

तो[8] भद्दा अक्खिउ अइसय-सुक्खिउ सालिभद्दु आवेइ किंव
सामिउ परि भावउ मह घरि आवउ जोहारइ निरुपाय जिंव ॥११

[६]

पेसिए[9] तीए पुरिसम्मि सम्माणिए राइणा एय-अट्ठम्मि अणुजाणिए
सत्थवाहीए सव्वत्थ बद्धा तया चीण-चीरप्पवंचेहिं चंदोदया २

1. P वि लग्गहिं 2. P निवु 3. P जंपिउ 4. P एगु 5. P कंबलु अप्पिउ
6. P एगु 7. P तह 8. P ता 9. L पेसिओ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हार हीरंक-माणिक्क-चक्कंकिआ तेसिमंतेसु लंबूसगा संचिया
धवलिया भवण-भित्ती सुचित्तकिया दिन्न सुपसत्थ कत्थूरिया-हत्थया ४
चग-नवरंग-रंगावली सज्जिया[1] तदुवरिं रइय रयणावली-सत्थिया
मल्लिया-मालई-माल उम्मालिया रंभ-खभावली उब्भडा उब्भिया ६
पइ-दुवारं पि निप्पट्ट-पट्टंकिया सार-साहार-कंदल-दलालंकिया[2]
राउलाओ नियं जाव गेहं तओ रायमग्गो समग्गो वि चंगो कओ ८
नेत्तवट्टेहिं पट्टउय-पट्टेहिं सो छाइओ छडिय-घुसिणंबुणा सव्वसो
तो महीनाहु सव्वेहिं सह चल्लिओ चेल्लणाईहिं हरिसेण संपेल्लिओ १०

घत्ता

अह हत्थिहिं चडियउ जण-संघडियउ सेणिउ[3] अंतेउर-सचिवु
पेरणिय-निरंतरु पाउल-परिगरु सालिभद्द-घरि पत्तु निवु ॥११

[७]

सालिभद्द-जणणीए जणुत्तमु सेणियराउ तिविक्कम-विक्कमु
सरसु [4]सिणिद्ध सुसिद्ध सलोणउ भुंजाविउ किउ किंपि न [5]खूणउ २
तयणंतरु तंबोलु अखंडिहिं तीए दिन्नु नव-नागर-खंडिहिं
मरगय-मोत्तिय-माणिक-हीरिहिं ढोइउ ढोयणीउ वर-चीरिहिं ४
अह[6] पभणेइ नरिंदु न दीसइ सालिभद्दु सद्देसु महासइ
अच्छउ अहव सोक्खि सइं उट्ठहुं कहिं कहिं अच्छइ[7] जाइवि भेट्टहु ६
तो सा पासि पहुत्ती पुत्तहि चडिय गिहोवरि भूमिहि सत्तहि
भणइ गिहागउ सेणिउ अच्छइ एहि वच्छ तलभूमिहिं निच्छइ ८
भणइ सालि सेणिउ जं[8] कियाणउं माइ मोरलु तसु किंपि न जाणउं
तुहु जि लेसि[9] सुमहग्घु महग्घउ करउं किमाविउ हेट्ठइं सिग्घउं १०
भणइ भद्द सेणिउ न कियाणउं किंतु तुज्झ पहु मगहा-राणउ
ता उत्तरिवि वच्छ जोहारहि[10] टलइ[11] न सज्जणु जण-ववहारहि १२

घत्ता

सो एउ निसामिउ अम्ह वि सामिउ अवरु कोइ इय दुम्मणउ
घर-तलि आवेविणु वरु ढोएविणु ढोयणीउ पाइहिं पणउ ॥१३

1. L सत्थिया 2. P दलालीकया 3. L सेविउ 4. P सिणिट्ठु सुणिट्ठु 5. L कूणउ 6. L आ 7. L अच्छहिं 8. P ज 9. L लेसु 10. L जोहारिहि 11. L छलइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[८]

रयणाभरण भूरि वियरेविणु सेणिगु निय-उच्छंगि करेविणु
महुरालावि भावि बोल्लवइ पुणु तणु-फासु तासु दुक्खावइ २
मलिय माल मालइहि मिलायइ जित्र तिव तणु तसु तक्खणि जायइ
चलवलंतु सो पिक्खिवि ताव हि भणइ स पुत्तु जाउ निय-ठावहि ४
अह धारागिरि-मंदिरि पत्तहिं मज्जण-केलि-विलासु करंतहिं
[1]मुद्दा-रयणु जलंतरि पडियउ जोयंतह वि न तसु करि चडियउ ६
भद्दा-भणिय-चेडि संचारइ वावि-नीरु ठाणंतरि धारइ
बहु-रयणाभरणंतरि[2] तं ठिउ अंगारु व नरवरि ओलक्खिउ ८
कारणु चत्ताभरणहं पुच्छइ नरवइ ताहं भद्द आइक्खउ
नितु बहु नव-नव भूसण अड्डहिं पहिरिय पुण इह वाविहि छड्डहिं १०

घत्ता

तो चिंत्ति चमक्किउ निवु पुव्वक्किउं चिंतइ भद्दा-सुय-तणउं
भद्दा आपुच्छइ मंदिरि गच्छइ पालइ रज्जु पवित्त-नउ ।।११

[९]

अह सालिभद्दु चिंतेइ तत्तु हा हा हयासु हउं अइ-पमत्तु
निय-तरुण[3]-रमणि-रमणेक्क-लुद्धु निय-जीविउ निप्फलु नेमि मुद्धु २
किउ सुकिउ किं पि मइं पुव्व-जम्मि तिणि तियस-भोग उवलद्ध धम्मि
पुणु खूणु एउ एत्तिउ मुणामि ज मह वि अन्नु सपन्नु[4] सामि ४
इह पुव्व-भवज्जिय-पुन्न-पाव पवियंभहिं लंभिय[5] भूरि भाव
ता धम्मु करेवउं मइं समग्गु अपवग्गहि, सग्गहिं सरल-मग्गु ६
अह धम्मघोस-गुरु विहरमाणु तहिं पत्तु [6]अमिय-निज्झर-समाणु
सेणिउ असेस-सेणा-सणाहु जाइवि नमेइ तो मुणिहि[7]नाहु ८
अह सालिभद्दु संपत्तु तत्थु मुणिनाह-वयणु निसुणइ महत्थु
नव-नव-भवंत-संवेग-वेगु पक्खालइ माणस-मलु अणेगु १०

---

1. L भद्दा 2 L ठियउ 3. L तरुणि 4. L संपत्तु 5. L लब्भिय 6. L अचिंतिउज्झर 7. P मुणिह

गुरु कहइ सालि [1]पुच्छउ स-भाउ जिण-संजमि होइ[2] न पेस-भाउ

घत्ता

वेरग्ग-निरग्गलु आगय मंगलु भावण भाविय सुद्धमइ
पव्वज्ज-समज्जणि कय-निच्छउ मणि माइ घरागउ विन्नवइ ॥ १२

[१०]

मइं माइ निसामिउ समण-धम्मु सिरि-सूरि-पासि अच्चंत-रम्मु
तो भगुर- भोग-विरत्त-चित्तु मइं मेल्हि[3] चरउ निच्चलु चरित्तु २
अह भणइ माइ मुच्छाए छेहिं इय असणि-तुल्लु मा उल्लवेहि
मण-नयण-जीव-जीविय-समाण मह तुह विणु झत्ति पलाहि पाण ४
पर-पेम्म-परावस पेक्खि बहुय [4]टलवलिवि मरेसहिं सव्वि वहुय
तुहुं सरस-कमल-कोमल-सरीरु [5]तउ करिवि न सक्किसि नणु अधीरु ६
वय-निच्छउ पिच्छिवि तासु माइ अइ नीससेवि एरिसु भणाइ
कम-कमिण मेल्हि[6] तूलीउ ताव खर-फरुस तणू-लय होइ जाव ८
निय नियवि माइ-मोहंधयार झरहर-झरंत बहु बाह-धार
पडिवज्जइ जं जणणीए वुत्तु सो साव-सलक्खणु एक्कु पुत्तु १०
तहिं समइ सामि पुन्नेहिं तासु सिरि-वीरु पत्तु केवल[7]-विलासु

घत्ता

अह सालि-सहोयरि अइ-तुच्छोयरि सत्थवाह-धन्नय[8]-घरणि
अब्भंगु करंती अरु रोयंती आपुच्छिय तिणि तह[9]जि खणि ॥ १२

[११]

केण अवमाणिया रुयसि पाणप्पिए नावमाणं कुणइ को वि मे तइं पिए
सालिभद्दो उ दिक्खाकए सज्जए जेणमेगेग-तूलिं दिणे वज्जए २
ताव धन्नेण धन्नेण सा वुच्चए हेल्लि[10] काऊरिसो कायरो सो जए
एक्क-हेलाइ नेहं न जो कट्टए तस्स को नाम नामं पि उग्घट्टए ४
भारिया भासए जइ सि सूरो खरो ता न किं होसि अज्जेव तं जइवरो
भणइ सो एत्तियं चिय पडिक्खंतओ पिक्खियव्वोऽहुणा वयमहं लिंतओ ६

1. P पुच्छउं 2. P होह 3. L मेल्ह 4. L तलवलिवि 5. L वउ 6. L मेल्ह 7. P केवलि 8. L धन्ना 9. L तं 10. L हेलि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आह[1] सा दस-गुणं पुण वि रोयतिया नाह वज्जाहया विरह-संतत्तिया
एरिसो सामि हासो मए हा कओ छलु[2] तए लेवि सो चेव सच्चीकओ
अहह मा नाह खलु खिवसु खारं खए दूसहो दोहि विरहो अहो मह जए
एस पाणेस [3]जइ नाम तुह निच्छओ पव्वइस्स तओ हं पि किं पच्छओ
जच्च-अच्चाहिं चेईहरे अचए कुणइ सारं च [4]साहारणे संचए
नर-सहस-वाहि-सीयाए आरोहए दितु दीणाइ-दाणाणि सो सोहए
समवसरणम्मि वीरस्स पत्तो तओ दिक्खिओ देवदेवेण सकलत्तओ

घत्ता

इय सामिहिं दिक्खिउ तियसहं सक्खिउ सालिभद्दि सो जाणियउ
तो अइ चिंताविउ भणइ हियाविउ हउं तिणि अग्गल होडियउ ॥१४

[१२]

सालिभद्दो वि संवाहमव्वाहयं कुणइ जिणबिंब-संघाइ-पूयाइयं
[5]नव-नहुल्लिहण-ण्हाणाइणा सोभिओ सुरहि-हरिचंदण[6]-द्दव-समालभिओ
कडय-कुंडल-किरिडाइ-सिंगारिओ सेय-निप्पट्ट-पट्टंसुयावारिओ
रयण-कलहोय-सीया-समासीणओ असम-सिव-सोक्ख-लक्खम्मि सलीणओ
तार-तूरारवाडंबरेणं तओ सामिणो समवसरणम्मि संपत्तओ
तेण निय-पउम-हत्थेण जा दिक्खिओ अमय-सित्तो[7]व्व ता जाउ सो[8]सुक्खिओ
सालिभद्दो य धन्नो य दोवि हु मुणी पढिय-एक्कारसंगा असंगा गुणी[9]
भुवणदीवेण देवेण सद्धिं सया पुहवि विहरंति सह चेव सच्चे रया
रस-परिच्चाय-मासोववासे ठिया दो-ति-चउ-पंच-मासोववासप्पिया
पसम-सज्झाय-सज्झाण-सद्धाविही कट्ठऽणुट्ठाण-निट्ठाह निट्ठानिही
सुसिय-रस-रुहिर-वस-मंस-मज्जामया जाय ते सुक्क-कीकस-सिरा-चम्मया

घत्ता

अह वीर-जिणेसरि सहुं परमेसरि विहरमाण आणंदभरि
पत्ता [10]परिवाडिहिं कम्मह धाडिहिं तहि जि रायगिह-[11]नगर-वरि ॥१२

1. L अहंसा 2. L खलु 3. P तुह नाम जइ 4. L साहणनासंचए 5. L भवणहु॰ 6. L दंड वं 7. L तित्तो 8. L सुसिक्खिओ 9. P मुणी 10. P परिवारिंहि 11. P वर–नगरि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१३]

मासखवण-पारणइ पहुत्ता जाव जाहिं विहरणह तिगुत्ता
ताव सालि जंपिउ परमेसरि माउ-हत्थि तुहु विहरिसि सुहकरि २
[1]गोचरिय घरि घरि विहरंता दो वि ति भद्द-घरंगणि पत्ता
सा पुण सुय-दसण-उक्कंठिय बहु-परिवारिय वदण चलिय ४
तुरिय तुरिय ते सव्वि पहुच्चहिं न ति अंगणि उब्भा ओलक्खहिं
वलिय जाव पहु-पासि ति आवहिं पहि महियारी दिट्ठा तावहिं ६
पसरिय-पीइ-राय-रोमचिय पुणु पुणु पणमिय[2] बाह-पवंचिय
भरिय एग-थाली उप्पाडइ झरिय-उरोरुह दहि विहरावइ ८
जइवर सव्व-सुद्धि परिभावहिं हिउ गुण-सहिउ दहिउ पडिगाहहिं
जाइ सालि तो पुच्छइ सामिउ हउ न अज्जु माइहिं विहरावित १०
पहु पभणेइ जीए दहि दिन्नउ गय-भव-माइ तुज्झ सा निच्छउ

घत्ता

तो तसु ईहंतह सुणु पणमंतह जाइ जाईसरण-मइ
अह सा कम्मारी निय-महतारी[3] वच्छवालु अप्पउं मुणइ ॥१२

[१४]

सालिभद्दि जा तक्खणि लक्खिउ निय-भवु पुव्वु तिक्ख-दुक्खंकिउ
अवचिय-मेय-मंस-मज्जा लहु जाणिउ-निय-सरीरु अइ-नीसहु २
ता दहि पारिवि माइ जु दिन्नउ अणसणु सु कुणइ अरु मुणि धन्नउ
वीर-जिणिंदि बेवि अणुमन्निय तक्खणि पिउवणि पत्त गुणन्निय ४
पाओवगम-समाहिं थिरावहिं पर परमत्थि तित्थु मणु ठावहिं
एत्थंतरि पहु-पासि पहुत्ती सत्थवाही बहुयाहिं समित्ती ६
देव-देउ वंदेविणु पुच्छइ सालिभद्दु[4] सामिय कहिं अच्छइ
नाहु कहेइ गेहि गउ हुंतउ तुज्झ धन्नि धन्नइं सहुं संतउ ८
खणु गेहंगणि थक्कु निरुब्भउ पुणु परियाणिउ पइं न हु निब्भउ
पुव्व-जम्म-जणणी-विहरावित पहि महियारी दहि पारावित १०
गउ मसाणि खामेवि[5]सु नीसरि गुरु-गिरि-कंदराहिं जिव केसरि

1. L गोरचरिय 2. L पणमइ 3. P. महंतारी 4. L सालिसाहु 5. L मुणीसरि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

अणसणु आराहइ परभवु साहइ पाओवगम-समाहि-ठिउ
ता सोगि सुसल्लिय सा तहिं चल्लिय नियइ जेंव तरुवरु पडिउ ॥१२

[१८]

तहिं ठावि सुविसाल-भाउ भद्दाए दिट्ठु तदवत्थ-काउ
तो[1] नमिवि रुयइ सहु वहुय सत्थि[2] महु सम न अन्न अकयत्थ अत्थि २
भवणगणि पत्तु वि तुहुं न नाउ विहरावियउ नमिवि न अबल-काउ
महियारी स तुहु कयत्थ माय विहरावियउ पहि दहि जीए जाय ४
कहिं हंस-तूलि[3]-पल्लंकि सयणु कहिं कक्कर-कंटय-टंकि पडणु
कहिं कुसुम-कमल-कप्पूर-गंध कहिं कुहिय-निबिड-मडय-प्पबंध[4] ६
कहिं तरुणि-तरंगिउ [5]गीय-सद्दु कहिं सिव-समूह-फेक्कार-सद्दु
सुह-पालिय-लालिय-अंगि तेव इय दुक्खु [6]सहसि तुहु वच्छ केव ८
तुहु धन्नु धन्नु धन्नय सुपुन्नु[7] मरणंति वि मुक्कु न सालि सुन्नु
इय माइ करिवि करुण-प्पलाव घरि गय प्रओसि गुरु-दुक्ख-दाव १०
पुणु मुणि ति दो वि सुर-सेल-सिंगु जिव सुथिर धरहिं सिय-झाण-रंगु
उवसग्ग-वग्ग-संसग्ग-मग्गि न हु लहय लहसहिं लेसु वि निसग्गि १२

घत्ता

इय ते खीणाउय जाया अब्भुय दो वि देव सव्वट्ठि वर
अह तम्मि विमुक्कइ नर-भवि दुक्कइ सिज्झिस्सहिं निरु एत्थु धर ॥१३

---

1. L ता 2. L सत्थु 3. L हंसत्तलु 4. P ॰पगंध 5. L गीउ भद्दु 6. L सहिसु 7. P य पुन्नु

अंत P. L. ॥ इति शालिभद्र-महर्षि-संधिः ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. अवंतिसुकुमाल-संधि

[कर्ता : रत्नप्रभसूरि रचना-समय : ई. स. ११८२]

[१]

इह अत्थि नयरि नामिण अवंति जहिं तुंग चंग चेइय सहंति
तह ताण पुरउ सुपयट्ट नट्ट चच्चर चउक्क चउहट्ट हट्ट २
कणकणिर-कणय-किंकिणि-सएहिं मरु-लहरि-पहल्लिर-पल्लवेहिं
जा हसइ सव्वि पुर-पायडेहिं तह तज्जइ सज्जिय-धयवडेहिं ४
वर-कणय-झलक्किर-कुंभ-वार पसरंत-नेत्त-दिप्पंत-तार
अणुरत्त-चित्त जा हाव-भाव कुणइ व्व नियंती बहु-पयाव ६
घरि बारि हट्टि जहिं सेउ संति सूरिहिं पहावि पहवइ न भंति
गउरवियहिं निय निय-मग्गि लग्ग पसरिय-पहाव दंसण समग्ग ८

घत्ता

जहिं सिप्प महानइ[1] अणुदिणु पवहइ तुंग-तार-पायार-तलि[2]
तिहुयण विक्खाई स च्चिय खाई लोइय-तित्थु पसत्थु कलि ॥९

[२]

सिरि-अज्ज-सुहत्थि सुहत्थि तित्थु पत्तउ पवित्तु जंगमु जु[3] तित्थु
अविचलिय-चारु-दस-पुव्व-धारि विहरंतु अणिस्सिय-सुह-विहारि २
जीवंतसामि-पडिमाए पाय- पंकय-पणाम-सेवा-सुहाय
संघाडउ पेसिउ पुरिहिं सामि[4] वर वसहि जाहि जोयहि सुठामि[5] ४
सामंत-मंति-सत्थाह-गेहि सो मग्गइ सूरिहिं वसहि देहि
सत्थाहि अत्थि भद्दाऽभिहाण गिह दाविय तीए महप्पमाण ६
जं अज्ज-सुहत्थिहिं उवगरेइ तं लेहु तुम्हि इय वज्जरेइ
उवगरिय गरुय घर घंघसाल जइ-जुयलिहि ताहि महा-विसाल ८
तस-पाण-बीय-पसु-पंडगाइ- परिचत्त गुरुहु सा कहिय जाइ

1. L महासइ 2. L तलु 3. L जि 4. L सावि 5. L सुठावि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

तउ तेण सुसारिण सहु परिवारिण अज्ज-सुहत्थि सुहत्थि-गइ
भद्दा-घरि आवहि अणुजाणावहि वसहिं सुसवुड सुद्धमइ ॥१०

[३]

सत्थवाहि भद्दाहि तणुब्भवु तासु[1] आसि उल्लासि मणोभवु
तरुण-रमणि-मण-मोहणु अंगिहिं सार तार-[2]तारुन्न-तरंगिहिं २
कज्जल-कालु अराल सुकोमल तसु सोहग्ग-महा-सरि-सेवल
केस सीस-सरसीरुहि[3] सुंदर सोहहिं न भमरालि निरंतर ४
सुह-मयक-मडलि गंडत्थल सहहिं नाइ फालिह-दप्पण-तल
सुरगिरि-सिल-विसालु वच्छत्थलु रइवइ-सारिवट्टु न निम्मलु ६
लंकिल्लउं[4] उरकडिहिं विसालउ जिव दंभोलि-दडु सोवालउ
पाणि-पाय-पायड-पावहिं तसु नव-वियसत-सोण-पंकय-कसु ८

घत्ता

बत्तीसइ मज्जहिं रइसुह-सज्जहिं सो कीलइ जिव देउ दिवि
सत्तम-भूमी-तलि हिमगिरि-निम्मलि सवि इंदिय मोक्कल करिवि ॥९

[४]

सिरि-सुहत्थि मुणिनाहु कयाइ वि जामिणि-जामि पढमि परिभाविवि
नलिणीगुम्म-विमाणह[5] केरउ आगमु गुणइ गुणग्गलु धीरउ २
सो महु-महुर वाणि निसुणतउ किन्नरु किंकरत्तु तसु पत्तउ
तुबुरु सो वि स-कंठहि रुटूठउ[6] कुकुनस-झुणि निसुणंतउ तुट्ठउ ४
तं अवंतिसुकुमालु सुणेविणु सत्तम-भूमिभागु मिल्लेविणु
आउ छटठ-भूमिहिं आणंदिउ जाउ सुणंतउ सवणेगिंदिउ ६
जिव जिव झुणि सवणेहिं पइस्सइ तिव तिव तसु हियडउ[7] अइ वियसइ
जिव जिव आगमत्थु परिभावइ तिव तिव उत्तरितु तलि आवइ ८

घत्ता

जायउ जाईसरु सुमरइ सुंदरु नलिणीगुम्म-विमाण-सुहु
नर-भोग-विरत्तउ जाउ निरुत्तउ तं जाणइ सउ गुत्ति दुहु ॥९

1. P तीसु 2. L सारंग-तरंगिहि 3. P सरसिरुह 4 B लंकिल्लउ 5. L विमाणिहि 6. L रुद्धउ 7. P. L. °डउं तणु विय°

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[५]

स लहु पहु-पाय-पासम्मि पत्तो तओ पणमिउं पंजली पुच्छए अग्गओ
पयडमेव सरूवं परूवत्तया नलिणिगुम्माउ तुब्भे वि किं पत्तया २
भणइ सूरी विमाणुत्तमाओ तओ मणुय-जम्मम्मि नेमम्मि अहमागओ
तह वि जाईसरो सरसि त जारिस भुणउ अहयं पि-सुत्ताउ त तारिसं ४
तहिमहं गंतुमच्चतमुक्कठिओ पहु-पहेण किणा जामि जंपसु इओ
गम्मए तम्मि थामम्मि सग्म महा- सत्त-सिक्खाए दिक्खाए न हु अन्नहा ६
देह दिक्ख च सिक्ख च सपइ महं सामि जह जामि काऊण तं अवितहं
सत्थवाहीए ऽणुन्ना मणुन्ना महं नत्थि तो वच्छ दिच्छामि त तुह कहं ८
कालखेवक्खमो नाह नाह तओ पव्वइस्सामि सयमेव इय निच्छओ

घत्ता

इय निच्छउ जाणिवि गुणु परियाणिवि होउ[1] सयं मा गहिय-वओ
तो दिक्खा दिन्नी तेण[2] पवन्नी जइ जायउ[3] साहस-निलओ ।।१०

[६]

वच्छ पत्तं पवित्त चरित्तं तए पालियव्वं चिरं कालमेयं जए
सग्ग-अपवग्ग-संसग्ग-ससाहणं होइ किज्जतमेवं इमं सोहणं २
नमिय नव-साहुणा वुत्तमुत्ताणयं सामि साहेमि अज्जेव अप्पाणयं
नलिणिगुम्मे विमाणम्मि भोगसुगो सपय पट्ठिओ मुक्कमणुयाउगो ४
अह रिसि गुरु-सगासाउ सो निग्गओ बोरि-कथारि-कंटी-कुडंगं गओ
छिन्न-साहि व्व साहीण-साहस-रसो निवडिओ तत्थ वित्थरिय-सुत्थिय-जसो ६
रुहिर-गधेण पायाण पत्ता सिवा पिल्लगेहिं अणेगेहिं सद्धिं सिवा
खाइ पाएहिं[4] सा एगओ तं रिसिं अन्नओ पेल्लगाइं [5]पुणो तं निसिं ८
पढम-जामम्मि जा जाणु सो खद्धओ दुइय-जामम्मि जा ऊरुगाणग्गओ
तइय-जामे वि जा नाहि ता भक्खिओ पत्तु पचत्तमेत्थंतरे थिर-हिओ १०

घत्ता

भावण भावितउ पंडि सहंतउ कुप्पइ कासु वि नो उवरि
नव-पुन्निहि पुन्नउ खणि उप्पन्नउ नलिणिगुम्मि विमाण-वरि ।।११

1. L होइ 2. L तो न 3. P जायवु 4. P पायाहिं 5. L घणो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[७]

विहिओवओगु जा नियइ नाणि ता निय-सरीरु पेक्खइ मसाणि
निसि अद्ध-खद्धु [1]सूया-सियालि कथारि-कुडगहि अतरालि २
कत्थूरी-कुकुम-कुसुम-कमल- संवलिय वारि वरिसेइ विमल
आवेविणु नियय-सरीर-उवरि पुणु तहि जि जाइ निय ठावि पवरि ४
जा तरल-सुतिक्ख-कडक्ख-लक्ख वियसिय-सिरीस-सुकुमार दक्ख
थिर-थोर-थणत्थल-वित्थराहि तहि रमइ ताहि सह अच्छराहि ६
वर-पारियाय-मंजरि-जुएहि हरियंदण-घुसिण-विलेवणेहि
पंचप्पयार उवभोग भोग उवभुंजइ भूरि अरोग-सोग ८

घत्ता

इय तासु सुचित्तहि विसयासत्तहि नलिणीगुम्मि विमाणि तहि
नंदीसरि जंतहि महिम करंतहि वरिस असंख अइक्कमहि ॥९

[८]

वासभवणि अह नयण-विसालिहि जोयहि मग्गु भज्ज सुकुमालिहि
जामिणि-जामि वि जाव न आवइ ताव [2]ताहं मणु जोयण धावइ २
घर-अब्भिंतरि जोइउ जावहि दिट्ठु न हियइ धसक्किय[3] तावहि
कहहिं[4] सव्वि सासुयहि रुयंतिय न नियहुं नाहु माइ जोयंतिय ४
सत्थवाहि सयमेव निरिक्खइ घरि बाहिरि आरामि न पेक्खइ
मिलिउ सु महिल-सत्थु ता रोयइ परियणु[5] सयणु सुयणु सउ सोयइ ६
सूरि सुहत्थिं ताव हक्कारिय सत्थवाहि रोयंत निवारिय
रति-वित्तु वुत्तंतु सु वुत्तउ सत्थवाहि तो जंपिउ जुत्तउ ८

घत्ता

सयमेव विरत्तउ लिंगु लियंतउ करिवि लोउ सयमेव सिरि
जइ तुब्भिहि दिक्खउ किमजुत्तउ किउ इय [6]गहि किज्जइ काइं किरि ॥९

1. L भसुया 2. P ताहं गणु जो॰ 3. P धसक्किउ 4. L कहिहिं 5. L परियणु सुयणु सयउ नउ सोयउ। 6. B ग्रहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[९]

पुणु भणसु सामि सा कत्थ अत्थि वंदामि वीरु[1] जिव मत्त हत्थि
गुरु दिन्नु [2]दिव्व-पुव्वोवओगु परिकहइ किं पि निक्कंप-जोगु
तो सत्थवाहि वहु-सत्थ-सहिय नव-साहु-घाय-भूयाए चलिय
जोएइ जाव ति मसाण-देस गुरु-सोग-वेग-वड्ढिय-किलेस
ता स-सुय भसुय सो अद्ध-खद्धु कंथारि-कुडं मज्झि लुद्धु
अह रुयइ तार-पोक्कार-फार परिवार-जुत्त बहु-बाह-धार
हा वच्छ वच्छ-वच्छल छइल्ल पइं कियउ किमेरिसु[3] गुणि पहिल्ल
हउं जेव पडिय एरिसि अणत्थि संसारि नारि तिव अन्न नत्थि
हा हियय-सच्छ सुचरित्त-सूर मह पाडियऽवट्ट कयंत कूर
मइं सव्वहा वि वहुयाहिं अहव किउ अविणउ कोइ न तुज्झु कहव

घत्ता

इय गुण समरेविणु चिरु रोएविणु पुज्जइ पुज्जिय-पुव्वु[4] पुणु
कालागुरु-चंदणि तित्थु जि सा वणि सक्कारावइ साहु-तणु ॥११

[१०]

सत्थवाहि वहुयाहिं समन्निय सिप्प-महानइ-तीरि[5] पवन्निय
नयण-नीरु नीरंधु निरग्गलु जिव तिव तासु देइ अंजलि-जलु
सुय-विओग-सोगग्गि-पलित्तिय[6] स-घरि खलंत पडंती पत्तिय
गुरु-अक्कंद-सद्द-सम्मद्दिण भवणु भरंति व भणिय सुहत्थिण
धम्मसीलि सीलेसि किमग्गलु सोग-वेगु सविवेग अमंगलु
मुयउ कोइ किं जीवइ सोगिण अरु तणु-पीड पवज्जइ रोगिण
धम्मु रम्मु भव-वाहि-महोसहु तह [7]सुमंतु सोगाइ-कुदोसहु
बि-पहर-दिक्खधम्मि तुह जायउ नलिणि-विमाणि देउ सो जायउ

घत्ता

इय एउ सुणंती भवहि विरत्ती सत्थवाहि सुपसत्थ-मइ
वहुयाहिं समन्निय घरि निव्वन्निय दिक्ख लेइ अचिरेण सइ ॥९

1. L धीरु 2. L दिन्नु तत्थ पुव्वो० 3. L केमेरिसु गुण प० 4 L पुत्तु
5. P तीरु 6. P पलत्तिय 7. L समत्थु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[११]

वहुयाहं एग गुरु-हार आसि न स दिक्खिय थक्किय गेहवासि
निय-अवसरि जायउ तासु तणउ जिव हीरउ रोहण-खाणि-तणउ २
पइवासरु वड्ढइ सो सुबालु जिव वण-निगुंजि सहयार[1]-सालु
निसुणिवि कयाइ निय-ताय-चरिउ अइ चित्ति चमक्किउ हरिस-भरिउ ४
तहिं वण-पएसि निय-ताय-मुत्ति सु करावइ ठावइ सुह-मुहुत्ति
जिण-वेसिण पाओवगमि ठाइ सहुं[2] चेल्लुगेहिं सिव जेव खाइ ६
तसु उप्परि देउलु चंग-सिंगु स-जणेर-नेहिं कारइ सु तुंगु
नेवज्ज-पुज्ज-पेच्छण-छणाइ तहिं सव्वु करावइ निच्चु जाइ ८

घत्ता

कालक्कमि जायउ सो विक्खायउ तित्थु तित्थु लोयहं[3] तणउ
महकालु कहिज्जइ अज्ज वि विज्जइ मुणि-सियालि-रूवग-जूयउ ॥९

1. P ॰र-रसालु 2. L चेल्लिगेहिं 3. L लोहय
अंत : P. L. ॥ इत्यवंतिसुकुमाल-संधिः ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. मयणरेहा-संधि

[कर्ता : जिनप्रभसूरि रचना-समय : ई. स. १२४१]

ध्रुवक

निरुवम-नाण-निहाणो पसम-पहाणो विवेय-संनिहाणो
दुग्गइ-दार-पिहाणो जिण-धम्मो जयइ सुह-कम्मो ॥
सुमरिवि जिण-सासणु सुह-निहि-सासणु सिरि-नमि-महरिसि मणि धरिउ
पभणिसु संखेविहिं तमविक्खेविहिं मयणरेह-महासइ-चरिउ ॥ २

[१]

भो भविय सुणउ भरहद्ध-खिति जं वित्तु सुदंसणपुरि पवित्ति
मणिरह भिहाणु तहिं अत्थि राउ जुवराउ लहुउ जुगबाहु भाउ २
तसु भज्ज महासइ मयणरेह वर-रूव-सीलि जगि लद्ध-रेह
चदजसु नामि तहं सुउ पवित्तु अन्नाय-अविहि-वल्ली-लवित्तु ४
सा चंद-सुमिण-सूइउ सुगब्भु पुण धरइ पवर-पुन्निहिं पगब्भु
जिण-पूअण-आगम-सवण-इच्छ सा पूरिय पइणा बहु-विहिच्छ ६
इत्थंतरि मणिरहि मयणरेह भोगत्थिण पत्थिय भव-अणेह
सा भणइ नरीसर तुह न जुत्तु एयारिसु वुत्तुं पाव-पत्तु ८
तसु हूउ पाविट्ठह दुट्ठ-भाउ जं मारउं लहु जुगबाहु भाउ
उज्जाण-ठीउ भज्जा-समेउ असिणा हउ निग्घिणि वर-विवेउ १०
हाहारवु उट्ठिउ तहिं महंतु अह मयणरेण बोहेइ कंतु
पसमाइ-गुणिहिं सम्मत्तु देइ सो देस-विरइ भावेण लेइ १२
खामावित्रि सयल वि जीव-जाइ परमिट्ठि-सरंतह आउ जाइ
सो हूयउ पंचम देव-लोइ इंदह सामाणिउ बंभ-लोइ १४

घत्ता

मयणरेहए एउ जाणिउ मणु समि आणिउ तसु ठाणह नीहरइ लहु
अडवी-कयली-हरि पसरियकरि-हरि पसवइ सुउ पुन्नेहिं सहु ॥ १५

[२]

तउ अंग-पखालणि सरवरम्मि गहिया जल-करिहिं करेण तम्मि
विज्जाहरि धरिया तक्खणेण वेयड्ढि नीय गिहिणी मणेण २

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तउ भणियउ खयरु महासईइ मह पुत्तु उपन्नु महाडवीइ
सो तन्ह-छुहाए पाण-चाउ मा कुणउ तमाणह काणणाउ ४
महिलाहिव पउमरहेण नीउ निय-भवणि वधारइ सुउ भणीउ
पन्नत्ति-विज्ज मह कहिउ एउ ता सुयणु म काहिसि चित्त-खेउ ६
अनु सुणि वेयड्ढे खयर-राउ मणिचूड सुसेविय-वीयराउ
निय-पुत्तु पइट्ठिउ नियय-रज्जि सो अप्पणि लग्गउ परम-कज्जि ८
सो भयवं पच्छिम-वासरम्मि पत्तउ नंदीसर-तित्थि रम्मि
तसु सुउ हुं मणिपह-नामधेउ ता मइं पइ मन्नसु तुहु अखेउ १०
तो भणइ महासइ गुणकरम्मि वंदावि देव नदीसरम्मि
तउ तिणि संतोसिहिं तत्थ नीय वंदइ चेईहर सुय-विणीय १२
ता वदिय दोहि वि सुगुरुराउ गुरु-देसणि नट्ठउ दुट्ठ-भाउ
तो नमइ खयरु भइणी भणित्तु त खमह महासइ मइ जु वुत्तु १४

घत्ता

अह तत्थ महासइ हूयइ संसइ पुच्छइ निय-पुत्तह चरिउ
तीसे मणु तोसइ मुणिपहु भासइ सुणि निय-मणु निच्चलु धरिउ ॥ १५

[३]

पुक्खलवइ-विजय विदेहवासि मणितोरण-पुरु वेयड्ढि आसि
चक्कीसर अमियजसस्स पुत्तु पुप्फसिहो रयणसिहो य वुत्तु २
तो दुन्नि वि चुलसी-पुव्व-लक्ख काऊण रज्जु भव-तरण-दक्ख
चारण-मुणि-गाहिय दुविह-सिक्ख कय-संजम सोलस-पुव्व-लक्ख ४
तो अच्चुय-इंद समाण देव उप्पन्ना पुन्निहिं निरवलेव
तउ चविओ धायइखंड-खित्ति जिणराय-पाय-पंकय-पवित्ति ६
हरिसेण हरिहि सुय परममाण इगु सागरदेव भिहाणु ताण
अनु सागरदत्तु ति बे वि दक्ख दढ-सुव्वय जिणवर-दिन्न-दिक्ख ८
विज्जू-निवाय तइए दिणम्मि महसुक्कि उप्पन्ना सुह-निहिम्मि
सत्तरस अयराउय तत्थ ठीय सुर-सुक्खु अणोवमु अणुहवीय १०
तहं पढमु चविउ मिहिलापुरीइ मल्ली-नमि-जम्मि सुहंकरीइ
जयसेण-राय-वणमाल-पुत्तु उप्पन्नउ पउमरहु त्ति वुत्तु १२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तसु देवि पुप्फमालाभिहाण अंतेउरीण गुण-गण-पहाण
सो हुउ कमेण य पवर-राउ बीओ वि चविउ तुह पुत्तु जाउ १४
विवरीय-सिक्ख-तुरएण हरिउ सो राउ फिरइ अडवीइ तुरिउ
पिक्खेविणु तुह सुउ अइ-सुचंगु नेयइ निय-नयरिं हरिसियंगु १६

घत्ता

इय कय-वद्धावणु तोसिय-पुरजणु नमिय नराहिव सयल जसु
निरुवम-गुण-गामू नमि किय नामू वद्धइ वद्धिय-विमल-जसु ॥१७

[४]

इत्थंतरि सग्गह वर-विमाणु तसु मज्झि देउ इंदह समाणु
अवयरिउ विमल-गुण-गणह गेह ति-पयाहिणि पणमिय मयणरेह २
अह पच्छा वदइ मुणिवरिंदु तउ चित्ति चमक्किउ खेयरिंदु
सदेहावणयणु तियसि किउ निय-चरिउ कहिउ अक्खेवणीउ ४
तउ तोसिउ भावइ खयरराउ बपु बपु रि अहो धम्मह पभाउ
जीवहं तावं चिय होइ दुक्खु जावह न लद्धु जिण-धम्म-लक्खु ६
धम्मगुरु भणिय तियसेण वुत्त किमहं करेमि आगम-निउत्त
तउ एउ मयणरेहाइ वुत्तु मिहिलापुरीइ मह दंसि पुत्तु ८
तहिं वदिय विहिणा तित्थसार अनु गुरुणी पणमिय सोवयार
तद्देसण-सवणिहिं गय-सिणेह पव्वज्ज पव्वज्जइ मयणरेह १०
कय-सुव्वय-नामा तवु तवेइ सो सुरु सकप्पि सुहु अणुहवेइ
अह पिउणा नमि परिणावियाउ अट्ठोत्तरु सहसु सुबालियाउ १२
अह रन्ना जाणि विभव असारु निय-पइ पइठाविउ नमि-कुमारु
अप्पणि वउ पालिउ निरइयारु केवल-सिरि-सोहिउ सिद्ध-सारु १४
अह नमी नराहिवु हूउ पयंडु तसु हत्थि-रयणु आलाण-दंडु
पाडेविणु बहु पडिकार-वग्गु गुरु-वेगि सुदसणपुरि विलग्गु १६

घत्ता

सुचंदजसि नराहिवि बहुविहि वाहिवि वसि किउ निसंकिउ धरिउ
तउ नमि तसु कारणि बहु-परिवारि णि जाइउ पुर रोहइ तुरिउ ॥१७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[९]

तउ मयणरेह गुरुणी-मईइ
पडिबोहिय दो वि महासईइ

निय-भाय-समप्पिय-सयल-रज्जु
चंदजसु राउ साहइ स-कज्जु २

नमि दो वि रज्ज पालइ नएण
वद्धइ धणेण नायागएण

तसु अन्नयाइ छम्मास दाहु
निय-देहि हूउ विज्जहं अगाहु ४

अंतेउरीउ चंदणु घसंति
वलयज्झुणि सवणा पीडयंति

इक्किक्कु धरिउ तासु वि मुयंति
निवु पुच्छइ किं न हु झणहणंति ६

पुहईसर देवी अवणियाइं
इह दूहवंति बहु मेलियाइं

जइ कह वि एह रोगाउ मुक्कु
ता हं गहेसु संजमु अचुक्कु ८

नरवइ इमाइ चिंताइ सुत्तु
मेरुम्मि सुविण-वियणा-विउत्तु

कन्नाडि-कडक्खिहिं नेय खुद्धु
चोडीणं चाडुयहिं न रुद्धु १०

लाडी-लडहत्तिहिं नेव भिन्नु
गउडी-गीयाईहिं न य निसन्नु

निय-पुत्तु पइट्ठिउ नियय-रज्जि
अप्पणि पहु लग्गउ मुक्ख-कज्जि १२

अह चित्ति चमक्किउ सक्कु एइ
दिय-रूवि निउण पुच्छा करेइ

नमि निम्ममत्तु सयणाइएसु
पच्चक्ख हूउ थुणई सुरेसु १४

पइं निज्जिय दुज्जय भड कसाय
पइ सामि महिय विसय-पिसाय

को तिहुयणि तुह समु समण-सीह
पत्तेय-बुद्ध-पइ लद्ध-लीह १६

ति-पयाहिणाहिं नमिऊण सक्कु
सोहम्मि जाइ मुणिगुण-अमुक्कु

रायरिसि बिहप्फइ जिम सुवक्कु
पुण जगगुरु वक्कत्थ मणमुक्कु १८

गंगा-पवाहु जिव सुमण इट्ठु
परिवंकउ जडमउ नेव दिट्ठु

अप्पप्पणकंतिहिं जुअ अणेय
गोवइसंगिइं पुण विगय-तेय २०

तं पहु पहाइ परिवड्ढमाणु
हूअउ पुण अणुवम-गुण-निहाणु

विहरंतु पत्तु पुरि खिइपइट्ठि
पत्तेयबुद्ध तहिं हूअ गोट्ठि २२

करकंडु-दुमुह-नग्गइ-पसिद्ध
चउरो वि एग-समएण सिद्ध

आवस्सगाइ-गंथिहिं जु वुत्तु
तह इत्थ कहिउ भव्वह निरुत्तु २४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

इय वयमिय कडविहिं विरइउ भाविहिं मयणरेह-नमिरिसि-चरिउ
जिणपहऽणुसरंतहं गुणत-सुणंतहं निहणउ भवियहं तमु तुरिउ।।२५

*

मज्झे महासईणं पढमा रेहा उ मयणरेहाए
जीसे सील-सुवन्नं निन्नु(व्व)डियं वसण-कसवट्टे ॥२६

एसा महासईए संधी संधीव संजम-निवस्स
जं नमि-निवरिसिणा सह सक्करा खीर-संजोगो ॥२७

बारह सत्ताणउए वरिसे, आसोअ-सुद्ध-छट्ठीए
सिरि-संघ-पत्थणाए, एयं लिहियं सुआभिहियं ॥२८

अंत : इति मयणरेहासंधि समाप्ता ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७. अणाहि-संधि

[कर्ता : जिनप्रभसूरि रचनासमय : ई. स. १२२५ थी १२७५ वच्चे]

ध्रुवक

जस्मज्जवि माहप्पा, परमप्पा पाणिणो लहुं हुंति
तं तित्थं सुपसत्थं, जयइ जए वीर-जिणपहुणो ॥१

विसएहिं विनाडिउ, कसाय-जगडिउ, हा अप्पाहु तिहुयणु भमइ
जो अप्पं जाणइ, सम-सुहु माणइ, अप्पारामि सु अभिरमइ ॥२

[१]

रायगिहिं नयरि सेणीउ राउ गुरुभत्ति-निवेसिय-वीयराउ
सो अन्न-दिवसि उज्जाणि पत्तु मुणि पिक्खवि पणमइ नमिय-गत्तु २
वपु रूवु वन्नु लावन्न-पुन्नु किं मुणि नवजुव्वणि सरसि रन्नु
नरराय अहं बहुविह अणाहु मुणि भोग, माणि हउं तुज्झ नाहु ४
तं अप्पणो वि नरवइ अणाहु अन्नेसि होसि किम भणइ साहु
किं मइं न हु जाणइ नरवरिंदु जं एरिसु पभणइ मुणिवरिंदु ६
गय-हय-रह-जोह-सणाहु रज्जु संपज्जइ मण-वछीउ कज्जु
मुणि भणइ पुण वि जगु सउ अणाहु असहाइउ भमडइ भवु अगाहु ८
कोसंबीनयरीइ जं जि वित्तु, तं सुणि मगहाहिव एग-चित्तु
तहिं अत्थि पिया मह सुह-विहारु सुकलत्त-पुत्त-सुहि-सयण-सारु १०
पढमे वयम्मि मह रोग रोग उप्पन्ना विज्जह मुक्क जोग
पिय-माइ-भाय-भइणी य सयण विलवइं विविहाइ दीण-वयण १२
मह रोग-पीड इक्कु वि न लेइ पुण पासि बइट्ठउ रुणझुणेइ
जो इक्कु वि रोग निराकरेइ मह जणउ तस्स धणु भूरि देइ १४
न हु केणइ फेडिय पीड मज्झ इय वेअण सव्वहं हूअ असज्झ
सुकलत्त-पुत्त-परियण-सुमित्त न हु मंत-तंत तसु विढत्त चित्त १६
छुह-तन्ह-पराभव-दुह-विचित्ति हा हा अणाह संसार-गुत्ति
देविंद-विंद-वंदिय-जिणिंद पय मुत्तु नाहु न हवइ नरिंद १८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विविहाहि-वाहि-विनडियह मरणु धम्महं विणु होइ न कोइ सरणु
धण-सयण-रूव-जोवण-सणाहु इय मुणउं नराहिव मं अणाहु २०

घत्ता

एवं मइं जाणिउ, मणु समि आणिउ, संग-विमुक्कु विवेअ-जुउ ।
पडिवज्जिउ संजमु, नो-इंदिय-दमु तउ अप्प-परह वि नाहु ल्हउ ॥२१

[२]

अणाहया अवर वि जाण राय जह भणेइ जिणाहिव वीयराय
पव्वज्ज पवज्जिय जेण वज्ज तव-चरण-करण न हवंति सज्ज २
मोहंधयार-निउरंब-छूढ जड-जोगि भवाडवि-मग्ग-मूढ
दुह-बंध-बद्ध तिहुअणु भमंति न हु रोग-दोसवसि वीसमंति ४
तिहिं दंडिहिं दंडिय अप्पु जाहं तिहिं सल्लिहिं सल्लिय सुहु न ताहं
ति-विराहणाहिं बोहिं हणंति तिग्गारव-गुरु भवु उवचिणंति ६
किं कुणइ नाणु तवु झाणु दाणु जे लिंति अणेसणु भत्तपाणु
अह कोय-कडाइय वसहिं वत्थ तह होइ तह च्चिय भव अवत्थ ८
जे आगम-सत्थ-निउत्त सत्थ तस्सऽन्नह करणि अणत्थ सत्थ
जे सुत्त-बज्झ-देसण कुणंति अप्पं पि अप्पु न हु ते मुणंति १०
बहु-पाव-पवंचिहिं वंचियाण किं कुणइ ताण जिणनाह-आण
अइ वल्लह वरि मुंचंति पाण न कहिंचि पवज्जइं जिणह आण १२
जे विसय-कसाय-पमाय-पत्त न हु मोह-महन्नव-पार-पत्त
अप्पाभिप्पायहिं संचरंति अप्पणमवि परमवि कुगइं निंति १४
अणाहया ताहं वि दिक्खियाण सया वि सुगुरूहिं असिक्खियाण
जे माइठाणऽणुट्ठाण ठंति वीरिय-आयारि न उज्जमंति १६
मोह-निव-नडिय अणाह हुंति मगहाहिव ते सवि कुगइं जंति
एवं अणाह जिय सव्व-लोइ सिरि-जिणवरिंद-आणा-विओइ १८
जं जिणवरिंद-आणा पहाण सग्गापवग्ग-गइ सुह-निहाण
इय मुणिय नराहिव भव-अवाय सिरि-वीयराय अणुसरसु पाय २०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अह विहसिउ सेणिउ नरवरिंदु तं सव्वु सच्चु जइ कहइ मुणिंदु
ति-पयाहिण वंदिउ भाव-जुत्तु संतेउरु निवु निय-ठाण पत्तु २२
मुणि निरइयार-चारित्तजुत्तु विहरेइ महीयलि सारसत्तु
इय भवह भावु जाणिउ निरुत्तु भो भविय कुणउ अप्पं पवित्तु २४

घत्ता

एवं संखेविहिं विहि-विक्खेविहिं मुणि-सेणिअ उल्लाव-जुउ
संबंधु सुअक्खिउ जं किंचि वि लक्खिउ महनिग्गंथज्झयण-सुउ ॥२५

*

चारु-चउ-सरण-गमणो दाणाइ-सुधम्म-पत्त-पाहेओ ।
सीलंगरहारूढो जिणपह-पहिओ सया सुहिओ ॥२६

अंतः ॥ अनाथि-संधि समत्ता ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. जीवाणुसट्ठि-संधि

[कर्ता : जिनप्रभसूरि रचना-समय : ई. स. १२२५ थी १२७५ वच्चे]

ध्रुवक

जस्स पभावेणऽज्जवि तव-सिरि-समलंकिया जिया हुंति ।
सो निच्चं पि अणग्घो संघो भट्टारगो जयइ ॥१॥
मोहारिहिं जगडिय विसयहिं विनडिय तिक्ख-दुक्ख-खंडियहं चिरु
संसार-विरत्तहं, पसमिय-चित्तहं सत्तहं देमिऽणुसट्ठि निरु ॥२

[१]

अणाइ-निग्गोअ-जंतूण मज्जंगओ एगतणुऽणंतजंतूहिं सहसंगओ
समग्ग-उववाय-विणिवाय-ऊसासओ समग्ग-आहार-नीहार-नीसासओ २
तयणु ववहार-रासम्मि जिउ आविओ तम्मि रे जीव निच्चं पि नच्चाविओ
मुत्त पत्तेय-तरु-काय कम्मि हिंरिओ पुढवि अपु तेउ वाउऽणंतकाए ठिओ ४
अवि य नीराइ-सत्थेहिं संताविओ दुट्ठ-कम्मट्ठ-गंठीहिं संदाविओ
जीव खुड्डाग-मरणेण हा निट्ठिओ अहह एगंत-भवियव्वया-हिट्ठिओ ६
सुहुम-कायाउ तउ बायरे चड्डिओ तिक्ख-दुक्खेहिं लक्खेहिं जिउ खंडिओ
तत्थ अवसप्पिणुसप्पिणऽस्संखया चउसु काएसु उस्सग्गओ अक्खया ८
कवणु तं दुक्खु जं जीव न हु पावियं कम्म-परिणाम-भव-भावे-संभावियं
बेइंदि-तेइंदि-चउरिंदि-विगलिंदिए काल संखेज्जओ कायठिइ निंदिए १०
भाव सव्वे वि सुह-असुह मुह वियसिया सव्व जीवेहिं हाऽणंतया फरिसिया
नत्थि तं ठाणु लोए न जहिं हिंडिओ राग-दोसाइ-सुहडेहिं हा दंडिओ १२
नरय-तिरियम्मि मणुअम्मि किह आणिओ जणणि-जणयाइ-सयणेहिं संदाणिओ
इंदियग्गाम अभिराम मन्नंतओ भीम-भव-रन्नि भमडंतु न य संतओ १४
चरिउ विवरिउ जीवस्स इह दीसए जेण सुह तन्न दुहु जेण तं गवेसए
नाण-निहि निय-गिहे मुत्त बहि भमडए तत्थ जिउ जाइ दुहु जत्थ सिरि निवडए १६
जेसु ठाणेसु जिउ णंतसुहु पावए मुत्त तं ठाणु अप्पं दढं दावए
जेण सम्मेण कम्मारि लहु लुंटए मुत्त तं मूढु हा विसय-विसु घुंटए १८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कह वि मणुआइ-सामग्गियं पत्तओ तह वि विसयामिसे गाढ अणुरत्तओ
लक्ख-चुलसीइ जोणीइ पुण भामिओ मोहराएण रे जीव अस्सासिओ २०
पुग्गलाणं परावत्तयाऽणंया हिंडिया जीव न हु कह वि उवसंतया
देव-गुरु-धम्मु न कयाइ उवलद्धओ तेण एओ जीवु कम्मेहिं संरुद्धओ २२
सुक्खु पच्चक्खु दुक्खं पि मेरूवमं अहह अदिट्ठु पुण मन्नए तिणसमं
विरस संसार-दुच्चिट्ठियं हिट्ठयं बपु रि जीवाण भव-भमणु हा निट्ठियं २४
कह वि पइं पत्त सामग्गियं मग्गियं हेव रे जीव तं कुणसु सुहमग्गियं
चारगागार-संसार-सुहमुज्झउं जुत्त ते सुहय पियमप्पियं उज्झउं २६
सयल-लच्छीइ लद्धाइ किं आगयं अह सकम्मेहिं दुत्थेण किं ते गयं
राग-दोसे य ते दोवि जिय मिल्हिउं जत्तु संतोस-निव-पासि तुह मल्हिउं २८
जत्थ सुपसत्थ निग्गंथ-मत्थय-मणी जयइ जंबू-गणी भुवण-चिंतामणी
एवमन्ने वि सिरि-थूलभद्दाइणो एय सिरि-वयरमुणि-सामि सुयनाणिणो ३०

घत्ता

इय विविह-पयारिहिं विहि-अणुसारिहिं भविहिं जिणपहमणुसरहु
सुत्तेण य पवरिहिं आणा-सुतरिहिं भवियण भव-सायरु तरहु ॥३१

अंत :- ॥ जीवाणुसट्ठि-संधि समत्ता ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९. नमयासुंदरि-संधि

[कर्ता : जिनप्रभसूरि रचना-समय : ई. स. १२७२]

ध्रुवक

अज्ज वि जस्स पहावो वियलिय-पावोय अखलिय-पयावो ।
तं वद्धमाण-तित्थं नंदउ भव-जलहि-बोहित्थं ॥१

*

पणमिवि पणइंदह वीर-जिणिंदह चरण-कमलु सिव-लच्छि-कुलु ।
सिरि-नमया-सुंदरि गुण-जल-सुरसरि किंपि थुणिवि लिउं जम्म-फलु ॥२

[१]

सिरि-वद्धमाण-पुरु अत्थि नयरु तहिं संपइ नरवइ धम्म-पवरु
तहिं वसइ सु-सावगु उसहसेणु अणुदिणु जसु मणि जिणनाह-वयणु २
तब्भज्ज-वीरमइ-कुक्खि जाय दो पवर पुत्त तह इक्क धूअ
सहदेव-वीरदासाभिहाण रिसिदत्त पुत्ति गुण-गण-पहाण ४
न हु देइ सिट्ठि मिच्छत्तिआण[1] रिसिदत्त इब्भ-पुत्ताइयाण
अह कूवबंद-नयरागएण परिणिअ कवड-वर-सावएण ६
वणिउत्त-रुद्दत्ताभिहेण तहिं पत्त चत्त-धम्मा कमेण
अम्मा-पिईहिं परिवज्जिआइ हुउ पुत्तु महेसरदत्तु ताइ ८
पुरि वद्धमाणि सहदेव-घरणि सुंदरि नमया-नइ-न्हाण-करणि
उपन्नु[2] मणो[र] हु पिअयमेण गंतूण तत्थ पूरिउ[3] कमेण १०
गब्भाणुभावि तहिं [4]रहिउ चित्तु सह-देविहिं नमयापुरु स-वित्तु
तहिं कारिउ जिण-चेइउ[5] पवित्तु मिच्छत्त-राय-जयपत्तु पत्तु १२
अह नमयासुंदरि सुंदरीइ धूआ पसूअ गुण-सुंदरीइ[6]
लावन्न-रूव-निरुपम-कलाहिं तहिं वद्धइ नमया निम्मलाहिं १४
[7]पिअ-माइ-पमुहु सयलु वि कुडुंबु आणाविउ तहिं पुरि निव्विलम्बु
उच्छाहिउ रिसिदत्ताइ पुत्तु ववसाइ महेसरदत्तु पत्तु १६

अशुद्ध मूल-पाठः 1. मिच्छत्तीआण 2. उपंन्नु 3. पूरीउ 4. रहीउ 5. चेईउ 6. सुंदरीअ 7. पीअ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आवज्जिउ[1] गुणिहिं सु-सावयत्तु पडिवज्जिउ[2] रंजिउ ताहं चित्तु
नमया परिणीअ महेसरेण तउ कूववंदि पहुतउ महेण १८
रिसिदत्त तीइ कय एग-चित्त[3] जिणनाह-धम्मि सासुरय-जुत्त
आणंदिउ सयलु वि नयर-लोगु नम्मय-गुणेहिं तह सयण-वग्गु २०
ओलोअणि अह निअ[4]-मुहु पमत्त दप्पणि पिक्खिवि वक्खित्त-चित्त
तंबोल-पिक्क तिणि मुक्क जाव अह जंतह मुणि-सिरि पडिअ[5] ताव २२
मुणि जंपइ 'कुणइ जि मुणिवराण आसायण होइ विओगु ताण'
इअ[6] सुणिवि झत्ति उवरिम-खणाउ उत्तरिवि साहु खामइ पमाउ २४
सा नमिवि भणइ 'तुम्हि खम-निहाण पहणंत-थुणंतह दय-पहाण
सावस्स अणुग्गहु मह करेह अवराहु एक्कु मुणिवर! खमेह' २६
मुणि भणइ 'भावि पिययम-विओगु[7] निअ-[8]निबड-पुव्व-कम्मिण अभंगु
मइं जाणिउ नाणिण कहिउ तुज्झ नहु सावु एहु मा वच्छि! मुज्झ' २८

घत्ता

इअ[9] मुणिपहु-वयणिहिं [10]अमिअ-समाणिहिं अप्पदुक्ख[11]-संवेग-जुय
पिअयमि आसासिअ[12] सीलि पसंसिअ[13] करइ धम्मु निम्मल-चरिय ॥२९

[२]

अन्नया रुद्दत्तगओ चलए जवण-दीवम्मि बहु-दव्व-अज्जण-कए
पोअ-वणिजेण वच्चंतु मुकलावए सयण-वग्गं तहिं नम्मयं ठावए २
कह वि न-हु ठाइ सह चलइ नमया-सई जा चलइ पवहणं कोइ ता गायई
सुणिवि सर-लक्खणं कहइ पइ-अग्गए नम्मया 'गाइ जो पुरिसु सो नज्जए ४
पिंग-केसो अ बत्तीस-वरिसो इमो पिहुल-वच्छत्थलो सामलो सक्कमो'
इय सुणिवि पिअयमो[14] चिंतए 'दुद्दमा जा इमं मुणइ सा नूणमसई इमा ६
इत्तियं कालमेसा मए जाणिआ साविआ सील-विमल त्ति सम्माणिआ
कुल-कलंकस्स हेउ त्ति मारेमि वा तिक्ख-सत्थेण जलहिम्मि घल्लेमि वा' ८
अलिअ-कुविअप्प-पूरिअ-मणो जा गओ रक्खस-दीवु सहस त्ति ता आगओ
उत्तरिउ तत्थ पाणीअ-इंधण-कए नम्मया-सहिउ सो दीवु अवलोअए १०

1. आवज्जीउ 2. वज्जीउ 3. °चित्तु 4. नीअं 5. पडीअ 6. ईअ 7. पीययमवीओगु 8. नीअ 9. ईअ 10. अमीअ° 11. दुःख 12. आसासीअ 13. पसंसीअ 14. पीयअमो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तहिं परिस्संत सरवरह पालि गया निद्द-हेउं परं[1] पुच्छए नम्मया
सो वि छड्डण-मणो भणइ 'विस्सम पिए[2] तरु-तले सुअइ[3] जा ता सणियमुट्ठए १२
सुत्तयं नम्मयं मुत्तु निट्ठुरु मणे झत्ति संपत्तु माया-निही पवहणे
पुट्ठु परिवारि सो कहइ रोअंतओ 'भक्खिआ[4] रक्खसेणं पिआ हा हओ १४
एअ-ठाणाउ चालेह लहु पवहणं जा कुणइ रक्खसो तुम्ह न हु भक्खणं'
इअ सुणिवि तेहिं भीएहिं संचारिअं पवहणं जवण-दीवम्मि तं पत्तयं १६
तत्थ विक्किणिवि पणिअं[5] सलाभो गओ निअ-पुरं कहइ अम्मा-पिऊणं तओ
रक्खसोवद्दवं नम्मयाए दुहं पुण वि परिणाविओ भुंजए सो सुहं १८
जग्गए नम्मया जाव इत्थंतरे पिच्छए नेव तहिं पिअयमं[6] परिसरे
विलवए 'नाह हा कंत तं कहिं गओ अ-सरणं मं विमुत्तूण अइ-निद्दओ २०
वीससिअ[7] घाय-महदाव-पज्जालणं सुगुरु-आसायणा देव-धण-भक्खणं
पुव्व-जम्मे मए किं कयं दुक्कयं अकय-अवराह जं जाइ पिउ मिल्हिउं २२
पंच उववास काऊण अह च्चितए सरिवि मुणि-वयणु इय अप्पयं बोहए
'चलइ जइ मेरु उग्गमइ पच्छिम रवी टलइ नहु पुव्व-कय-कम्मु पुण कहमवी' २४
धीरविअ[8] चित्तमह कुणइ सा पारणं छट्ठ-दिणि फलिहिं कय-देवगुरु-सुमरणं
लिप्पमउ बिंबु ठावेवि गुह-अंतरे थुणइ पूएइ मणु ठवइ झाणंतरे २६
'रक्खसु दीवु मिल्हेवि जइ गम्मए भरह-खित्तम्मि जिण-दिक्ख गिन्हिज्जए'
इय विचिंतेवि चिधं जलहि-तीरए भग्ग-पोअत्त-संसूअगं उब्भए २८
बब्बरे कूलि पोएण वच्चंतओ चिंधु पिक्खेवि पिउ-बंधु तहिं आगओ
नम्मयं पिच्छिउं पुच्छए वइअरं[9] कहइ रोअंत सा वित्तु जं दुत्तरं ३०

घत्ता

संबोहिवि जुत्तिहिं पेम-पउत्तिहिं वीरदासु तद्-दुह-दुहिउ
पवहणि आरोविउ सीलि पमोइउ[10] बब्बरि[11] गउ नम्मय-सहिउ ॥३१

[३]

वीरदासु तहिं कूलि नरेसरि पूइउ[12] नमया ठावइ मंदिरि
हरिणि-वेसा तहिं निवसेई वीर-पासि दासी पेसेई २

1. पयं 2. पीए 3. सूअइ 4. भक्खीआ 5. पणीअं 6. पीअयमं 7. वीससीअं० 8. धीरवीअ 9. वइअरं 10. पमोईउ 11. बब्बरि 12. पूईउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रवहणु-प्रति दीणार-सहस्सू   निव-पसाइं सा लहइ अवस्सू
दासि भणइ ‘ तुम्हि सामिणि वंछइ ’   वीरु [1]सील-निहि तहिं नहि गच्छइ ४
तेत्तिउ[2] धणु पेसइ तसु हत्थिहि   हरिणि भणइ ‘ अम्ह काजु न अत्थिहिं
वीरदासु एती कल(?) आणि ’   भणिति-भंगि तिणि आणिउ प्राणि ६
खोभिउ हाव-भाव विन्नाणिहिं   न चलिउ जिम सुर-गिरि बहु-पवणिहिं
वीरु स-दार-तुट्ठु तिणि जाणिउ   कवडिहिं हरिणी सो वक्खाणिउ ८
वेसं[3] दासि भणइ एगंते   ‘ नारि ज दिट्ठा सिट्ठि-गिहंते
भयणि[4] सुआ वा निरुवम-रूवा   सा जइ वेस तु हुइं वसि देवा ’ १०
इअ मंतिवि तिणि मुद्दा-रयणू   मग्गिउ अप्पिउ सिट्ठि-पहाणू
[5]पडिछंदा-दंसणमिसि पेसिअ   मुद्दा नमया(यं) दंसिअ दासिअ १२
‘ तेडइ तुम्हि एवड-अहिनाणिहिं   वीरदासु[6] आवउ अम्ह भुवणिहिं ’
नाम-मुद्द पिक्खिवि चिंतिवि बहु   सह दासिहिं नमया आविअ लहु १४
हरिणी-गिह-पच्छलि भूमी-हरि   पुव्व-सिक्ख तिणि घल्लिअ निट्ठुरि
मुद्दा दासिहिं अप्पिअ वीरह   नमया दोसु देइ दुक्कम्मह १६
उट्ठिउ सिट्ठि जाइ निय-मंदिरि   ता नहु पिच्छइ नमया-सुदरि
घरि बाहिरि पुरि न [ल]हइ सुद्धि   भरुयच्छि गउ कय-बुद्धि स-रिद्धि १८
कड्ढिय भूमि-गिहाउ महासइ   जाणिउ वीरु गयउ अह दंसइ
सयल-रिद्धि ‘ एअह तइं सामिणि   करउं होसि जइ वेसा भामिणि २०
सग्गु एहु ता [मि]ल्हि असग्गहु ’   हरिणि-वयणु निसुणिवि नमया लहु
वज्ज-हय व्व भणेइ महासइ   ‘ मह जीवंतिअ[7] सीलु न नस्सइ २२
सीलु सयल-दुक्ख-क्खय-कारणु   सीलु सिद्धि-सुर-लच्छिहि कम्मणु
नरय-नयर-गोपुरु वेसत्तणु   उत्तम-निंदिअ[8] तसु किं वन्नणु ’ २४
तं निसुणिवि तज्जइ निब्भच्छइ   हरिणी कणइर-कंबिहि कुट्टइ
जइ जल-निहि मज्जाया मिल्हइ   तह वि न नम्मय सीलह चल्लइ २६
जाइ धरणि-तलु जइ पायालह   तुट्टिउ पडइ गयणु जइ मूलह
तिमिरु तरणि जइ ससि विसु वरिसइ   तह वि न नम्मय[9]-सीलु विणस्सइ २८

---

1 सीलु° 2. तत्तिउ 3. वसं 4. सूआ 5. पडच्छंदा° 6. वीरुदासु 7. °जीवंतीअ 8. °निंदीअ 9. नमय°

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इय[1] अ-चलंती बहुहा ताडइ सद्दि मुद्दिठ पुण सत्त न पाडइ
कुणइ सई परमिट्ठिहि मरणं तसु पभावि हुइ हरिणी-मरणं ३०
जाणिउ मुद्धि नरिंदु निवेसइ तसु पदि नमया कारणि मन्नइ
चिंतइ 'मज्झ सीलु नहु भंजइ इंदु वि' अह निवु तहिं हक्कारइ ३२
वेसा-गिह-निग्गमु सुंदरु मणि जाणिवि निव-पेसिअ-सुक्खासणि
आरोहिवि पह तडि रग्घडियह जंती पडइ मज्झि सा खालह ३४
कद्दमि तणु लिंपण-मिसि-निअ-हिअ गहिअ सील-रक्खणि सन्नाहिअ
सहमयणिहिं(?) पत्तइं किर फाडइ वत्थमिसिण[2] सा पमुइअ[3] हिअडइ ३६
लंखइ धूलि भुअंग-त्तासणि नच्चइ गायइ सती-सिरोमणि
सार मुणिवि निवु गुणिआ पेसइ पाहण-लंखणि ते वित्तासइ ३८

घत्ता

इय गहिली जाणिय 'बुद्धि-पहाणिअ सील-सकल डिंभिहिं कलिय
निव-पमुहिहिं लोइहिं मुक्क अमोहिहि[5] भमइ थुणइ जिणु अक्खलिय ॥३९

[४]

मित्तह जिणदेवह कहइ वीरु नम्मय वइअरु[6] तसु खिवइ भारु
भरुअच्छह गच्छइ निय-पुरम्मि जिणदेव पत्तु अह कूलि तम्मि २
दिट्ठा 'नच्चंती विगल-रूव जिणदेवि पुट्ठु 'तउं किं सरूव'
सा भणइ 'कहिसु वण-चेइअम्मि' अन्नोन्न कहिउ वइअरु[8] वणम्मि ४
सो बुद्धि देइ सा धरइ चित्ति अह घय-घड फोडइ गहिलिअ त्ति
घय-वणिअ कुणइ निव-पासि राव जिणदेवह कहइ नरिंदु ताव ६
'ए करइ उवद्दवु घणउ देसि पवहणि आरोहिवि लइ विदेसि'
नरनाह-वयणु मन्नेवि नियलि बंधिवि चडावि पवहणि विसालि ८
भरुयछि वंदाविवि देव नीअ जिणदेवि नमय पिअ-हरि विणीअ
रोअंत कहइ वुत्तंतु सयलु पियरिहिं पुरि उच्छवु विहिउ अतुलु १०
नमया-पुरिअ दस-पुव्व-धारि सिरि-अज्ज-सुहत्थि संपत्त सूरि
वंदइ सहदेवु कुडुंब-कलिउ निसुणेवि धम्मु नमयाइ सहिउ १२

1. ईय 2. ०मिसिणि 3. पमुई 4. वुद्धि० 5. अमोहिंहिं 6. ०वईअरु 7. नच्चंति 8. वई-अरु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अह वीरदासु पुच्छइ मुणिंदु 'किं नम्मयाइ किउ कम्म-विंदु'
पुव्विल्ल-जम्मि जं दुक्ख-जुत्त पइ-चत्त जिअंती कह वि पत्त' १४
अह कहइ मुणीसरु 'नम्मयाइ[1] एयाइ विंझगिरि-निग्गयाइ
अहिठायग देवय आसि एह पुव्विल्ल-जम्मि मिच्छत्त-गेह १६
पडिमा-पडिवन्नह मुणिवरस्स एगस्स नई-तडि निसि ठिअस्स
"एए नइ-न्हाणह निंदग" त्ति पढमं पडिकूलसग्ग-गत्ति[2] १८
पच्छाणुकूल थी-रूव-पमुह कय खोभ-हेउ देवीइ दुसह
अक्खुहिउ खमावइ सा वि साहु मुणि-कहिअ-धम्मि तसु बोहि-लाहु २०
सा देवि चविवि सहदेव-धूअ हुउ नमया-सुंदरि गुणिहिं गरुय
पडिकूलिहि तसु हुउ पइ-विओगु अणुकूलि सील-खोहण-पओगु' २२
इय निअ-भवु निसुणिवि भव-विरत्त चारित्त लेइ नम्मय पवित्त
इक्कारसंग-धर-गणहरेण सा ठविय महत्तर-पदि कमेण २४
फुड-अवहि-नाण-जुय[4] सह मुणिंदि विहरंत पत्त पुरि कूववंदि[5]
कउ तीइ महेसरु निव्वियप्पु सर-लक्खणेण निंदेइ अप्पु २६
'जाणिज्जइ सत्थ-पमाणि सव्वु तउ नमया जाणिउ पुरिस-रूवु
मइं दुट्ठि निकिट्ठि सु-सील चत्त कंता तसु पावइ दिक्ख जुत्त' २८
नम्मयमुवलक्खिवि चरणु लेइ रिसिदत्त-सहिउ सो तवु तवेइ
आराहिवि अणसणु[6] सग्गि जंति तिन्नि वि अणुत्तमु सुहु अणुहवंति ३०

घत्ता

कल्लाणह कुलहर होअउ जय-कर नमयासुंदरि-संधि वर
अब्भत्थणि संघह रइअ[7] अणग्घह पढत-सुणंतह उदय-कर ॥३१

*

सरिआ[8] वि सील-जुन्हा जीसे सुकयामएण तिअ-लोअं
सिंचइ बीइंदु-कल व्व नम्मया जयइ अ-कलंका ॥३२
तेरस-सय अडवीसे वरिसे सिरि-जणपहु-प्पसाएण
एसा संधी विहिया जिणिंद-वयणाणुसारेणं ॥३३

---

1. ०विंदु 2. नम्मयाइं 3. गति 4. जूअ 5. कूविचंदि 6. अणुसणु 7. रईअ 8. सिरिया

अंतः श्री नर्मदासुंदरीमहासतीसंधि समाप्ता ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०. चउरंग-भावण-संधि

[कर्ता: जिनप्रभ सूरि (?) रचना-समय : ई. स. १३०० पूर्व]

ध्रुवक

सिरि-वीर-जिणेसर नमिय-सुरेसर पाय-जुयलु पणमेवि जिय
चउरंगिय भावण सिव-सुह-कारण अणुदिणु भाविसु एरिसिय ॥१

[१]

संसार-रन्नि जीवा भमंति[1] सामग्गि य दुल्लह माणुसत्ति
दिट्ठंतिहिं चुल्लगमा[इ]एहिं सिद्धंत-भणिय भाव-सुइएहिं[2] २
जह चक्कि-गेहि भोयणु दियस्स भुंजेवि भरहि वारउ न तस्स
अह दिव्व-भावि सो कह वि हुज्ज तह वि हु न अधमु नर-भव लहिज्ज ४
वर-दिन्नइं पासइं चाणगस्स न पडंति तत्थ अन्नह नरस्स
पुन्नेण होइ एरिसु कयावि नर-जम्मु न लब्भइ निय-सहावि ६
सिद्धत्थ-पत्थु भरहस्स धन्नु मोसउ नारि कारिउं विभिन्नु
पारेइ कह वि सा कम्म-जोइ नवि हीण-धम्मु पुणु मणुय होइ ८
थंभह सयं सिउं इक्क दाउ थेर-निव-पुत्तु जइ जिणइ राउ
पावइ सु रज्ज जइ सुह-तिसीउ तह होइ नरत्तणु पुणु ल्हसोउ १०
बहु-मूल्ल-रयण वाणिय-सुएहिं विक्किय वणिय देसागएहिं
पुण मेलिऊण जइ इंति गेहि उप्पत्ति होइ नवि मणुय-देहि १२
रज्जट्ठ सुमिणि पिक्खइ मयंकु पविसंतु वयणि किं पुण वि रंकु
एवं पि हुज्ज सुकयाणुभावि माणुस्स-जम्मु न लहइ तहावि १४
चक्कऽट्ठ-उवरि पुत्तलिय-अक्खि न हु विज्झइ तह विणु नर णिदक्खि
विंधेइ कोइ अह एग-चित्तु नर-बुंदि न पावइ सुकय-रित्तु १६
सेवाल-छाहिय[3] जोयण-लक्खि दहि कुम्मु[4] तुट्ट-विवरस्स लक्खि
तं छिड्ड लहइ जइ पुणु भमंतु नवि लब्भइ पुणरवि माणुसत्तु १८
जुग[5]-समिल दो वि पुव्वावरम्मि खित्ता भमंति सायर-जलम्मि
[5]जुग-विवरि समिल पविसइ कयावि उप्पज्जइ जोउ न मणुय-भावि २०
जह रयण-थंभु चुन्निउ सुरेण मेरूवरि नलिय हुम्मिउ मुहेण
तब्भाव-करण तह पुग्गलाण न हु मणुय-भावु पावाउलाण २२

अशुद्ध मूल पाठ : 1 भवंति 2 सुइमेहिं 3. ०च्छाहिय 4. कम्मु 5. जग

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इय दसहिं नियंसणि माणुसत्तु पुन्नेहिं जीव पइं कह वि पत्तु
लद्धम्मि तम्मि सुकुलम्मि जम्मु जहिं मुणियइ जिणवर-भणिय-धम्मु २४
तत्थ वि य दुलहु पंचिंदियत्त रोगेहिं विवज्जिउ देह पत्तु
निव्वणु सर्रु पडिपुन्न आउ पुन्नेण होइ तह धम्म-भाउ २६

घत्ता

इय गुणह परंपर लद्धिय सुंदर उज्जमु करि जिय धम्मु लहु
कारणिहिं वराडिय मोहि भमाडिय लद्धिय हारि म कोडि तुहुं ॥२७

[२]

इय दुलहइ लद्धइ माणुसत्ति नवि बुद्धि होइ जोवाण तत्ति
जणवइ अणज्ज जहिं बहुय अत्थि जहिं धम्म-सन्न कावि हु न अत्थि २
सग-जवण-[1] लउस-बब्बरय-डुड्ड[2] [3]पक्कणिय-कएसुररोह(?)-गुड्ड
अरबाग-होण-खस-कासियाइ[4] रोमय-पुलिंद-पारस-किलाइ ४
दुम्मिल्ल-दमिल-भिल्लंध-भमर[5] बुक्कस-चिलाय-कुलखाइ सबर[6]
केकइय-कुंब-मालव-रुया य कुंचा य चीण तह चंचुया[7] य ६
गय-कन्ना खर-मुह तुरग-वयण मिंढग-मुहा य आरत्त-नयण
अन्ने वि मिच्छ बहु-पाव रुद्द निग्घिण पयंड साहसिय खुद्द ८
जोव-वह-रत्त मंसासियाण कित्तिय भणामि तहऽगारियाण
सुमिणे वि कन्नि धम्मक्खराण न पवेसइ सहुं समइ ताहं १०
अह कह वि कम्मि खाओवसम्मि उप्पज्जइ जिउ जणि आरिअम्मि
तत्थ वि पमत्तु तारुन्न-वेसि उम्मत्तु भमइ विसयाहं रेसि १२
तसु सल्लइ बहु उरि काम-कीलु पर-दार-रत्तु न गणेइ सीलु
पुरि चच्चरि देउलि पयइ-रत्त तसु नयण वयण अवलोइयंतु १४
वच्छायण-लीलावइ-कहाहिं सिंगार-रसिय ते तसु मुहाहिं
अब्भासइ गाह-दोहा-मुहाइं कामग्गि-तेय-संधुक्खणाइं १६
अद्धच्छ-निरक्खण-चाडुयाइं वोयारइ पर-जण-वल्लहाइं
छ-हु हास-विलासिहिं गमइ कालु न हु मुणइ एहु सहु इंदियालु १८
अह वल्लह-माणुस-विरहु होइ ता दिवस-रयणि झूरइ विओइ

1. लउस्स 2. बबरईहुड्ड 3. एक्क० 4. कासिवाइ 5. भगर 6. सघर 7. बंचुया

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छुह-तण्ह-विवज्जिय निद्द-हीण दिण जंति [1]निरत्था तासु दीण २०
वेर(?विरह)ग्गि-पत्तु जोव्वण-विमुक्कु जिम मक्कडु तिणि खणि डालचुक्कु
विउसेहिं ठाविउ कह वि मग्गि मा सोगु करहि तुहुं धम्मि लग्गि २२
मिच्छत्त-छइउ[2] पर-तित्थियाण उववसइ पासि सो लिंगियाण
निसुणेइ लोइउ मिच्छ-नाणु भावेइ हियइ तं सो अयाणु २४
रामायणाइ संगाम-सत्थ संसार-हेउ ते पुण निरत्थ
अप्पत्थु[3] भत्तु जह आउरस्स अहियं कु-सत्थु[4] निसुणंतयस्स २६
पुव्विं पि य नरय-कसाय-अग्गि उरि जलइ निच्चु भमइ य कुमग्गि
पज्जलइ कुसत्थिहिं दीविउ य जह वड्ढइ तरु जलि सिंचिउ य २८
कारेइ सुणेइ पसुमेइ-जन्न गिह-भूमि-लोह-रुप्पय-सुवन्न
धम्मत्थु देइ जत्ताहलाइं गिन्हेइ हिट्ठु कन्नाहलाइं ३०

घत्ता

इय कु-समय-बोहिउ मिच्छ-विमोहिउ मन्नइ जिउ न हु जिण-वयणु
संसारि भमंतउ दुक्ख सहंतउ पावइ पुणु बहु जर-मरणु ॥३१

[३]

अह कह वि सुगुरु चारित्त-जुत्तु गामागराइं विहरंतु पत्तु
तसु पासि न गच्छइ सो इमेहिं सुय-साहिय तेरह कारणेहिं २
बहु-आलस-विनडिउ अकय-पुन्नु निच्चिंतउ चिट्ठइ घरि निसन्नु
सुगुरूण मूलि जाएवि धम्मु न सुणेइ कह वि जिण-भणिउ रम्मु ४
मोहेण विमोहिउ सो वराउ रक्खंतु ठाइ धण-अंगणाउ
गुरु-अंति न सुणइ जिणिंद-वयणु जिणि जिउ लहेइ सम्मत्त-रयणु ६
जंपेइ जईण अवन्नवाउ मन्नेइ मूढु ते जण-सहाउ
हउं इक्कु वियक्खणु मणुय-लोइ जिण-वयण-समागमु तिणि न होइ ८
माणेण न जाइ जईण पासि जह दंसणि नासइ पाव-रासि
सिद्धंत-वयणु न सुणइऽभिमाणि तसु थड्ढ होइ चारत्त-हाणि १०
कोहेण वि चिट्ठइ धगधगंतु कइया वि न दीसइ सो पसंतु
साहू न तस्स उवएसु दिंति आऊ-दलाइं एमेव जंति १२

1. नरत्था 2. छईउ 3. अप्पत्तु 4. कुसत्तु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मज्जेण मत्त विसयाण सत्त निद्दा-पमाय सोयइ निचिंतु
विगहा-कसाय हारेइ जम्मु गुरु-जण-सगासि न सुणेइ धम्मु १४
[1]हायत्तु भविस्सइ भत्त-पाणु किविणत्तणि जोइ न सो अयाणु
मुणिवरह अंति सव्वन्न-धम्मु न सुणइ गउ इ तसु आलि जम्मु १६
नरयम्मि जाइ जो करइ कोहु जंपंति साहु तउ माणु लोहु
तिरियत्तु होइ कवडत्तणेण न सुणेइ जिणागमु तसु भएण १८
धण-सयण-सोगि जगडीउ कहावि मेलण-उवाय चिंतइ तहा वि
सिद्धंत-सुणण को अम्ह कालु सुगुरुहिं वुत्त इय भणइ बालु २०
पावाण वि एउ महल्ल-पाउ जं जीव होइ अन्नाण-भाउ
आवरिउ जेण हिउ अहिउ अत्थु न मुणेइ तस्स परिणमइ सत्तु २२
वक्खित्तु कुडुंबह करइ विट्ठि मूढउ न देइ परलोय-दिट्ठि
कज्जाण अंत तसु सुण्ण-वार सा तसु न होइ सिद्धंत-सार(?) २४
नर-कुक्कुड-मक्कड-महिस-संड [2]जुज्झंता पेक्खइ ते पयंड
नड-नाडएण विक्खित्त-चित्तु जिण-वयणिहिं देइ न मणु निरुत्तु २६
रमणीय रमंतह रमणसील दिण जंति अहव कीडाइ लीण
जिण-भासिउ न सुणइ तिजग-सारु दुत्तरु तरेइ जिणि भवु अपारु २८
अइसइ दुलंभि जिण-सासणम्मि लद्धम्मि जीव पइं माणुसम्मि
कारण पमाय मिल्हेवि झत्ति वायाइ गमिसि तुहु धम्म-तत्ति ३०
तव दाण सील तिन्नि वि पयार सद्धाइ रहिय ते पुण असार
सद्धाइ सहिय[3] धम्माणुठाणु जे कुणहिं ति पावहिं परम-ठाणु ३२

घत्ता

सुइ-सुद्धइ नर-भवि लद्धइ कहमवि संजमि वीरिउ करह पुणु
नियि-देहहि पाइय कम्म निकाइय छिंदह जिम जिय इक्क-मणि ॥३३

[४]

सो संजमु सतरह-भेय वुत्त कुण सव्व-विरइ सामइय-जुत्त
अह गिन्हि महव्वय गुरु-अंति संसारु जेहिं जोवा तरंति २
इय जीव गहिय सव्वन्नु-दिक्ख आसेवण-गहणा-सिक्ख-भिक्ख
तव-जोग-[5]किरिय अज्झाहि सुत्त भावेसु अत्थु तह एग-चित्तु ४

1. दायत्तु 2. कुज्झंता 3. सहीय 4. ज 5. सुरु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[1]गीयत्थु अप्पु एवं करेवि गुरु-पाय-कमलु भमरो व सेवि
आवस कराहि तुह एग-चित्तु दो राग-दोस परिहरहि सत्तु ६
वज्जेसु ति-दंड ति-गारवाइ सन्नाइं चउव्विह चउ-कसाय
पालेहि महव्वय निरइयार रक्खाहि जीव छच्च प्पयार ८
भय सत्त वज्जि अट्ठ य मया य आयारहिं अट्ठ पवयणह माय
ते पंच समिहिं य तिन्नि गुत्ति रक्खाहि जीव नव बंभ-गुत्ति १०
दसविह खमाइ तुह समण-धम्मि उज्जमहि भावि बारस-तवम्मि
अहियासुवसग्ग-परीसहाइं तिरि-मणुय-विहिय मलकन्नगाइं १२
माणप्पमाण-उवगरण-जुत्तु बायाल-दोस-रहियं च भत्तु
जसु होइ नाण-दंसण-चरित्तु तिहिं तिन्नि जीव अप्पउ पवित्तु १४
सत्तरस भेउ संजमु करउ अट्ठार सहस्स सीलंगु धरउ
विहरेहि वसुह तुहं मासकप्पि सम्मत्त-रहिउ थेराण कप्पि १६
आराहिउ गुरुजण-पायजुयलु पडिबोहिउ पुहविहिं भविय-कमलु
परियाउ चरणु पालिउ विसालु निय मुणिउ जीव तइं आउ कालु १८
संलिहिउ देहु संलेहणाइ छम्मासिय-चउ-छट्ठट्ठमाइ
तणु-सुद्धि करिवि मल-रेयणेण गीयत्थ-भणिय-निज्जामएण २०
सिद्धंत-भणिय-आराहणाहिं आहारु चउव्विहु पच्चक्खाहिं
एरिस-विहाणि जइ तणु चएसि तइए भवम्मि ता सिवु लहेसि २२

घत्ता

इय पंच महव्वय जइ वि हु सव्वय न तरिसि धरिउं जीव तुहुं
तो पालि अणुव्वय तिन्नि गुणव्वय सिक्खा-वय-चउहुं पि सउं ॥२३

[५]

मिच्छत्तु वज्जि बहु-दोस-कूलु गिहि-धम्मु करहि सम्मत्त-मूलु
संकाइ दोस तं रहिय होइ सम्मत्त-रयणु पुणु दुलहु लोइ २
अरहंतु देउ गुरु-साहु-भत्ति कीरइ य ईय जीवाइ तत्ति
सम्मत्तु एहु जिण-भणिउ सारु जीवा तरंति जिणि भवु अपारु ४
पाणिवह-थूल-विरइं करेसि कन्नाइ अलिय मा तुहुं चवेसि
दुविहं पि थूलु परिहरि अदत्तु[2] पर-रमणिहिं वालहि नियय-चित्तु ६

1. गीयत्त 2. अदत्तु

परिगह-विरइउ पुणु निसिहिं भत्त जिणि भुत्तइं विणसहिं बहुय सत्त
करि दिसि-पमाणु भोगोवभोग- [1]संखा-कएण न हु हुंति रोग ८
परिहरहि चउव्विहऽणत्थदंडु बंधंति जीव जिणि कम्मु चंडु
सामाइउ गिहत्थहं पवर-धम्मु अइयार-रहिउ करि एहु रम्मु १०
दिणि दिसि-पमाणु करि पोसहं च पव्वेसु य पुन्न चउव्विहं च
पारणइ मुणीण य भत्त-पाणु सुविसुद्ध देइ भुंजइ सुजाणु १२
कारावहि जीव जिणिंद-वयणु (?भवणु) जिण-बिंब-पइट्ठा पूय ण्हवणु
आगम-विहीय तह पुत्थयाइं सिद्धंत-सार सुप[स]त्थयाइं १४
जिण-जम्म-दिक्ख-निव्वाण-भूमि वंदेसु तित्थ सउं परियणम्मि
वर-गंध-धूव-पुप्फक्खएण जिण-ण्हवण-पूय करि आयरेण १६
पूएसु संघु निय-गेहि पत्तु वत्थन्न-दाण-वर-भत्ति-जुत्त
अणुकंप-दाणु किर दुत्थियाण दीणंध-पंगु-जण-जुंगियाण[2] १८
इय विहिणा पालउ सावगत्तु संलिहउ देह मरणम्मि पत्तु
उद्धरिय सल्लु सुगुरूण पासि खामेसु सव्वु तुहं जीव-रासि २०
अहिगरण अठारह पाव-ठाण वोसिरसु जोव रुद्दट्ट-झाण
संथार-दिक्ख मुणिवरह अंति गिन्हह व गेह-अणसण-पवित्ति २२
अणुमोय सुकड दुक्कडाण गरिह तिय-लोय-नाह झाएह अरिह
मरणाइयार मा धरिसि चित्ति चउसरण-गमणु नवकारु अंति २४
आराहणाइ एरिसिय जुत्तु नवकारु सरंतउ पाण-चत्तु
उप्पज्जइ सावउ देव-लोइ तइय-भवि सत्त-भवि मोक्खु होइ २६

घत्ता

इय लद्ध सुरंगं तइं चउरंगं जीव म हारिसि एहु वरु
कम्मट्ठ-पणासणु भव-दुह-नासणु जायइ न हु पुणु देह-धरु ॥२७

---

1. संकाकएण 2. जंगियाणं

अंत : ॥छ॥ चउरंग-संधि सम्मत्ता ॥छ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११. आणंद-सावय संधि

[कर्ता : विनयचन्द्रसूरि रचना-समय : ई. स. १३०० पूर्व]

ध्रुवक

सिरि-वीर-जिणिंदह पणय-सुरिंदह पणमवि गोयम गुणनिहिहिं[1]
आणंद सुसावय धम्म-पभावय भणिसु संधि आगमविहिहिं ॥१

[१]

सत्तमय-उवासगदसह अंगि सिरि-वीर भणिय कायव्व-अंगि[2]
इय पूछइ[3] पणमवि जंबु-सामि इम[4] अक्खइ गणहरु सुहम-सामि २
इह मगहदेसि वाणिज्ज-गामि नरनाहु आसि जियसत्तु नामि
गाहावइ निवसइ तहिं सुतंतु आणंदु नामि सिवनंद-कंतु ४
कुल्लागु नामि तसु तहि निवासु चेइउ अत्थि तहिं दुइपलासु
सिरि-इंदभूइ-पभिइहिं समाणु तहिं समवसरिउ सिरि-वद्धमाणु ६
वंदणह जाइ जियसत्तु राउ आणंदु वि सावउ सुद्ध-भाउ
जिण-देसण निसुणवि इक्क-झाणु आणंदु लेइ परिगह-पमाणु ८
वज्जेमि थूल-जीवाण हिंस अलियं पि थूल चोरिय निसंस
सिवनंदा विणु मुझ नियमु नारि दस दस य सहस गोकुल चियारि १०
तह निधिहिं[5] कलंतरि वव्वहारि मुझ कणय-कोडि हउ चारि चारि
हय सगड[6] याण पण-पण-सयाइं चत्तारि वहंति य पवहणाइं १२
जिट्ठीमह[7]-दंतण मह सुसाउ अब्भंगि तिल्लु सय-सहस-पाउ
तह सुरहिगंध-उव्वट्टणं च जल-कुंभिहिं अट्ठहिं मज्जणं च १४
लहणइं[8] गंध-कासाइयाइं आभरणिहिं मुदिय-कन्नियाइं
तोरुक्क-अगरु-धूवेहिं धूव मालइय-पउम-कुसुमह सरूव १६
कप्पूर-अगरु-कुंकुम विलेउ वर-खोम-जुयलु पहिरण-समेउ
खीरामलं च फल कलम-सालि मुग-मास-कलायह तिन्नि दालि १८
घेउरय खज्जि पिय कट्ठपेय घिउ सरय-समय गाविहिं समेय
पल्लंकि मंडुकि य वंजणाइं नेहंबदालि वलि[9] तिम्मणाइं २०

1. A ०हिहिं 2. B कायत्थभंगि 3. A पुच्छिउ 4. A इय 5. B नहिहिं
6. B सगल 7. B जिट्ठीमुह 8. B लहणय 9. B विल तिमणाइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तंबोल पंच-सोगंधियाण आगास-नीरु इय भोग-माण
अवज्झाणु पमाय विहिंसयाण[1] वज्जेमि[2] पाव-बुद्धिहि पयाण २२

घत्ता

इय नियमइं लेविणु वीर नमेविणु सिवनंदह जाइवि[3] कहए
सिवनंद वि रम्मू जिण-वर-धम्मू सामि-पासि पणमवि लियए ॥२३

[२]

अह गोयम पुच्छइ[4] पहु नमेउ[5] किं लेसिइ व्रतु आणंदु एउ
तउ[6] अक्खइ सामि वि जाव-जोवु इह करिसइ सावय-धम्म-दीवु २
अह[7] होसइ सुर-वेमाणि रम्मि सोहम्म-कप्पि अरुणप्पभम्मि
तहिं[8] चारि पलिय पालेवि आउ एगावयारु तउ सिद्धि-ठाउ ४
आणंदु वि चउदस-वच्छराइं पालेवि[9] दुवालस-गिहि-वयाइं
चिंतेइ पुव्वरत्तावरत्ति आयत्ति[10] मज्झ बहु-जणह तत्ति ६
ता जिण-पणीय धम्मे सयाइ मा खलणु होउ[11] कह वि हु पमाइ
इय चिंतिय सिरि-कुलाग-गामि पोसाल करावइ सुद्ध-ठामि ८
असणाइं चउव्विहु उक्खडेउ जीमावइ सयल वि नयर-लोउ
तउ जिट्ठ-पुत्ति आरोवि भारु आणंदु जाइ पोसह अगारु[12] १०

घत्ता

तत्थ ट्ठिउ माणवि देविहिं दाणवि अक्खोहिय मणु जिण-पहइ
संलेहण-जुत्तिय छ-वरिस-उत्तिय सावय-पडिमा सो वहइ ॥११

[३]

इक्कु मासु देव-पूया ति-संझ सम्मत्त-पडिम अइयार-वंझ
दो मास सुद्ध-बारस-वएहिं वय-पडिमा पालइ[13] नियय-गेहिं २
सामाइय गिन्हइ वार दुन्नि पुव्वुत्त किरिय सउं मास तिन्नि
चउ-पव्व-तिहिहि करि उप्पवास सो पोसहु पालइ च्यारि मास ४
चउ-पव्वि चहुट्टइ निरुवसग्गु सो पंचमास लिइ[14] काउसग्गु
छम्मास बंभचेरं धरेइ सच्चित्तु सत्त मासा न लेइ ६

1. A सदाण 2. A वज्जेवि 3. A जायवि कहइ 4. B पूछइ 5. A नमेवि 6. A तउं 7. B इह 8. A तह 9. A पालेइ 10. A आयत्थ 11. B होइ 12. A अगारि 13. A दुइय 14. A दिइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आरंभु विवज्जइ अट्ठ मास अन्न वि न करावइ नव वि मास
जं उद्दिसीउ तसु रेसि रद्धु दस मास न जीमइ तमवि सुद्धु ८
एगारस मासा समणभूउ [1]लिइ ओघउ मुहपति करइ लोउ
मह समणोपासग भिक्ख देउ निय-गोउलि विहरइ सो अखेउ १०
एगारस पडिमा इम वहेउ संलेहण करिविणु दुविह-भेउ
तव-चरणि अट्ठि-चम्मावसेसु निसि सुत्तु तणह संथारएसु १२
चिंतेइ धम्म-जागरिय रत्ति जा अज्ज वि अच्छइ देह-सत्ति
जयवंतु धम्म-आयरिउ जाम अणसणु करेसु हउं इत्थ ताम १४

घत्ता

सिद्धंतह जुत्तिहिं [2]सत्तहिं खित्तिहिं वित्त-बीउ वावेवि घणु
अट्ठाहिय कारिय[3] संघ हकारिय[4] देव-पूय-वंदण-करणु ॥१५

[४]

सुगुरूण वास सीसिहिं गहेउ सुमरेवि पंच-परमेट्ठि देउ
उस्सग्ग-पुव्व सो सोहि लेइ[5] सम्मत्तमाइ वय उच्चरेइ २
ता उत्तमट्ठि सो ठाइ ठाणु[6] वोसिरइ अठारस पाव-ठाणु
चत्तारि सरण मंगल उतिम्म[7] अरहंत सिद्ध [8]साहू य धम्म ४
हिंसा अलीय[9] अणदिन्न दाणु मेहुण परिग्गह कोह माणु
माया य लोभ पिज्जं च दोस कलहो वि अभक्खाणं सरोस ६
अरईरई य पेसुन्न-जुत्तु [10]परिवाय माय-मोसं मिच्छत्तु
ए तिविह तिविह मण-वयण-काय कय-कारणाणुमइ[11] पच्चखाय ८
अरहंत सिद्ध साहू य सक्खि देवाण सक्खि अप्पाण सक्खि
जं रयण-करंडग-भूउ एहु वोसिरसु[12] चरम-ऊसासि देहु १०
उवसग्ग[13] देव-माणुस-पसूण जे हुंति सहिसु ते सवि अणूण
आहार-उवहि दुच्चिन्न-कम्मु ते वोसिरामि सवि जाव-जम्मु १२

घत्ता

आहारु चउव्विहु चइविणु सो वि हु गुरु-मुहेण गहियाणसणु
छज्जीव खमावइ भावण भावइ तण-संथारि[14] निसन्न-तणु ॥१३

1. A लिउ उघउ मुहती 2. A सित्तह 3. A कारिउ 4. A करिउ 5. A लेउ 6. A माणु 7. B सुरम्म 8. A साहू सुधम्म 9. A आलीउ 10. B परवाय 11. A पचखाइ 12. A वोसिरउ 13. A दिव्व 14. A ०थार पंवंन तणु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[५]

सिल मट्टी लवणइ पुढविकाउ[1] महि ओस करय हिम आउकायु[1]
विज्जुक्क अगणि मुह तेउकाउ तलियंट फुक्क घम वाउकाउ[1] २
पत्तेय सहारण वणसईउ एगिंदिय खामउं सवि खमीउ
किमि पुयर अलस बेइंदिया य जू मंकुण कीड तिइंदिया य ४
चउरिंदिय डंस मसा य मच्छि खज्जूरय भमर य तिट्ठ विंछि
पंचिंदिय जलयर णेगभेय [2]चिड लावय तित्तिर खचर[3] जे य ६
सस सप्प हरिण सूयर अरन्नि पसु महिस-पमुह [4]थलयर जि अन्नि
नारइय सत्त-नरएसु संत जे मणुव-खित्ति माणुस वसंत ८
वेमाणिय जोइस वंतरा य दस-भेय भवणवासी सुरा य
भव-मज्झि भमंतह[5] मइं अभव्वि जे दूमिय[6] खामउं हउं ति सव्वि १०
आसाइय कहवि हु तित्थनाहु केवलिय सिद्ध आयरिय साहु
साहुणि य सुसावय सावियाउ[7] चारित्त-नाण-दंसण-गुणा उ[8] १२
तह पाण-भुय जिय सव्व[9] काल आसाइय जे मइं गुण-विसाल
ते तिविह तिविह खामेमि पुज्ज ते वि हु खमंतु अवराहु मज्झ १४

घत्ता

आउट्टिहिं दप्पिहिं [10]तह संकप्पिहिं मइं जि विराहिय कहवि जिय
ते सवि हउं खामउ हउं ति खमावउं निंदउं हिव जे दुक्किय किय ॥१५

[६]

कालाइ अट्ठ नाणाइयार संकाइ अट्ठ दंसणइयार
अइयार अट्ठ चारित्तचारि तवि बार तिन्नि वीरियइयारि २
पंचाइयार संलेहणाइ जे विहिय कहवि मइं इह[11] पमाइ
वह-बंध-पमुह जं विहिय हिंस जं जंपिय वयण अलिय-मिस्स ४
जं थोव वि चोरिय कसु वि वत्थु जं सेविउ मेहुण अप्पसत्थु
जं[12]मेलिउ परिगहु पाव-मूलु जं हिंडिउ दिसि जिम तत्त-गोलु ६
जं पनरस कम्मादाण चत्त बावीस अभक्खइं जं च भुत्त
जं अट्ट रुद्द झाईउ झाणु जं किंचु पाव-उवएस दाणु ८

1. B o काय 2. A चड 3. B खयर 4. A जलयर 5. B भमंतइ 6. B दूमिइ 7. B सावयाण 8. B गुणाण 9. A सत्तकाल 10. A संकप्पिहिं कप्पिहिं 11. A अइ प° 12. A मीलिउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जं अप्पिय[1] ऊखल-लंगलाइं जं मज्झ[2] जूय वयरइं कयाइं
सामाइउ[3] जं किउ साइयारु जं खंडिउ देसवगास-चारु १०
जं पव्व-दिवसि पोसहु न किद्धु जं संविभागु अतिथिहिं न दिद्धु
तं निंदउं[5] गरिहउं तिविह तिविहु मिच्छक्कडु पुणु पुणु होउ सु बहु १२

घत्ता

हिंडंतह[6] भवि भवि आसंसारु वि खंडिउ जं च विराहियउ
तसु होउ[7] समुब्भडु मिच्छा दुक्कडु गुरु-समक्खु तं गरिहियउ ॥११

[७]

जं गोय-नट्ट-पिक्खणय-सार कय देव-पूय अट्ठ-प्पयार
जं सेविउ गुरुजण भत्ति-पुव्वु किउ वंदण-पडिक्कमणाइ सव्वु २
विहि-पुव्वु विहिय जं तित्थ-जत्त आराहिय सत्तिहि सत्त खित्त
जं भत्तिहिं दिन्नउ मुणिहिं दाणु जं पालिउ सीलु वि गुण-निहाणु ४
जं बार-भेउ तव-चरणु चरिउ जं भाविय भावण झाणु धरिउ
जं पढिउ गुणिउ सिद्धंत-तत्तु आराहिउ दंसणु अनु चरित्तु ६
जं धम्म-कज्जि उवयरिउ एहु मम संतिउ धणु मणु वयणु देहु
इह-जम्मि अन्न-जम्महं पवंचि अणुमोइउ जं किउ सुकय किंचि ८

घत्ता

निय-कुल-नह-चंदू इय आणंदू अणुमोएविणु सुकिय[8] सवि
सुह-झाणह कारणि भवह निवारणि भावण भावइ बारस वि ॥९

[८]

भावण भावंतह सुद्ध-भावि खणि खणि मुच्चंतह पुव्व-पावि
संथारि निसन्नह मह-पमाणु उप्पन्नु तासु अह ओहि-नाणु २
इत्थंतरि विहरंतु नयर-गामि तहिं [9]समवसरिउ सिरि-वीर-सामि
गोयरचरि गोयमु तहिं फिरंतु [10]कुइ पूछइ पिक्खवि जणु मिलंतु ४
सो कहइ इत्थ अणसणि पवन्नु आणंदु उवासउ[11] अत्थि धन्नु
तं सुणिवि जाइ तहिं इंदभूइ तसु सुक्ख-तवह [12]पुच्छइ सरूइ ६

1. A अप्पिउ 2. B जुयइ 3. B °इय किद्धउ सा° 4. B जं न खंडिउ 5. B गरिहुं 6. A हिंडंतइ 7. B हउ 8. B किउ 9. B समोसरिउ 10. B कोइ 11. B वि सावउ 12. A पुच्छा सरवु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं नमवि सो वि विहसंत-दिट्ठि इय भणइ नाह इहऽणब्भ-वुट्ठि
अवधारिउ अप्पणि[1] तुम्हि पाउ मह उवरि किद्धु गरुयउ पसाउ ८
ता भंजउ संसउ अपरिमाणु गेहीण होइ किं अवहि-नाणु
होइ त्ति भणिउ सिरि-गोयमेण आणंदु पयंपइ सुणह तेण १०
हउं पिक्खउं जोयण पणसयाइ पुव्वावर-दाहिण-जलहि[2]माइ
हिमवंतु जाम उत्तर-दिसम्मि [3]अह पढम नरय[4] उवरि सुहम्मि १२
अह जंपइ गोयमु गुण-निहाणु आलोइ पडिक्कमि एह ठाणु
जं अवहिनाणु गेहीण होइ ए-दूरिहिं पिक्खइ न उण कोइ १४
जंपेइ सुसावउ सच्चि अट्ठि मिच्छुक्कडु दिज्जइ किं व[5] जुट्ठि
जइ जुट्ठइ ता पडिक्कमणु तुम्ह अह सच्चि तु आइसु देहु अम्ह १६
इय निसुणवि गोयमु निरभिमाणु तं[6] जाइवि पुच्छइ वद्धमाणु
कहि नाह अम्ह बिहु जणह माहि[7] को सच्चवाइ को मिच्छवाइ १८
आणंदु सच्चवाई सु साहु [8]तुहुं मिच्छवाइ इम भणइ नाहु
तं सुणवि झत्ति जाएवि तेण आणंदु खमामिउ[9] गोयमेण २०
अह चइउ देह अणसणिण खीणु सिरि-वद्धमाण-पय-सरणि लीणु
सुमरंतु पंच-परमिट्ठि-मंतु सोहम्मि पत्तु सिवनंद-कंतु २२
अरुणप्पभम्मि उववाय-सिज्ज अंतोमुहुत्ति [10]चउ उत्तरिज्ज
बत्तीस-वरिस जारिस जुवाणु उप्पन्नु सत्त-कर-देह-माणु २४

घत्ता

तहिं[11] जय जय नंदय जय-जय भद्दय अजिउ जिणसु जिउ पालसु य
अम्ह अज्ज अणाहह तुम्मि हुय नाहह इय देवंगण-वयण सुय ॥२५

[९]

उप्पन्नु पिक्खि वेमाणि देउ पडिहारि विनत्तउ पढमु एउ
अम्ह पुन्नि जाय तुम्हि इत्थ ठाइं ता वंदहु[12] मासय-चेइयाइं २
सुरु उट्ठिउ तउ [13]तिणि दिन्न बाहु पूएइ नमंसइ तित्थनाहु
[14]तिहिं वच्चइ पुच्छइ सत्थ-नीइ संचरइ[15] देव-ववहारु जोइ ४

1. A अप्पणु 2. A ० हिं माहिं 3. A अह 4. A नरइं 5. A कंचि 6. B जं 7. A माइ 8. A तुह 9. B खामिउ 10. A विचि 11. B तह 12. B बंदउ 13. A विण दिन बा 14. A तह वाचइ पुत्थय सग्गनीइ 15. B संचरइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नंदणवणि तिणि[1] सउं देउ जाइ तिहिं [2]विलसइ फुल्लिय वणह राइ
संताण कप्पदुम पारिजाय मंदार पवर हरिचंदणा य ६
तहिं वावि रयण-सोमाण[3]-पंति [4]कीलाहर पिक्खइ विउल-कंति
इत्थंतरि आवइं[5]अच्छराउ पय-रणझणंत-वर-नेउराउ ८
तहिं साहिलास-देवंगणाहिं कंदप्प-दप्प-[6]थिर-जुव्वणाहि
उवगूहिय विविह-नेहेण गाढु सो विलसइ रइ-सागरवगाढु १०
[7] अणमिस-नयणु मण-कज्ज-सिद्धि [9]अमिलाय-मल्लु [10]अक्खुडिय-रिद्धि
नितु नइ-गीय-[11]पेक्खण-विणोइ कालं गमेइ सो सग्ग-लोइ १२
सिरि-रयणसेहर-सुगुरूवएसि सिरि-विणयचंद तसु सीस लेसि
अज्झयणु पढमु इह सत्तमंगि उद्धरिउ-संधि-बंधेण रंगि १४

घत्ता

जं इह हीणाहिउ किंचि वि[12] साहिउ तं सुयदेवी मह खमउ[13]
[14]इह जु पढइ जु गुणइ वाचइ निसुणइ मुत्ति-नियंबिणि सो रमउ ॥१५

1. A तिण सो 2. A वणसई 3. B सोवाण 4. B केलीहर 5. A आवहि 6. B चिर० 7. B उवयरिव पवरनहेण गाढ 8 B अणमेस 9. B अमलाय 10. A अखुडिय 11. A पिक्खण-विणोय 12. B णाहिउ 13. B मज्झ खमउं 14. B जं पढत गुणतह श्रवणि सुणंतह मुत्तिरमणि तं वरउ वर ॥

अंतः A ॥ इति श्री महावीरपर्युपासकस्य श्रीमदानंदाभिधान प्रथमोपकास(पासक)स्य संधिः समाप्ता ॥B॥ इति श्री वर्द्धमान-जिन-प्रथमोपासकस्य आनंद-सुश्रावकस्य संधिः समाप्तः ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२. अंतरंग-संधि

[कर्ता : रत्नप्रभ गणि रचना-समय : ई. स. १३०० पूर्व]

ध्रुवक

पणमवि दुह-खंडण दुरिय-विहंडण जग-मंडण जिण सिद्धि-ट्ठिय
सुणि कन्न.रसायणु गुण-गण-भायणु अंतरंग मुणि संधि जिय ॥१

[१]

इह अत्थि गामु भववास-नामु बहु-जीव-ठामु विसयाभिरामु
दीसंति जत्थ अणदिट्ठ छेइ बहु-रोग-सोग-दुह-जोग-गेह २
बहु-पाव-ठाणु जहिं हट्ट-उलि अइ भीम सीम जहिं कुगइ-पोली
अन्नाण-रूवु जहिं गढु अहंगु घण-कम्म-पयडि कविसीस-तुंगु ४
जहिं दाण-साल गुरु नव-नियाण किरियाणग तेरस किरिय-ठाण
जहिं घोर जम्म-जर-मरण-रूव अच्चंत-पंक-मल-सजल-कूव ६
जहि आहि-वाहि अइ-दोह सेर अणवरय जीव जहिं करइं फेर
जहिं इंदिय निंदिय दुट्ठ चोर छलिऊण लोगु विनडंति घोर ८
अइ-कुर-कम्मि जहिं हम्ममाण विलवंति जीव असरण अताण
जहिं सव्वउ वि घण असि व वाडि जहिं पडइ अचिंतिय जमह धाडि १०
तहिं मोह-नरेसरु करइ रज्ज तिय-लोय-दंड-करणम्मि सज्ज
*नेरइय तिरिय अनु मणुय देव चउरो वि वन्न जसु करइ सेव १२
निम्मज्ज भज्ज तसु हुय पवित्ति न कयावि सीलु जसु फुरइ चित्ति
उप्पन्नु पुत्तु तसु नामि पावु गय-सुकय भावु दुज्जण-सहावु १४
संजाय तासु धूया कुबुद्धि जसु दंसणि नासइ मण-विसुद्धि
तसु मिच्छदिट्ठि वइइ अमच्चु वज्जरइ जो न सुमिणे वि सच्चु १६
तसु पुज्ज पुरोहिउ[3] कुगुरु जाणि जो पावु करावइ ठाणि ठाणि
तसु पिसुण दुन्नि चर राग-दोस जसु सेवग वइइं सयल दोस १८

घत्ता

इय जण-मण-कंपणु पुहविहिं खंपणु जग-झंपणु परिवार-जुउ
दुज्जण-अग्गेसरु मोह-नरेसरु कुणइ रज्ज इग-छत्ति ठिउ ॥१९[4]

1. B सुणि 2. B नरइय 3. A परोहिउ 4. अंत A. B इति प्रथमोधिकारः ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२]

अह तत्थ भविय-अभविय-भिहाण सहवुड्ढिय-कीलिय वय-समाण
निवसंति दुन्नि मित्ता पहाण निय-कन्न दिन्न राएण ताण २
ते हट्ठ-तुट्ठ ठिय तासु संगि संचिंति पाव-भरु विविह-भंगि
नच्चंति मत्त इव विसय-रंगि मच्चंति अहिय दुज्जण-पसंगि ४
सेवंति वसण सत्त वि हसंत हिंसंति जीव विरसंत संत[1]
घण-कूड-कवड बुल्लइ असंत हिंडंत सयलु तिहुयणु मुसंत ६
मन्नंति तत्तु[2] मेहुन्न-सन्न कुव्वंति मुच्छ बहुविह अहन्न[3]
काऊण पावु पुण गहगहंति पर-वसणु दिक्खि तह कहकहंति ८
बहु-रोस-भरिय-तणु थरहरंति न य गम्मु अगम्मु वि परिहरंति
न य किच्चु अकिच्चु वि संभरंति न य राउल-वाइय-भउ धरंति १०
ते पुन्न-सुन्न घण-पाव-पुन्न किल मुत्तिवंत रक्खस उइन्न
जाणेवि 'राइ अन्नाय-सत्त नरयाइ-गुत्ति-मज्झम्मि खित्त १२
नियगाण वि जाणिउ गुरु अनाउ[5] वह-बंध-पमुह कारेइ राउ
अंगुट्ठ वि अप्पणु सप्प-दट्ठु छिंदिज्जइ किं न हु सडिउ दुट्ठु १४
ते सहइं तत्थ वेयण अपार कइया[6] वि कोवि नवि करइ सार
सा भज्ज वि तेसिं कुबुद्धि नामि खणमवि न हु मिल्हइ नियय-सामि १६
एगंति हकारिउ नियय-मित्तु जंपेइ अन्न-दिणि भविय-मित्तु
'सुहकम्म-नाम-नेमित्तिएण इम वत्त कहिय मह मित्तगेण' १८

घत्ता

तं वयणु सुणेविणु कन्नु[7] धरेविणु अभविउ पुच्छइ हरिस-जुउ
'सुहकम्म-सुजाणिण नाण-पमाणिण किसिय वत्त[8] सहि कहिय तुय' ॥१९[9]

[३]

अह भणइ भविउ 'इय भणिउ मित्ति "वहु तुम्ह एस विसकन्नग त्ति
पाविट्ठ दुट्ठ लक्खण-विमुक्क तुम्हि एह संगि निय सुक्ख चुक्क[10] २
ता [11]छड्डहु छड्डहु रंड एह जिम लुट्टहु तक्खणि गुत्ति-गेह"
मइं भणिउ मित्त रमणी-विहीण न वहंति गेह कहमवि गिहीण ४

1. A विरसं रसंत 2. B तनु 3. B अन्न 4. B राइअअन्नाइ 5. B अभाउ
6. B कया वि 7. B कन्न 8. B सहिय तुय 9. अंतः A B इति द्वितीयोधिकारः ॥
10. B. चक्ख 11. B. छड्डहु दुहु रमणि एह

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुण भणिउ तेण [1]लक्खण-सुजाणि "बहु एग अत्थि गुण-रयण-खाणि"
मइं पुच्छिउ "सहि सा कवण देसि वर-रमणि-सिरोमणिं छइ सुवेसि" ६
सा भणइ "अत्थि संजमभिहाणु वर-नयरु सयल-[ल]च्छी-निहाणु
पुढवाइ-भेय-रक्खण-समिद्ध जहिं सत्तर पाडय जग-पसिद्ध ८
सीलंग सहस निम्मल अढार जहिं धवल-गेह दीसइं सुसार
चुलसी य जत्थ आसण चहुट्ट तह विविह अभिग्गह विउल-हट्ट १०
जहिं सुगइ-पोलि तह समिइ-रच्छ निवसंति साहुजण जहिं अतुच्छ
जहिं सुमण-मणोहर चरण-भेय आराम-रम्म सोहइं अणेय १२
जहिं भावणा य जण-हरिय-चित्त नच्चंति रंगि नच्चिणि सुपत्त
आवस्सयाइं पासाय सिद्ध जइ-पडिम-सयं वर-वावि-सुद्ध १४
सुद्धावएस जहिं दाण-साल वर-दाण-सील-तव सर विसाल
गंभीरयाइ-गुण-समिय-दाह जहिं अगड उदय-संजुअ अणा(?गा)इ १६
जहिं तिन्नि-गुत्ति पायार चारु जहिं सुद्ध-झाणु जग्गइ तलारु
जहिं उग्गमाइं दोसा असेस चंडालउ व्व न लहइं पवेस १८
जहिं राग-दोस-विसयाइं[4] ते ण छुट्टंति दंडि मरणंतिएण
इंदिय जहिं तिहुअण-छलण-तुट्ठ धुत्तारउ व्व दंडियइं दुट्ठ २०
तहिं करइ [र]ज्ज सिरि-वीयराउ वयरोयण-मत्थइ देवि पाउ
गुणवंत-कंत तसु हुय निभत्ति मणि जासु अणोवम कंत-भत्ति २२
तसु पुत्त इगु वरु साहु-धम्मु तह अवरु सुसावग-धम्मु रम्मु
तसु हुअ सुबुद्धि-नामेण पुत्ति जगि भमइ अणग्गल जासु कित्ति २४
तसु सम्मदिट्ठि अइ निउणु मंति चउरा वि बुद्धि जसु मणि वसंति
तसु रज्जि संति गणहर पहाण सामाइ-भेय-सपमाण-जाण २६
अइसय गुण-सेवग भत्त तासु न कया वि जासु पर-राय-तासु
जइ वरउ तस्स सा तुम्हि कन्न ता तुम्ह मिल्हि नो अवर धन्न" २८

घत्ता

इय पर-उवयारगि कुमई[5]-निवारगि एह वत्त तिणि मूं कहिय
ता इउ पुरु मुंचवि निय-वहु वंचवि अणुसरोअइं जिणराय-पय' ॥२९[6]

1 B रवण्णु 2. A. शिरोमणि 3 'सुद्धो[व]एस.....संजुअ अणाह' सुधीनो पाठ B. मां नथी. 4. A विसयाय 5 B कुमय 6 अंतः A तृतीयोधिकारः॥ B. इति अभव्यं प्रति भव्य-मित्र-उपदेशदानो नाम तृतीयोधिकारः ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[४]

तं सुणिय वयणु अभविउ भणेइ 'ए वत्त न उत्तम तुह मुणेइ
मुहु अग्गलि किं हुअ तुह[1] न लज्ज असमंजसु पयडंतह अणज्ज २
अहवा न हु दूसणु तुज्झ एउ सुह-कम्म-पिसुणि पाडिउ विमेउ
पिसुणह अनु सप्पह एगु ढालु पर-छिद्दु लहिअ पवेसिइ कालु ४
दो-नयण-उवरि खलु तइउ नित्तु पिसुणह विहिं निम्मिउ किंपि गुत्तु
[2]जिणि पिक्खइ पर-दोस वि असंत नो विज्जमाण अप्पणं अणंत ६
दुज्जण अनु कंटय भणिय सत्थि दो चेव उवाया तइउ नत्थि
कइ किज्जइ खल्लइ मुहइ भंगु अहवा परिहरियइ दूरि संगु ८
विस-वयण विसम-गइ पिसुण दीह दोजीहह समहिअ लहइ लीह
लग्गेइ कन्नि अवराणमेव पाणेहिं विमुच्चइं अवर चेव १०
दुज्जण-जण वायस-तुल्ल-सिट्ठि पर-मंस-तुट्ठि कय-वंक-दिट्ठि
पामंति ताव न हु सुहु अणिट्ठ जा कुंथइं न हु पर-तंति-विट्ठ १२
अइ-निम्मले वि रयणम्मि खुद्द[4] मणियारउ व्व कि वि करइं छिद्द
तं चेव अवर सज्जण-सहाव पूरंति गुणेहिं महाणुभाव १४
वर-नयण-वयण सरला सुवेस घण-माय पिसुण-जण अहव(?)वेस
ता चेव हरइं पर-मणु अबुज्झु जा चेव न लब्भइ ताण मज्झु १६
मिल्हेवि करहु जिम खीर-रुक्ख कंटालएसु मुहु खिवइ मुक्ख
परमन्नु पुर-ट्ठिउ मिल्हि साणु मुहु वल्लइ विट्ठहं जिम अयाणु १८
मुंचेवि नइ-ट्ठिय-दिट्ठि(?)वारि जिम रासहु न्हाअइ मलिण-छारि
तिम मिल्हवि गुण जण-जणिय-तोस पयडंति दोस दुज्जण सरोस २०
जइ जंति घल्लि[उ] किअउ चूरि कढि[ण]त्तणु तह वि हु धरइ भूरि
उत्तरइ नेहु तह तसु उवाइ नो सहजु(?णु) कहवि मिल्हणउं जाइ २२
सइ गंथि वेदि आगम-पुराणि जं अत्थि निसिद्धु अणेग-ठाणि
निय-सामि-भज्जं[5]-देसाण चाउ सो अम्ह करावइ पयड-पावु २४
निय-सामि-दोह-वंचण-करस्स नरए वि ठाणु नत्थि हु नरस्स
सयलाण सुद्धि हुइ [6]पावगाण न य पायछित्त [7]पहु-वंचगाण २६

1. B नज्ज 2. B जिण 3. B अप्पणु 4 B खडु 5 B भज्जा 6 B एवगाण
7 B एहु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जसु वसिउ छत्त-छायाहे हिट्ठि रुट्ठस्स वि दिज्जइ तसु न पिट्ठि
जहिं चेव रोसु तहिं चेव तोसु जलु जत्थ तत्थ पंकु वि असोसु २८
तह न विसकन्न निय-भज्ज एह जा कामिणीसु पावेइ रेह
जसु संगमि अप्पणि काम-भोग चिरु लद्ध लहउं लहिसु असोग ३०
जइ आवय आवइ दिव्व-जोगि ता कवणु दोसु परियणि स-सोगि
जइ रज्ज चुक्कु[1]नलु जूय रमेवि ता किं सु दोसु दमयंति देवि ३२
तह जम्मु लहइ जहिं कुक्कुरो वि तं ठाणु न छड्डइ तिरिउ सो वि
जहिं वसइ सयणु परियणु असेसु मिल्लियइ कोम सो नियय-देसु ३४
वरि मरण वि सुंदरु निय-निवेसि रज्जं पि नेव पुणु अवर-देसि
ते राम-कन्ह बलवंत भाय नियय-देस-भट्ठ निहणं गया य' ३६

घत्ता

इय कोविहिं जुत्तह अभविय-मित्तह वयणंतरि पभणइ भविउ
'अभविय नियय-वयणहं सुह-वण-दहणहं सुणि उत्तरु कमि कमि सहिउ ॥३७[2]

[५]

जं जंपिउ तइं मुअ अभिनिवेसि असमंजसु किल पयडीकरेसि
तं सव्वु जेण जसु असमु लोइ सुह-कम्म-पसाइण[3] पयडु होइ २
सुह-कम्म-मित्तु सज्जणु सुकित्ति तइं दुज्जणि दुज्जणु गणिउ चित्ति
चिंतामणि निम्मलु जो अमुल्लु आभीरं[4] सु मन्नइं काय-तुल्लु ४
गुण लहइं गुणत्तणु सगुण पासि ते चेव दोस निग्गुण-निवासि
नइ-अमय-तुल्ल-जल विविह-भेय जलरासिहिं संगमि हुइं अपेय ६
किं किज्जइ तेण वि सामिएण दुह लब्भइ जेण निसेविएण
किं कज्जु तेण भण कंचणेण जिणि कन्न-छेउ हुइ परिहिएण ८
गय-नायह रायइ तणइ गामि खणमवि न हु वसियइ पाव-ठामि[5]
वरि कालु गमिज्जइ रन्नि सुत्त वरि सुन्न साल न हु चोर जुत्त १०
परिहरिय रज्जु निय-भायरा य भत्तिहिं सेवंतइं राम-पाय
अह दुल्लहु अवि लंकाहिवत्तु जस-सहिउ विभीसणि किं न पत्तु १२

1. B. रज्जबहु 2 अंतः-A चतुर्थोधिकारः ॥ B. ॥ इति सकोप–अभव्य–उपदेश-वचन–रूपो नाम चतुर्थोधिकारः ॥ छ ॥ 3. B पसायण 4. B आभीरि 5. B ठाणि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहिं होइ वसंतह मण-किलेसु उज्झियइ झत्ति मल इव सु देसु
एसु अ सदेसु इउ पुण विदेसु उत्तम-मणि न वसइ एहु रेसु १४
वसुदेव-कुमरि मिल्हिय-स-देसि भण कित्तिय परिणिय कुडिल-केसि
निय-ठाण-भट्ठ किम कुसुममाल निव-सीसु न पावइ गुण-विसाल १६
सरि सुक्कइ सुचरण वर वयंस उड्डेवि पत्त पर-तीरि हंस
तहिं चेव मरणु हुय मच्छयाण [1]ए हेउ देसु अचयंतयाण[2] १८
जं भणिउ तुम्हि वहु न विस-कन्न तं जुत्तु जेण एसा अकन्न
जे करइ संगु एहह अपुन्न तेसिं पि हु मत्थइ नत्थि कन्न २०
ता मिल्हवि मोह कुराउ हेव सहि किज्जइ अप्पणि जिणह सेव
जइ लब्भइ चडणउं गय-वरम्मि ता चडइ कवणु पंडिउ खरम्मि' २२
इत्थंतरि जंपिउ अभविएण गुरु-रोस-रत्त-लोअण-जुएण
'पभणंतु सदूसणु निय-कुडुंबु तुह मिल्हि अवरु इह नत्थि डुंबु २४
तं नत्थियवाइउं विहिउ तेण जण-णीइ विडंबसि वय-बलेण
सा पुण अईव-सुकुमाल-काय न सहइ घण-कक्कस-[4]तक्क-घाय २६
थंभो वि पुरिसु पुरिसो वि थंभु वाई-जण थप्पइं पयड-दंभु
अणयारओ[5] वि आयार-सुट्ठु आयारु वि पोसइं इयरु दुट्ठु २८
जिम भद्द अभद्द वि भणिय विट्ठि जिम वंकु वि मंगलु कूर-दिट्ठि
तिम तुम वि नाम-मित्तेण भव्वु[6] पुण चिट्ठिउ सयलु वि तुह अभव्वु' ३०
अह चिंतइ भविउ विसन्न-चित्तु 'विणु कुड्डु न लग्गइ [7]कहवि चित्तु
इय दुलिय गलइ उवएस-खीरु जिम भरिय-कुंभ-उप्परिहिं नीरु ३२
मूढम्मि दिन्नु उवएस-दाणु बहु-कलह-हेउ हुइ विस-समाणु
जिम डुंबिय-सप्पह दुद्ध-पाणु केवल विस-वुड्ढिहिं हुइ नियाणु ३४
अणुचिउ विवाउ सह-मूढएण जिम कट्ठ-चडणु सह-कोढिएण
उज्झेविणु तेण [8]वितंडवाय हिव अणुसरउं जिण-राय-पाय' ३६

घत्ता

इय मणि[9]चिंतेविणु मूनु करेविणु जा चलइ सो जिण-दिसहिं
ता भणइ विच्छाइअ अग्गलि थाइय कुमइ लित[10]इव घण-मिसिहिं ॥३७[11]

1. B देउ 2. A अचयंताण 3. B. वाईउ 4. B. तकघाय 5. B. विआर सुद्ध 6. B. भद्दु 7. B. केहवि 8. B. वितुंडवाय 9. B. मण 10. A वयण० 11 अंतः A. पंचमोधिकार : ॥ B. ॥ इति अभव्यं प्रति भव्य-उत्तर-प्रदानो नाम पंचमोऽधिकार : ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[६]

'मइं विलवमाण मिल्हवि अणाह कहिं वच्चसि भण [1]तं पाणनाह'
'म म करि असउणु रे रे कुभद्दि इणि अप्पणि रासह-तुल्ल-सद्दि' २
'मइं किद्धउ सामी कवणु दोसु जिणि फुरिउ तुम्ह एवडु पओसु'
'तुइ दूसण गणियइं कित्तियाइं जिम घण-तिल-वट्टिहिं कालयाइं' ४
'सवि दोस खमावउं पडिय पाइ पाणेसर रुट्ठउ पुणु म जाइ'
'आगइ करि लग्गीइं तइं विगुत्तु हिव होइसु न हु एगि निगड-जुत्तु' ६
'हउं आविसु सरिसी करण-विट्ठि वसणे वि न छड्डिसु[2] तुम्ह पिट्ठि'
'तइं ताविउ मह मणु हियइ लग्गि हिव पिट्ठि म जालिसि पयड-अग्गि' ८
'खणमवि न हु जीविसु तुइ विहीण जल-हीण जेम जलहीण मीण'
'तिणि दिवसि फलिय मह सयल पुन्न संभलिसु जत्थ हउं तइं विवन्न' १०
'मइं कियउ कवणु अवराहु नाह तुम्हि भणउ जेण इत्तिय विदाह'
'तइं दुट्ठि विगोइउ बहु-विसाउ हउं जिम धूलहडिय[3] तणउ राउ' १२
'विय-सयण-सक्खि परिणिय ज इत्थि तसु छड्डणु कहिउं[4] कवणि सत्थि'
'छड्डीयइ नारि संजुय कलंकि पिउवणह घडो जिम मणि असंकि'[5] १४
'परिहरिय सीय लोआवसद्दि घण-पच्छयावु किउ रामभद्दि'
'सा आसि अदूसण दिव्वि[6] सुद्ध तउं पुण बहु-दूसण अइ-कुसुद्ध' १६
'हउं निक्कलंक मणि सुद्ध देव जं भणसि दिव्वु[7] तं करउं हेव'
'तउ सुद्धि होइ तुइ दुट्ठ नारि जइ पविसइ झाणानल-मझारि' १८
'किं मुअउ मोहु महु ताउ तेउ जिणि[8] मुज्झ कराविसि दिव्वु[9] एउ'
'जीवंतउ [10]वि सो मुयउ जाणि जसु कुलि उप्पन्नी तउं कुनाणि' २०
'जइ एहु वयणु सुणिसिइ सु मोहु तउ करिसिइ तुह पाणहं विछोहु'
'जाएवि लवसु निय-पियर-पासि इह पुणु पुणु म लविसि दुट्ठ[11] दासि' २२
'निच्छइं परिवट्टिउ[12] तुह सहाउ तिणि मन्नउं आविउ नियडु आउ'
'आउ त्ति-लाहु पभणिउ सुअम्मि सो मज्झ नियडु हिव तुइ खयम्मि' २४
'निदइ अनु निम्ममु अइमु लोइ तुइ सरिसउ दिट्ठउ मइं न कोइ'
'इह मेडि म मंडिपि रंडि चंडि तुइ होसिइ नासा-कन्न-खंडि' २६

1. B. तुं 2 B. छडिसु 3. A. धूलहडीय 4 B. कहिअं ५. B. असंखि 6. B. दिवि 7 B. दिवु 8 A. तन्तु करा० 9. B. दिवु 10. B. विस्सासुय जाणि 11 B. ०सि दूठदूठ 12. B. ०वड्डिढउ

'कुल-गंजणकर जाएसु तेम इह दुट्ठ न आविसि वलिय जेम'
'अरि रासह-मुहि नीसरि अवेहु हिव होसिइ आवागमण-छेहु' २८

घत्ता

इय सोगिहिं दुत्थिय बहु गल-हत्थिय संपत्तउ जिण-पुरि भविउ ।
पडिहारि-विवेगिहिं जिण-निवु वेगिहिं भिट्टाविउ संथुणइ तउ ॥२९[1]

[७]

'दसहिं दिट्ठंत-जोएहिं तं सामिउ देव सुह-कम्म उवएसि मइं पामिउ
सरणपत्ताण सत्ताण ताणण-परो तुज्झ विणु नत्थि भुवणम्मि जिणवर परो २
पयड-दोहेण मोहेण संताविओ नासिविणु तुज्झ सरणम्मि हउं आविओ
देव ताएसु पाएसु पडियं जणं कुणसु पहु मोह-भड-दप्पभर-भंजणं ४
नाह निन्नाहु मोहेण हउं लद्धओ निविड-घण-कम्म-बंधेण अह बद्धओ
जंति घल्लेवि तिल-रासि जिम पिल्लिओ निरय-नामम्मि अह गुत्तिहरि घल्लिओ ६
संति जहिं विउल अइ-घोर-अंधारया सत्त धम्माइ संतत्त वक्खारया
तउ य अइ-उन्ह-रस-भरिय-कुंभीसु हं खिविउ विलवंतु[3] तहिं हिट्ठ-मुहु अइ[4] दुहं ८
तिक्खतर-सूलिया-उवरि आरोविओ मंस-भक्खीहिं पक्खीहिं रोआविओ
चुन्न जिम कठिण-सिल-वट्टि हउं वट्टिओ दीण-मुहु वच्छ जिम कप्पणी-कट्टिओ १०
छुहिउ पभणंतु निय-मंसु खायाविओ नीरु मग्गंतु निय-रुहिरु पीयाविओ
सहिउ जं दुक्खु मइं सामि तहिं ठाणए तं च सव्वन्नु तउं सयलमवि जाणए १२
खिविउ अह तिरिय-गइ-नामि कारालए जत्थ वह-बंध-दुह कोवि न हु टालए
पिट्ठि-खंधेहिं जहिं भार-भर-वहणयं तिन्ह-छुह-ताव-सीयाइ-दुह-सहणयं १४
अह कुदेवत्त-रूवम्मि गुत्तीहरे खित्तु तहिं पत्तु अवमाणु पय-पय-भरे
कढिण-वयणेहिं सुर-वग्गि हउं हक्किओ भणवि चंडालु निय-नयर-बाहिरि किओ १६
गुत्तिहरि खिविउ कुनरत्त-गइ-नामए जत्थ न कयावि जिउ किमवि सुहु पामए
तत्थ सोवाग-तेणाइ-जाईसु हुं फेरिओ तेण मोहेण विनडिओ बहुं १८
[5]कुट्ठ-जर-खास-घण[6]-सोस-कट्ठोअरा कन्न-नह-मूल-वण वायवा ओअरा
एवमाइउ वाहीउ बहु-जाइया तत्थ दुट्ठेण तिणि मज्झु उप्पाइया २०

1 अंतः—A.॥ षष्ठोधिकारः ॥ B. इति कुबुद्धि-भव्यजीव-विवादो नाम षष्ठोधिकारः ॥
2. B. हुं 3. B. तहं 4. B. अनइ 5. B. दुट्ठ 6. B. मास कट्ठोरया

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जस्स सत्थे वि [1]ने नियाणु वन्निज्जए विविह-विज्जेहिं जसु नामु न मुणिज्जए
तेण केणावि रोगेण हउं पीडिओ तुज्झ सरणम्मि संपत्तु दुह-भीडिओ २२
एह समु अवरु इहं रोगु न सुणिज्जए विज्जु अणवज्जु न य तुज्झ समु विज्जए
देसु उवएसु अवणेसु रोगं इमं मा विलंबेसु विरएसु पहु उवकमं' २४
भणइ जिणु 'सुमइ-नामं तु सुह-संभवं भविय परिणेसु तउं मज्झ अंगुब्भवं
जासु संगेण रोगस्स जणओ वि सो पभवए मोहु नवि सप्पु जिम निव्विसो' २६
[2]इह अनु विज्ज-उवइट्ठु मन्निउ तयं परिणए भविउ सुमइं तु गुणवंतयं
सयल-सयणेहिं किउ वर-विवाहूसवो हुअउ पुरि सयलि तहिं धवल-मंगल-रवो २८

घत्ता

अह तेण अनाणिण [3]कुमइ-पमाणिण जिम जिम पुव्विहिं पावु कियं
बहु सुमइ-पसंगिहिं भवियणु रंगिहिं करइ सव्वु विवरीउ तयं ॥२९

[८]

अह कुमइ जाइ निय-ताय-मूलि रोयंत भणइ जिम हुय तिसूलि
'हउं भविय णिछड्डिय गुण-पभूय तिणि वीयराय [5]निव वरिय धूय' २
तसु वयणि रोसि धमधमिउ मोहु हुउ[6] सयल-सहा-जण-माहि खोहु
इत्थीजणु सयल-विरोह-कंदु इणि कारणि पभणइ जिणवरिंदु ४
तिय-लोयह कंटउ जग-विख्खाय बलवंत वि रावण-पमुह-राय
महिला-जण-कारणि ते विनट्ठ तह इह पर-लोइय-सुक्ख-भट्ठ ६
'अरि कवणु सु भणियइ वीयराउ मइं हुंतइं हुउ जो वीयराउ
अरि नत्थि कोवि किं सुहडु मज्झु जो करइ अंतु तसु करिवि जुज्झु' ८
पीसंतु दंतु पिक्खेवि मोहु उट्ठेविणु जंपइ कोह-जोहु
'मइं जीवमाणि तुह कवणु सत्तु जिणि खित्तु नरगि मइं बंभदत्तु' १०
माणेण सहिउ जंपेइ माणु 'संभलि मूं सामी हेव पमाणु
बाहुबलि थंभिउ मइं पमत्तु वरिसंतु जाव तिम उद्दढ-गत्तु' १२
मायाविय माया वि पभणेइ 'सो कवणु अत्थि जो मइं जिणेइ
साहम्मिउ एहह मल्लि-सामि महिलत्तणि आणिउ मइं स-ठामि' १४

1. B. म 2. B इ...अभु 3. B. कुमए 4. अंतः A. सप्तमोधिकारः ॥ B. ॥ इति भव्यजीवकृत वीतराग-स्तव-सुबुद्धि-पाणिग्रहणो नाम सप्तमोऽधिकारः ॥ 5 B नियव वरीय 6 B. हुउं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लोहेण वि जंपिउ कंपिऊण 'मह सुणह परक्कमु करवि मूण
मइं नासिउ कोणिउ चंडु राउ मउं कवण मत्त पुण ए वराउ' १६
कंदप्पु भणइ पयडंत दप्पु 'नीसत्त तुम्हि सवि करउ चुप्पु[1]
हउं हणिसु ते उ जिम गरुडु सप्पु [2]मउं अग्गलि संघइ कवणु कप्पु' १८
इंदिय पभणइं 'करि सामि कज्ज(ज्ज) होहामु अणिंदिय अम्हि अज्ज(ज्ज)'
मग्गंति हत्थ जोडिवि पमाय 'अम्हे पहु लेसिउं पहिल घाय' २०
जंपंति विसय भय-भंति-चत्त 'तिणि मिलियइं कहिसुं सव्वि वत्त'
नव नोकसाय बुल्लहं सताण 'सकसाय अम्हि तसु हरउं पाण' २२
उवसग्ग-परीसह कहण लग्ग 'रणखित्ति न केण वि अम्हि भग्ग'
इय सुणिवि सुहड रिवु हणण-सक्क मोहेण वजाविय गमण-ढक्क २४
अट्ठ वि मय-मयगल गुडिय मत्त कुमणोरह-रह बहु-वेगि जुत्त
पक्खरिय आस मण-वेग-तुल्ल संनद्ध-बद्ध हुअ सुहड-मल्ल २६
संचलिउ मोहु निय-बलि समग्गु छाइउ रएण आयास-मग्गु
निय-विसय-संधि जाएवि सिन्नि आवास दिन्न बहु-मग्ग-खिन्नि २८

घत्ता

सिरि-जिणवर-रायह मुक्क-विसायह सेण वि अभिमुह संचलिय
रण-समउ पडिक्खइं सत्थ निरिक्खइं सीमा-संधिइं दल रहिय[3] ॥३०

[९]

जिण-मूलि पत्तु अह मिच्छ-मंति पभणइ 'हउं पेसिउ नीइवंति
तुह पासि संधि-करणट्ठि मोहि तुह कवणु कज्ज कं घइं विरोहि २
दिणि दिणि मह निंदसि जं सगव्वु तं खमिउ अम्हि पुण अप्पि भव्वु'
इणि अवसरि पभणिउ सम्म-मंति 'तुह सामि कडक्खिउ खलु कयंति ४
सो नीइवमिउ तइं भणिउ जुत्तु जिण-पासि पडिउ तह तुम वि मत्तु
खमवंत तुम्हि जिणि हीण-सत्त बहुखम नामं तु असज्ज पत्त ६
जिणु अप्पइ न हु निय-सरण-पत्तु तं करउ तुम्हि जं तुम्ह जुत्तु'
अह कहिउ तेण तं मोह-अग्गि उप्पडिय वेगि[4] फुड सुहड-वग्गि ८
अह खवग-सेणि-रणतूर-भार जिण-सत्ति-अणाहय-सद्द-फार
भरि अंबर वज्जिय अइ-गभीर तिणि कंपिय सयल वि मोह वीर १०
जा वज्जिउ[5] तहिं संगाम तूरु ता मिलिय दुन्ह-वाहिणीइ पूरु
तहिं [6]झिल्लइं रंगि कसाय धीर घण-रोस-ताव-संकुल-सरीर १२

1. B चुन्नु 2. B मूउं 3. अंतः A. इति अष्टमोधिकारः ॥ B. इति मोहसेना-जिनसेना-चलनो नाम अष्टमोऽधिकारः ॥ 4. B. वग्गि 5. B. वजिउ 6. B जिल्लइं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निट्ठविउ कोहु तहिं[1] उवसमेण   गय-पाणु माणु किउ मद्दवेण
जंस-सेस[2] माय किय अज्जवेण   संतोसि लोहु निहणिउ जवेण १४
संवेग-सुहडि नासिय पमाय   तसु मरणि पलाइउ नो-कसाय
कंदप्पु हणिउ सीलेण वेगि   हय राग-दोस तक्खणि विवेगि १६
वेरग्गि समिय तहिं सुनीइ[3]-लग्गि   अवसेस सुहड जिम नीरि अग्गि
निय-[4]सिन्न-विणासणि फुरिय-कोहु   रणि चडिउ [5]जिणग्गलि भणइ मोहु १८
'इह वट्टमाणि मह सज्जि रज्जि   तइं छत्तु उठाइउ कवण कज्जि
खय-कारणु तुह उदउ वि एउ[6]   पंखागमु कीडिय अंत-हेउ' २०
जिणि भणिउ 'नासि मिल्हिवि[7] पएसु   हुइ रंक-रोसु खलु पाण-सोसु
मइं हणिउ तुज्झ मण-नामु ताउ   हिव फेडिसु जगि तुह मोह [8]ठाउ' २२
इणि वयणि कुवि[9]उ निवु मोह-मल्लु   झुज्झण-संलग्गउ ति-जग-सल्लु
जिणि झाण-खग्गि गय-उत्तमंगु   किउ वेगि लहइ सो कुमइ[10]-संगु २४
तसु सोगि सहोयर अवर सत्त   अइ-दुट्ठ-कम्म पाणेहिं चत्त
तं पिक्खि कुबुद्धि वि भीय-चित्त   नासेविणु अभविय-सरणि पत्त २६
तक्खणि जिणु केवलि विमल-नाणु   झलहलिउ जेम घण-मुक्कु भाणु
जय-जय-रव-संजुय कुसुम-वुट्ठि   किय तसुवरि सुरवर-वग्गि तुट्ठि २८
जय-तंबग वज्जिय जिणिय-घाय[11]   संजम-पुरि उब्भिय जय-पडाय
जिणु मग्गिउ भवियणि भट्टि झत्ति   'भवि भवि [12]मइ देज्ज सुपइ पत्ति' ३०
जिणि रज्जि ठविउ निय-पढम-पुत्तु   अवरो वि हु [13]जुव-निव-पइ निउत्तु
अप्पणि जो पत्तउ सिद्धि-ठामि   सो संघह मंगलु दिसउ सामि ३२
इय अंतरंग-सुवियार-संधि   चिंतंतु न बज्झइ कम्म-बंधि
सुह-झाणह चित्तह करइ संधि   तिणि कारणि भणीयइ एह संधि ३४

घत्ता

अहि-अंतह कारणु विस-उत्तारणु जंगुलि-मंतह [14]पढणु जिम
कय-सिव-सुह-संधिहि एह सु-संधिहिं चिंतणु जाणउ भविय तिम[15] ॥ ३५

1. B. तिहिं 2 B. जंस 3. A. समीइ 4. B. सत्ति ५. B जणग्गलि 6. A. एहु 7 B. एउसु 8. B. राउ 9. B. कुविय 10. B कुगइ 11. B. घाण 12 B. मइउं दे जेम सुपत्ति 13. B. हुव 14 B गहणु 15 अंत : A इति अंतरंग संधिः समाप्तः ॥ इति नवमोऽधिकारः ॥छ॥ संवत १३९२ वर्षे आषाढ सुदि गुरौ ॥छ॥ ग्रंथाग्रे श्लोक २०६ श्री धर्मप्रभसूरि-रत्नप्रभकृतिरियं ॥छ॥ B. ॥ इति मोहसेना-पराजयः जिनसेना-विजयो नाम नवमोधिकारः ॥ इति अतरंग-संधि समाप्ता ॥ कृतिरियं पं० रत्नप्रभगणीनां ॥छ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३. केसी–गोयम–संधि

[कर्ता : अज्ञात रचना-समय : ई. स. १४०० पूर्व, लेखन–समय : ई. स. १४१७]

ध्रुवक

अत्थि पसिद्ध सुद्ध-सिद्धंते कहिउ जु उत्तरझयणि महंते
केसी-गोयम[1]-धम्म-विचारू संधि-बंधि सु [2]कहिज्जइ सारू ॥१

[१]

आसि पास-जिण [3]भवण-पसिद्धउ तास सीस [4]चहु नाणि समिद्धउ
केसिकुमारु समणु मुणि-जुत्तउ सावत्थी[5] तिंदुगवणि पत्तउ २
अनु सिरि-वीरह सीस पहाणू सुय-केवलि गोयम[6] जग-भाणू
[7]बहु-परिवार वसुह-विहरंतउ तहि पुरि कुट्ठग-वणि संपत्तउ ४
नयरि बिहूं पखि मुणि विहरंता पिक्खि परुप्पर मणि संभंता
जाणवि गुरु वय-वेस-विसेसू अक्खइं निय-निय-गुरुहं[8]असेसू ६

घत्ता

तो नाण-पमाणी[9] कारण जाणी सोसहं संसय हरण-कए
वय-जिट्ठ गणेवी[10] लाभु मुणेवी केसि-पासि गोयमु वयए[11] ॥७

[२]

गोयमु सीस-संघ-संजुत्तउ केसी पिक्खेविणु आवंतउ
कुस-तिण-आसण आदरि देई विणउ करी गोयमु बइसेई २
दो-वि मुणिंद पसम-रसि भरिया नियं-निय-मुणि-मंडलि परिवरिया
ससि-रवि-सरिस-तेय ते सोहहिं निम्मल-नाण-गुणिहिं जगु मोहहिं ४
बि-पख मिलिया पिखेविणु लोया कोऊहलि आवहिं सपमोया
'बिहुं पखि होस्यइ[12] वादु' इसउं भणि गण-गंधव्व मिलिय गयणंगणि ६
तो मुणि-संसय-भंजण-रेसी कर जोडेविणु पभणइ केसी
'महाभाग गोयम गुण-रासे [13]हउं काइं पूछउं तुम्ह-पासे ८

---

1 B गोअम 2. A कहिजइ सारु 3 B भुवणि पसीधउ 4 B बहु० 5 B सावत्थिहिं 6 B जगि 7 B बिहु पक्खवीर वसुहि 8 A गुरह 9 B पहाणी 10 A जिडमगणेवी 11 B वयइ 12 B होसिइ 13 B हुं कांइं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

[1]तो गोयम वुच्चइ 'जं तुहु रुच्चइ तं पुच्छेह भदंत लहु'
तं निसुणि महेसी [2]पभणइ केसी विणय-धम्म पयडंत बहु ॥९

[३]

'[3]चारि महावय पासि पयासिय ते इ जि पंच वीर-जिणि भासिय
काजु तु एकु मुक्ख साहेवउं किणि कारणि बिहुं [4]मागि वहेवउं' २
'रिसह-कालि जिय रिजु-जड हूंता मज्झिम पुण ऋजु-पन्न महंता
संपइ ते वंकुड-जड गणियइ तिणि कारणि बिहुं परि वय भणियइ ४
ऋजु-जड धम्म [5]दुहेलउ लक्खहिं वंकुड-जड [6]दुख-लक्खिहिं रक्खहिं
मज्झिम-कालि[7] जीव रिजु-पन्ना [8]सुखि लक्खहिं सुखि रक्खहिं धन्ना' ६
'साहु साहु गोयम तुह पन्ना एह भंति मह चित्तह छिन्ना
[9]अन्न वि एक अत्थि संदेहू तं पि हु गोयम [10]माझु कहेहू' ८

घत्ता

तो गोयम वुच्चइ 'जं तुह रुच्चइ तं पुच्छेह भदंत लहु'
तं निसुणि महेसी पभणइ केसी विणय-धम्म पयडंत बहु ॥९

[४]

'एकु [11]जहिच्छा-वेसु [12]वहिज्जइ अवर पमाणोपेतु [13]कहिज्जइ
चरण चरंतह नत्थि विसेसू किणि कारणि किउ बिहुं परि वेसू' २
'[14]जिह तणउं मन निच्चल होई तिह[15] मनि वेस-विसेसु न कोई
जे चल-चित्त कया-वि चलंते ते वि हु वेस-विसेसि वलंते ४
निच्चल-मन भरहेसर-राओ विणु मुणि-वेसह केवलि[16] जाओ
पसनचंद जो[17] झाणह चलियउ वेस विसेसु देखि सो[18] वलियउ' ६
'साहु साहु गोयम तुह पन्ना एह भंति मह चित्तह छिन्ना
अन्न वि एक अत्थि संदेह तं पि हु गोयम माझु कहेहू' ८

घत्ता

तो गोयम वुच्चइ 'जं तुहु रुच्चइ तं पुच्छेह भदंत लहु'
तं निसुणी महेसी पभणइ केसी विणय-धम्म पयडंत बहु ॥९

1 B तं 2 B पूछइ 3 A च्यारि महव्वय 4 B मानि 5 B दोहेलइ लक्खइ 6 A दुक्ख रक्खहि लक्खहि । 7 A जिउ रुजु 8 B सुख रक्खिहिं 9 A अनु 10 B मज्झ 11 B. जहिइच्छा 12 A. वहीजइ 13. A. कहीजइ 14. A. जीह 15. A. तीह 16. A. केवलु 17· A. जउ 18. A. जो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[५]

'गोयम सत्तु-सेणि धावंती दीसइ [2]तुम्ह-भणी आवंती
सग्गि मच्चि पायालि [3]वदीती सा तइं एक्कलडइ किम जीती' २
'एकि पांच पांचइ[4] दस पाडिय दस जिणि सेस-सत्तु निद्धाडिय'
केसि कहइ 'रिपु किसा कहीजइं' तो गोयम-गुरि ते पयडीजइं ४
'जे कसाय इंदिय-रिउ भणियइं [5]इक मनि जीतइ ते सवि जिणियइं
जं मण-[6]विणु बहु बंध न लागइं जिम बिहुं भाई[7] सुणियइ आगइं' ६
'साहु साहु गोयम तुह पन्ना एह भंति मह चित्तह छिन्ना
अन्न वि एक अत्थि संदेहू तं पि हु गोयम माझु कहेहू' ८

घत्ता

तो गोयम वुच्चइ 'जं तुहु रुच्चइ तं पुच्छेह भदंत लहु'
तं निसुणि महेसी पभणइ केसो विणय-धम्म पयडंत बहु ॥९

[६]

'पास-बंधि [8]बांधिउ इह-लोगो दीसइ [9]दीण निहीण स-सोगो
सो तइं पास-बंध किम छिंदिउ[10] जं [11]तुहु दीसइ मन[12] आणंदिउ' २
'पास-बंध मइं मूलह तोडिउ आपणउं आपइ जु[13] विछोडिउ'
'पासु किसउ' केसी इम भासइ [14]तउ गोयम गुरु तं जि पयासइ ४
'मोह-पास पसरंत सिणेहू वर-वेरग्ग-खग्गि छिंदेहू
मोहबद्ध [15]जाणंतउ मूझइ बंभदत्त जिम किम-इ न[16] बूझइ' ६
'साहु साहु गोयम तुह पन्ना एह भंति मह चित्तह छिन्ना
अन्न वि एक अत्थि संदेहू तं पि हु गोयम माझु कहेहू' ८

घत्ता

तो गोयम वुच्चइ 'जं तुहु रुच्चइ तं पुच्छेह भदंत लहु'
तं निसुणि महेसी पभणइ केसी विणय-धम्म पयडंत बहु ॥९

[७]

'देहुब्भव विस वेलि महंती तिहुयण-तरु-छाए [17]विहरंती
विसमय-फल-दल-कंदल-मूली सा तइं गोयम[18] किम [19]ऊमूली' २

1. A. सेणि 2. B. तुज्झ 3 A विदीती 4. B. पांचे 5. B. इकि 6. A. विहु 7. A. भाइय 8. A. वधउ यहु 9. B. हीण 10. B छेदिउ 11. B तुम्ह 12. B मनि 13. B जि 14. B. तु 15. B जाणंत न मू० 16. B सूझइ 17. A. विरहती 18. A. केम 19. B. उम्मूलीय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'मइं विस-वेलि-मूल खणि सोहिउं [1]तउ हउं तसु विस-वाइ न मोहिउ'
'वेलि किसी' इम पूछइ केसी [2]तउ गोयम-गुरु कहइ सुहेसी ४
'भव-तण्हा विस-वेलि भणीजइ विसय-मूलु संवेगि खणीजइ
जं जगि विसय-पिवासा नडिया दो-वि सुवन्नकार भवि पडिया' ६
'साहु साहु गोयम तुह पन्ना एह भंति मह चित्तह छिन्ना
अन्न वि एक अत्थि संदेहू तं पि हु गोयम माझु कहेहू' ८

घत्ता

तो गोयम वुच्चइ 'जं तुहु रुच्चइ तं पुच्छेह भदंत लहु'
तं निसुणि महेसी पभणइ केसी विणय-धम्म पयडंत बहु ॥९

[८]

'जाल-कराल जलइ जा अग्गी संतावइ देहंतरि[3] लग्गी
सा तइं गोयम [4]किम उल्हाविय जं तुह तणु दीसइ अण-ताविय' २
'सा मइं[5] मेह-नीरि निव्वाविय तउ तिणि मह तणु न हु संताविय'
भणइ केसि 'के पावग पाणी' गोयमु कहइ अमियमइ वाणी ४
'कोव-जलणु जिण[6]-जलहर-[7]वाणी जाणेविणु[8] सुय सीयलु पाणी
कोवि जलंतु खवगु [9]अहि थाई नागदत्तु उवसमि सिवि जाई' ६
'साहु साहु गोयम तुह पन्ना एह भंति मह चित्तह छिन्ना
अन्न वि एक अत्थि संदेहू तं पि हु गोयम माझु कहेहू' ८

घत्ता

तो गोयम वुच्चइ 'जं तुह रुच्चइ तं पुच्छेह भदंत लहु'
तं निसुणि महेसी पभणइ केसी विणय-धम्म पयडंत बहु ॥ ९

[९]

दूढमु दुट्ठ तुरंगम [10]अच्छइ माग मेल्हि[11] उमागि जु गच्छइ
गोयम[12] तेणि तुरंगमि[13] चडियउ तुहु कहि केम उमागि न पडियउ' २
'मइं सु तुरंगम दमि वसि कीधउ तउ[14] हउं तीणि उमागि न लीधउ'
'आसु[15] किसउ' केसो पूछेई [16]तउ तसु गोयम ऊतर देई ४

1. B. तु हुं तिणि विसमाइ 2. B. तो गुरु गोअम कह० 3. B. ०तर 4. A. केम 5 A. मह 6. B. जिभ 7. A. ठाणी 8 B. जाणेवउ 9. B. णमाई 10. A. अछइ 11. B. उम्मग्गि जि 12. B. तीणि 13. B. चडिउ, तुं कहि किम उम्मग्गि न पडिउ 14. B. हुं तीणि उम्मग्गि 15. B. किसु 16. B. तु तिम गोअम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'चंचल चित्त[1] तुरंगम जाणउ सो-इ जु एकु दमी वसि[2] आणउ
रामि दमी[3] मनु तिम वसि कीधउ [4]जिम सीतेंद्रि उमागि न लीधउ' ६
'साहु साहु गोयम तुह पन्ना एह भंति मह चित्तह छिन्ना
अन्न वि एक अत्थि संदेहू तं पि हु गोयम माझु कहेहू' ८

घत्ता

तो गोयम वुच्चइ 'जं तुह रुच्चइ तं पुच्छेह भदंत लहु'
तं निसुणि महेसी पभणइ केसी विणय-धम्म पयडंत बहु ॥९

[१०]

दोसहिं माग अणेग अतुल्ला [5]जेहिं जीव [6]भवि भमडइं [7]भुल्ला
नय निय मागु भलउ सवि [8]बोलहिं गोयम किम तुहु तेहिं न डोलहि[9] २
'माग-कुमाग सवे[10] हउं जाणउं [11]मेल्हि कुमाग सुमाग वखाणउं'
'मागु किसउ' केसी इम जंपइ तं सुणि गोयम एम पयंपइ ४
'मागु सु जो जिणवरिहिं कहीजइ अवर कुमागु न तेहिं गमीजइ
[12]सुलसाइ मनु मागि जु[13] लागउं अंबड-वयणि सु[14] किमइ न भागउं' ६
'साहु साहु गोयम तुह पन्ना एह भंति मह चित्तह छिन्ना
अन्न वि एक अत्थि संदेहू तं पि हु गोयम माझु कहेहू' ८

घत्ता

तो गोयमु वुच्चइ 'जं तुहु रुच्चइ तं पुच्छेह भदंत लहु'
तं निसुणि महेसी पभणइ केसी विणय-धम्म पयडंत बहु ॥९

[११]

'जे नर नारिहि नीरि निमज्जहिं लोभ-वेलि कल्लोलि हणिज्जहिं
तीह जु होइ सरण गइ ताणू गोयम कोइ अछइ सो ठाणूं' २
'अंतर-दीवु पवरु छइ एगो [15]जित्थु न पहवइ सो जल-वेगो'
केसि कहइ 'जलदीव ति कइसा' गोयम पभणइ[16] पयड ति अइसा ४
'भव-सायर-जल पातक-कम्मू अंतर-दीव-सरीखउ धम्मू
[17]दिढपहारि किउ पाप पयंडू धम्म-पभावि [18]कियउ सय-खंडू' ६

1. A. चित्ति 2.A आण्यउ 3. B दमी जिम शिव वसि 4 B. तिम सीतिदिअ 5. B. जेह 6. B भव भमडिहिं 7. A भूला 8. A बोलइ 9. A डोलइ 10 B हु 11. B. मेल्लि 12. A सुलसाहइ 13 B ज 14 B तु 15. B जत्थ 16. B पयंड ति जइसा 17. B दड० 18 B. थयउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'साहु साहु गोयम तुह पन्ना   एह भंति मह चित्तह छिन्ना
अन्न वि एक्क अत्थि संदेहू   तं पि हु गोयम माझु कहेहू'   ८

घत्ता

तो गोयम वुच्चइ   'जं तुहु रुच्चइ   तं पुच्छेह भदंत लहु'
तं निसुणि महेसी   पभणइ केसी   विणय-धम्म पयडंत बहु   ॥९

[१२]

'बेडुलडी बहुविह [1]पूरिज्जइ   [2]इक्क तरइ इक्क जलइ [3]निमज्जइ
सा बेडी कहि किम जाणीजइ   जणि सायरु निच्छइं लंघीजइ'   २
'जा निच्छिद्द निरि न भरीजइ   तिण बेडी जल-रासि तरीजइ'
पूछइ केसी तरीय-विसेसू   बोलइ गोयम 'कहउं असेसु   ४
अकय-दुक्कय-जल-संगह-देहू   भव-जल-तरण-तरी-समु[4] एहू
आसवि [5]भवु संवरि सिवु थाए   कंडरीक-पुंडरिकह न्याए'   ६
'साहु साहु गोयम तुह पन्ना   एह भंति मह चित्तह छिन्ना
अन्न वि एक्क अत्थि संदेहू   तं पि हु गोयम माझु कहेहू'   ८

घत्ता

तो गोयम वुच्चइ   'जं तुहु रुच्चइ   तं पुच्छेह भदंत लहु'
तं निसुणि महेसी   पभणइ केसी   विणय-धम्म पयडंत बहु   ॥९

[१३]

'अंधयार घण[6] घोर भयंकर   गोयम पूरि रहिउ[7] भवणंतर
[8]अच्छइ कोइ जु तिमिर हरेसि   महि-मंडलि उज्जोअ करेसि'   २
'ऊगिउ अछइ एकु जगि भाणू   सो [9]करिसिइ उज्जोय पहाणू'
केसी भाणु मुणेवा चाहइ   तक्खणि गोयम गुरु तं [10]साहइ   ४
'वद्धमाण-जिण निम्मल-नाणू   उदयवंतु जाणेवउ भाणू
मह मणि मिच्छा-तिमिरु फुरंतउ   वीर-तरणि अवहरिउ तुरंतउ'
'साहु साहु गोयम तुह पन्ना   एह भंति मह चित्तह छिन्ना
अन्न वि एक्क अत्थि संदेहू   तं पि हु गोयम माझु कहेहू'   ८

1. A. पूरिज्जहिं 2 A एक्क तिरह 3 B. निमज्जहिं 4. B सइ 5. B सवि सं० 6 B घणु 7 A ल्हाउ भुव० 8. A अछइ कुइ जु तिमिरु हरेस्यइ 9. A करिस्यइ 10 B. भासइ

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

घत्ता

तो गोयम वुच्चइ 'जं तुहु रुच्चइ तं पुच्छेह भदंत लहु'
तं निसुणि महेसी पभणइ केसी विणय-धम्म पयडंत बहु ॥९

[१४]

'जम्मण-मरण-रोगि जगु पीडिउ दीसइ दुक्खि निरंतर भीडिउ
गोयम अच्छइ कोइ पएसो [1]जित्थु नही जर-मरण-पवेसो' २
'ठाणु एगु छइ उत्तम लोए जहिं जर-मरण-पवेस न होए'
केसी जंपइ "[2]किसउं सु ठाणूं' गोयम तासु करइ वक्खाणूं ४
'सिद्धि-सिलोवरि अत्थि पहाणूं मुक्खु एकु अजरामर-ठाणूं
साचइ जम्मण-मरणि[3] जु बीहइ सिवकुमार जिम सो [4]सिवु ईहइ' ६
'साहु साहु गोयम तुह पन्ना सयल भंति मह चित्तह छिन्ना'
इम भणि कय-किइ--कम्म-विसेसू केसि लियइ गोयम-वय-वेसू ८

घत्ता

इम करवि विचारू [5]संजम-सारू पालेविणु जे मुक्खि गय
ते गोयम-केसी चित्ति निवेसी झायहु भवियाणंदमय[6] ॥९

1. B जत्थ 2. B. किइसउं ठाणउं 3. B मरण जि 4. B सुह 5. B. संजमभारू 6. अन्तः A. । इति श्री केसीगोतमसंधि समाप्तः ॥६०॥ B. ॥८०॥ इति श्री केसीगोअम संधिः संपूर्ण । श्रा० सोभी-पठनार्थमलेखि श्री उदयनंदि-सूरि-शिष्येण ॥८०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४. भावणा-संधि

[कर्ता : जयदेव मुनि रचना-समय : ई. स. १४००पूर्व, लेखन-समय : ई. स. १४१३]

ध्रुवक

पणमवि गुण-सायर भुवण-दिवायर जिण चउवीस-इ इक्क-मणि
अप्पं पडिबोहइ मोह निरोहइ कोइ भव्व-भावणवसिण ॥ १

[१]

रे जीव निसुणि चंचल-सहाव मिल्हेविणु सयल वि बज्झ-भाव
नवभेय-परिग्गहु विविह-जालु संसारि [1]अत्थि सहु इंदियालु २
पिय-पुत्त-मित्त-घर-घरणि-जाय इह-लेइय सव्वि[2] वि सुह-सहाय
नवि अत्थि कोइ तुह सरण मुक्ख [3]इक्कल्ल सहिसि तिरि-नरय-दुक्ख ४
अच्छउ ता दूरि णिय-वर(?)-गेह नियं-देह वि नवि अप्पणउं एह
इणि कारणि मन करि [4]मूढ पावु ससि-निव जिम होसिइ पच्छयावु ६
मन रच्चि रमणि-रमणीय-देहि वस-मंस-रुहिर-मज्ज-मुत्त-गेहि
दढ-देवि-रत्त मालव-नरिंदु गय-रज्ज-प्पाणु हुअ पुहइचंदु ८
इक्केण वि आसवि [5]पुरिस सत्तु अहि पडइ झत्ति सिढिलेवि गत्तु
पंचासव-सत्तउ जु जि होइ तसु का गइ त्ति नवि[6] मुणइ कोइ १०
पंचिंदिय-विसय-पसंग-रेसि मण-वयण-काय नवि संवरेसि
तं वाहसि कत्तिय गल-पएसि जं अट्ठ-कम्म नवि निज्जरेसि १२
अह सत्त नरय तिरि मेरु पंच असंख दीव-सायर-पवंच
बारह नव सग्ग पणुत्तराणि इह लोगह वित्थरु निउण जाणि १४
चउविह-कसाय-विस-हरण-मंत जिण-वयण सुणहिं जे पुन्नवंत
घण-पुलइयंग मणि सद्दहंति सिव-लच्छि-वच्छि ते हार हुंति १६
वर-हरि-करि-रह-भड-सज्ज रज्ज पाविज्जइ भवि भवि भूरि भज्ज
न वि[7] लब्भइ दुल्लहु पुण पवित्तु अरिहंत-देव-गुरु-साहु-तत्तु १८

घत्ता

इय बारह भावण सवण-सुहावण [8]भणवि एव जीवह सरिसु
दुल्लहु मणुअत्तणु धम्म-पवत्तणु दस-दिट्ठंतिहिं वज्जरिसु ॥१९

1. A इत्थ सउ 2 B सव्व 3. B एकल्लु सहसि 4. B जीव पाव 5. B पुरिस सत्त
6. A मणुअलोइ 7. B दुल्लइ लब्भइ 8. B भावेण वि जीव०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२]

[1]इह अणायम्मि संसारि तमणाइओ आसि गोलेसु कम्मेहिं मुच्छाइओ
ता अणंताओ कालाओ पावड्ढिओ तं निगोयाउ भवियव्वया-कड्ढिओ २
पुढवि-कायाइ छक्काय-कायट्ठिओ णंत-कालं च पुण मरवि तत्थ-ट्ठिओ
तो अकामेण निज्जरिय-कम्मंसओ तं सि कहकहवि उप्पन्न माणुस्सओ ४
चुल्लगाईय-दिट्ठंत-दस-दुल्लहे जीव संपत्त[2] मणुयत्तणे वल्लहे
जं [जि] जिण-धम्मि सामग्गि मुक्खंकरी स ज्जि तुह जाइ सग्गोवरे मंजरी ६
पुणवि रे जीव सामग्गि एवंविहा अन्न-जम्मम्मि मन्नामि तुह दुल्लहा
ता पमाएण सा कोस विहलिज्जए मणुय-भव-तरुह धम्म-प्फलं लिज्जए ८
दहइ गोसीस-सिरिखंड छार-क्कए छगल-गहणट्ठमेरावणं विक्कए
कप्पतरु तोडि एरंडु सो वावए जु ज्जि विसएहिं मणुयत्तणं हारए १०
सुमिण-पत्तम्मि रज्जम्मि सो मुच्छए सलिल-संकंत-ससि गिन्हिउं वंछए
अविय-खित्तेसु धन्नाइ सो कंखए जु ज्जि धम्मेण विणु सुक्खमाविक्खए १२
किं तुमंधो सि किं वा वि धुत्तूरिओ अहव किं सन्निवाएण आऊरिओ
अमय-समु धम्मु जं विस व अवमन्नसे विसय-विस-विसम अमयं व बहु मन्नसे १४
[3]ति ज्जि तुह नाण[4]-विन्नाण-गुण-डंबरा जलण-जालासु निवडंतु जिय निब्भरा
पगइ-वामेसु कामेसु जं रच्चसे[5] तेहिं पुण पुण वि नरयानले पच्चसे १६
असुर-सुर-रमणि-भोगेहिं जं न तुट्ठओ मणुय-विसएहिं किं होसि जिय पुट्ठओ
इत्थ अत्थम्मि जिण-भणिय सिद्धंतओ मुणइ इंगालदाहस्स दिट्ठंतओ १८

घत्ता

जिम तुह मणु रिद्धिहिं विसय-समिद्धिहिं तिम जइ धम्मि वि होइ जिय
ता सिव-उक्कंठियं करयलि[7] संठिय सुर-नर-पुह अणुसंगि[8] हुय ॥१९

[३]

सो धन्नउ धन्नउ सालिभद्दु कयउन्नउ अन्नु वि थूलभद्दु
ते सरह भरह-सगराइ-राय खयरिंद-नरिंदिहिं नमिय-पाय २
[9]अप्पेण वि कारणि[10]अत्ति जेहिं वेरग्गाऊरिय-माणसेहिं
छड्डेविणु घर-पुर-रमणि-सत्थ वय गिन्हिवि साहिय परम-अत्थ ४

1 B अह 2. A संपत्ति 3. A. तज्जि 4. A. निव्वाण 5. A. जेहिं 6. A. ०ठिउ 7. B. ०यल 8. B. ०संग 9. A. अप्पण 10. A. कत्ति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं पुण पिय-परिभव-ताडिओ सि दालिद्द-रोग-सय-पीडिओ सि
[1]जं लग्गसि घट्टिल (?) कुक्कुर व्व जं अच्छसि गड्डा-सूयर व्व ६
किं लोहिं [2]घडिय[उं] हियउं तुज्झ जं[3] मुणियइ नवि तुह तणउं गुज्झ
जं पत्तइ पिअ-मरणाइ-दुक्खि नवि फुट्टइ[4] नवि लट्टइ मुक्खि ८
पंचासवि अज्जिय पइं जि दुक्ख अणुहवसि ताइं तं चेव तिक्ख
जिणि जीवि करंबउ खद्धु एव सहिसिइ सु विलंबउ[5] सययमेव १०
जं अन्न-जम्मि करुणं रुयंत पइं मारिय निग्घिण जंतु हुंत
तं रोग-सोग-दुह-विहुर-देहि[6] अक्कालि[7] वि वच्चसि मच्चु-गेहि १२
जं कूड-कवड पयडिवि[8] असार पर वंचिवि किउ दव्वावहार
तिणि तुज्झ इत्थ जड सडिय जीह अनुहुय दलिद्दिय-मज्झि लीह १४
नव-जुव्वण-मयण-परावसेण परदार विडंबिय [9]तं जि [10]जेण
तं जायउ कुट्ठिण गलिय-गत्तु सोहग्ग-रूव-लावन्न-चत्तु १६
घर-दार-परिग्गह-वावडेण पइं धम्म चत्त धण-लंपडेण
हिव [11]नरय पडंतह[12] तुज्झ मूढ को देसिइ हत्थालंबु गूढ १८

घत्ता

आरंभ करेविणु जीव [13]हणेविणु विविह वाहि किम सहिसि जिय
सलसलतां संपइ हियडउं कंपइ वंका पडिसिइं डंभ तुह ॥१९

[४]

[14]अप्प-रोगेहिं किं होसि जिय कायरो जेण तुह पासि निय-माय-पिय-भायरो
किं न संभरसि निग्गोय-पुढवाइयं दुक्खमणुभूय-पुव्वं तए णाइयं २
समगमाहार-नीहार-कय-वेयणो जुगवमूसास-[15]नीसास-निच्चेयणो
तं निगोएसु अन्नुन्न-भव[16]-भीडिओ आसि रे जीव सिय-ताव-परिपीडिओ ४
अद्द-मूलो य सत्तावरी गज्जरो णंत-काएसु तं विहिउ सय जज्जरो
किसल गिरि-कंद नव-वत्थुलो सूरणो [17]तिल्लि तलिओ सि कढिओ सि किउ पूरणो ६

---

1. B नो वग्गिसि 2. B. लोहिं पडिउ हियं तुरुज 3 B न वि मुणियइं तुह तणउं गुज्झु 4 B नवि लहेइ 5 B०वइ. 6 A विहुरु-देहु 7. B. अक्काल 8. B. पयडवि 9. B तइं 10. A. णेण 11. B निरय 12. A पडंता 13 B. वहेविण 14. B इत्थ रो० 15. B निस्सास 16. A भर-भी० 17. A तलिल ति०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तो समुप्पन्न पत्तेय-तरु-संगओ मूल-फल-बिंट-दल-बीय-पुप्फंगओ
जा कुहाडिहि नो वड्ढिओ उड्ढओ ताव हिम-जलण-जालावली-दड्ढओ
पुढविकायम्मि [1]पीलिय फलिहोवलो लवण-मणि-रयण-हरियाल तह हिंगुलो
कुसय-कुद्दाल-हॅल-चंचु-चय-चुंन्निओ सवरसत्थेहिं टंकेहिं तं छिंन्निओ
नीरु नीरेण तिक्खेण खारेण वा कडु-कसाएण अंबिलिय-महुरेण वा
सिसिरु उन्हेण उन्हो[3]वि सिसिरेण वा पवणु पवणेण निहणिज्ज [4]ख(?ज)लणेण वा
जलण सलिलेण अन्नेण वा खिज्जए इय सवरसत्थ-सत्थेहिं निय [5]भिज्जए
इत्थ उप्पन्न [6]अन्नाणि तं[7] ताडिओ रागद्देसे[8]णि किं मुयसि आराडिओ
कह वि बेइंदि-तेइंदि-चउरिंदिओ तं जि जाओ सि अस्सन्नि पंचिंदिओ
तत्थ सीय-ताव-छुह-जलण-संताविओ णेगहा जिव पंचत्तणं [9]पाविओ
असण-पाणम्मि खाइम्मि तह साइमे तं जि दलिओ सि तलिओ सि उग्गाहिमे
थेव-दुक्खेहिं मन होसि जिय कायरो [10]तासु को बिंदु जो पियइ किर सायरो

घत्ता

घण-कम्मिहिं छइय[11] पाणि अणाइय[12] [13]तहिं य काल-मिच्छत्ति पुण
जगि नत्थि [14]स ठाउं जीवह काउं जहिं न हुअ जम्मण-मरण ॥१९

[५]

अह हुय पारद्धिय पुहइपालु मच्छउ अनु मच्छिउ गुत्तिवालु
अहि-[15]वग्घ-सीह-चित्तय विचित्त मारेवि जंतु तं [16]नरय पत्त
पनरह[17] परहम्मिय तत्थ हुंति ते[18] धाईय दिसि दिसि किलिकिलंत
[19]घडियाला कड्ढिय तेहिं तेम नालेर-मज्झि खुडहडिय जेम
ते पिंडिय तक्खणि मिलिय खंड पारय जिमि नारय हुय[20] पिंड
खर-ताव-दाव-दहणेण दीण लूणिय जिम पिंडिय[21] तावि लीण
असिपत्ति गहणि [22]आसीण जाव [23]सो विद्धउ पहरण-नियरि ताव
जा सरइ जंतु [24]वेयरणि-सिंधु [25]ता वेलुय-भुग्गउ गलिउ मुद्धु

1. A पीयलिय 2. A. हय-चंचू-चयलुंनिओ 3. A. उन्हे 4. A खलि० 5. B. भज्जए 6. A अंनाणु 7. B तुं 8. A लेसेहिं 9. A पंचत्तयं १०. B तस्स को वि हु जो. 11. B छाईउ 12. B. अणाईउ 13. B बहु य कालि 14. A तराठाउं 15. A वाह 16. B निरय 17. B परमाहम्मिय 18 A ता 19. A. घलियाला कड्ढिढउ 20. B. हूय य 21. A ताव लीणु 22. A आंसीलु 23. A ता 24. A वेरयणि 25. B ताव वेलूय

अह ढंकिहिं भुत्तउ[1] तडफडंत जंतेहिं निपीलिउ कडयडंत
रहि जुत्तउ तुट्टइ तडयडंत वज्जानलि पक्कउ कढकढंत १०
कत्थइ घण-मुग्गरि मारिओ सि खर-सिंबलि-सूली-विधिओ सि
कत्थइ निय-मंसं खाइओ सि अन्नत्थ य [2]तउयं पाइओ सि १२
तह खंडो[3]खंडिवि खंड-खंड दिसिपालह बलि किउ [4]तं जि मुंड
इय क(?कि)त्तय कहिज्जइं निरय-दुक्ख जं जीव सहिय पइं [5]मुक्ख तिक्ख १४
[6]वह-वाहण बंधण-तज्जणाइं छुह-उन्ह-तिन्ह-डहणंकणाइं
आरंकुस-क(?कु)सलय-ताडणाइं सहियाइं जीव तिरिएसु ताइं १६
मणुएसु वि दोहर रोग सोग [7]दालिद्द पराभव [8]पिय-विओग
धणहरण मरण चारय-निरोह [9]पइं सहिय परव्वसि [10]विविह [11]दोह १८

घत्ता

परभव पेसत्तणि सुर-दासत्तणि देवत्तणि पत्तइं सहिय
ता जिणवर-धम्मु करहि सुरम्मु जिमि नवि [12]पावहिं दुक्ख [13]जिय ॥१९

[६]

धम्म न करेसि चिंतेसि सुह मुत्तिए [14]चणय विक्केसि वंछेसि वर-मुत्तिए
जं जि वाविज्जए[15] तं जि खलु लुज्जए[16] भुज्जए जं जि उग्गार तसु किज्जए २
पुव्व-कय-कम्म-दोसेण बाही-गणो ता न धीरेण देयं [17]विसाए मणो
सुणि सणंकुमर-चक्कवइ-अहियासिया [18]वरिस-सय-सत्त [19]वाहिय निन्नासिया ४
सुणवि सिरि-वीरजिण-सहिय उवसग्गए कोस तुइ मूढ उम्मग्गि मणु लग्गए
सुहद्द-चरिएण सुणिएण इह कायरो होइ खलु जेण सोंडीर-गुण-सायरो ६
सुद्ध-झाणेण लहु लद्ध-सिद्धालओ तह य सुमरिज्जए सुगयसुकुमालओ
जस्स सिरि जलिय-जलणेण चिर-रूढयं अट्ठ-घण-कम्म-कंतारमवि दड्ढयं ८
झाणमइं च रुद्दं च ता वज्जए जेण जोगेसु [20]मण-सुद्धि सलहिज्जए
इत्थ पुंडरिय मरुदेवि भरहेसरो पसनचंदो य दिट्ठंत [21]सुमणोहरो १०

1. B भुग्गउ 2. A. वकुयं 3. B खंड वि 4. B तउं 5. B दुक्ख 6. B वह 7. B. दारिद्द 8. B. विप्पओय 9 B. तइं 10. A. विहिय 11. B दोस 12 A पावह 13. A हिय 14. B चिणय 15. A वाहिज्जए 16. B लिज्जए 17. B देओ 18. B विरिस 19. B वाहिउ 20. B जोगेण 21. B सुमणोरहो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जा न रोगेहिं सोगेहिं वाहिज्जसे [1]जा न जर-मरण-रक्खेहिं भक्खिज्जसे
ताव मुणि-धम्म धरि [2]अइव गेहि-च्चए घरि [3]पलित्तम्मि खणि स कइ को कूवए १२
जाव कर-चरण-नयणेहिं तं [4]सज्जओ ताव नियहोसु आवस्सए [5]उज्जओ
वुड्ढ-भावम्मि पुण [6]मैलसि निय हत्थए तुट्टि गुणि जेम धाणुक्क रण-मत्थए १३
छड्डि घर-घरणि-सुय-[7]भइणि-भत्तिज्जए देहि दाणाणि [8]जड धम्मु संचिज्जए
एहिं सव्वेहिं नवि जमह रक्खिज्जए[9] इत्थ दिट्ठंत नंदो वि निसुणिज्जए १६
सरह[10]जिण-सिद्ध-मुणि-धम्म-चउ-सरणयं जेण नवि होइ मोहाउ पुण मरणयं
सुहड एगो वि सरणागयं रक्खए किं पुणो[11]बहुयरे जीव[12]रिउणो जए १८
दुक्कय निंदेसु करि सुकय-अणुमोयणं सयल जीवेसु मित्ती य सुणि चोयणं
जेण भुत्तूण सुर-सुक्ख[13] नीसल्लयं लहसि केवल्ल-कल्लाण-[14]बाहुल्लयं २०

घत्ता

निम्मल-गुण-भूरिहिं **सिवदिवसूरिहिं** पढम-सीस **जयदेव मुणि**
किय भावण संधी भाव-सुयंधी निसुणउ[15]अन्नु वि धरउ[16] मणि[17] ॥२१

1.B.जंमा-जर० 2. Aअलगेहव्वए 3.B पलित्तेसि खलिओसि किं कू० 4.B ता सज्जिओ 5. B उज्जुओ 6. B मलसि 7. B सयण 8 B विण 9 B. ज्जसे 10 A जिम 11 B. निसुणिरे 12. A निउणो 13. B निस्सल्लय. 14. A वाहल्लयं 15. B निसुणह 16.B धरह 17अंत: A. भावनासंधिः ॥छ॥ B. इति भावनासंधिः समाप्ता । लिखिता श्रीमति महीशानकनगरे ॥छ॥ श्री॥

१५. सील-संधि

[कर्ता: जयशेखरसूरि-शिष्य रचना-समय : ई.स.१४०० पूर्व लेखन-समय : ई.स.१४१३]

ध्रुवक

सिरि-नेमि-जिणिंदह पणय-सुरिंदह पय-पंकय [1]सुमरेवि मणि
वम्महु-उरि-कीलह कय-सुह-मीलह सीलह संथवु [2]करिसु हउं ॥१

[१]

जे सील धरहि नर निरइयारु तव-संजम-नियमह मज्झि सारु
इह जम्मि वि सिरि-कित्तिहि सणाह विप्फुरइ समीहिय-सिद्धि ताह २
दीहाउ महायस इड्ढिमंत अहमिंद महा-बल-तेय-जुत्त
अखंड-सीलधर भविय सत्त सुर-सुक्ख लहहि पर-लोय-पत्त ४
तित्थयर-चक्कि-बल-वासुदेव सुर-खयर-नरिंदिहिं विहिय-सेव
अन्ने वि जि तिहुयण-सिरि-निहाण ते सील-कप्पतरु-कुसुम जाण ६
भुंजेविणु सुर-नर-खयर-भोग आजम्म-काल[3]-गय-रोग-सोग
अखंड-सील-सोहिय-सरीर निव्वाण-सुक्ख लहु लहहि धीर ८
सो दाणु सव्व-किरिया-पहाणु तवु सु ज्जि सयल-सुक्खह निहाणु
सा भावण सिव-साहण-समत्थ अक्खंड धरिज्जइ सील जत्थ १०
महिलाउ जाउ पर-रक्खियाउ लज्जाइ बंभ-वय-धारियाउ
ताउ वि जंति सुरलोय[4] चंगि जिणु भासइ पन्नवणा-उवंगि १२

घत्ता

जं कलि-उप्पायण जण-संतावण नारय-पमुह वि सिद्धि गय
निम्मूलिय-हीलह निम्मल-सीलह तं पभावु पसरइ पयडु ॥१३

[२]

निविड-सीलंग-सन्नाह-संनद्धया रमणि-जण-नयण-बाणेहिं[5] जि न विद्धया
चत्त-गिहवास सिव-सुक्ख-संपइ-[6]कए तेसि पणमामि भत्तीइ [7]पय-पंकए २
तिव्व-तव-चरण-निद्धविय- रस-पेसिणो [8]बहुय दोसंति लोयम्मि सुमहेसिणो
गरुय-सीलंग-भर-वहण-कय-निच्छया [9]विरल क्वि अत्थि पुण मुक्ख-तल्लिच्छया ४
जे वियाणंति धम्मस्स तत्तं जणा सग्ग-अपवग्ग-संपत्ति-कय-निय-मणा
रमणि-जण-रूव-लावन्न- वक्खित्तया ते वि भव-भोय बंभम्मि चल-चित्तया ६

1. B समरेवि 2 B करिस 3. A कालु 4. B. सुरलोइ 5. A. बाणेहि 6. B संपय 7. A. भत्तीय 8. A बहू 9. B. निव्वया

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोडि-सिलमिक्क-बाहाइ जे धारही   बलिण दप्पिट्ठ नर खयर वसिकारही
विसम-सर-पसर-पडिलग्ग[1]-सव्वायरा   ते वि सीलंग-भर-वहणि[2] अइ-कायरा ८
सीलु नामंति जे कस वि न हु अत्तणो   सुहड-भडिवाय-पडिभग्ग-[3]पडिसत्तुणो
राग-निगडेहिं मयणेण[4] पुण दामिया   ते वि अबलाण पाएसु नर नामिया १०
बंभु चउ-वयण किउ रुद्द नच्चाविओ   इंदु सहसक्खु तवणो वि तच्छाविओ
सयल सुर विसय-जंतेण इय घल्लिया   [5]मयण मल्लेण इक्खु व्व संपिल्लिया १२
नाणवंता वि [6]तह तविय-निय-देहया   तिव्व-भावेण परिचत्त-धण-गेहया
[7]राग-गह-गहिय पुण वोसमित्ताइणो   लोग-पयडा वि अब्बंभ-पडिसेविणो १४

घत्ता

सेणिय-निव-पुत्तु वि अइसय-जुत्तु वि   नंदिसेण जिण-सीसु जह
हूउ विसयासत्तउ इंदिय-जित्तउ   ता धिरत्थु इंदिय-बलह[9] ॥१५

[३]

गुरु-वयण-अमय-रस-सित्त-अंग   वेरग्ग-खग्ग-हय-सयल-संग
वम्मह-मय-भंजण दढ-पयन्न   अक्खंड सीलु पालहिं ति धन्न २
मयरद्धय-सबल-समीरणेण   सुरगिरि-गरुयाण[11] वि चालणेण
सीलद्दुम कंपिउ नेव जाह   गुरु-भत्तिहि पणमउं [12]पाय ताह[13] ४
उब्भड-नवजुव्वण-आण-सज्ज   नव-रंग चत्त जिणि अट्ठ[14] भज्ज
मोहारि-अगंजिउ सिद्धि-गामि   सो जयउ जयउ जगि जंबु-सामि ६
वेसह घरि छहि रसि रसि अहारु   [15]वीसासिवि तिहुयण-मल्लु मारु
झाणग्गि दहवि जिणि तसु विणासु   किउ थूलभद्दि[16] पय नमउं तासु ८
रहनेमि पराजिउ विसय-वग्गि   पडिबोहिवि ठाविवि जीइ मग्गि
सा सीलवंत उगसेण-धूय   सीलिग तिहु भुवणिहि पयड हूय १०
[17]अभयादेवि संकडि पाडिएण   मणसा वि न खंडिउ सीलु जेण
महमहइ महारिसि-मज्झि[18] तस्स   सिय-जसु गिहिणो वि सुदंसणस्स १२

1. A. पडिभग्ग 2. A. वहण 3. A. पडिलग्ग 4. B मयणेसि 5 B मयणामोहेण 6. A. भव भविय 7. B रोग 8. A जइ 9 A बलहो 10. B. घन्ना 11. B. गुरूयाण 12. A पणमउ 13. A ताय 14. A आठ 15. A वीसासवि 16. B. थूलभद्द 17. B अभयादिवि 18 B मज्झ

नियं-सील-भंग-भय-भीरुयाहि अवि रज्ज-लच्छि परिचत्त जाहि
ते [1]नमयासुंदरि-मयणरेह धुरि लहहिं महासइ-मज्झि रेह १४
नियं कंतु मुत्त सुमिणे वि जाउ पर-पुरिसु न [2]कंखहिं इत्थियाउ
उवसग्ग-संगि निव्वडिय-सत्त ताउ वि महासइ जिणिहिं वुत्त १६

घत्ता

सुभदा रइसुंदरि अंजणसुंदरि दोवइ-दवदंती-पमुह
गुण-रयण-समिद्धिय भुवण-पसिद्धिय जयहिं महासइ सील-घर ॥१७

[४]

अहह पिच्छेह सीलस्स माहप्पयं राम-भज्जाइ अइ अच्छरिय-कप्पय
पाय-फरिसेण फिट्टेवि जं पावओ नीरु लहलहइ रोगग्गि-उल्हाविओ २
रोग-जल-जलण-विस-भूअ-गहमुग्गया सीह-करि-सप्प-चोरारि-उवसग्गया
मारि-डमराइ भय-करण जे दीसही सीलवंताण नामेण ते नासही ४
आउ अइ-दीह रोगेहि परिचत्तयं रूव-लावन्न-सोहग्ग-बल-जुत्तयं
जं च अन्नं पि अभिराम जगि गिज्जए सीलवंताण तं सयलु संपज्जए ६
पणय-नीसेस-खयरिंद-नर-सामिओ नियय-भुय-बलिण इंदो वि जिणि नामिओ
अन्न-रमणीय कय-चित्तु लंकावई करवि कुल-नासु सो पत्तु अहर-गई ८
निरय-भवि अगणि-पुत्तलिय-परिरुंभणं तिरिय-जोणीसु संढत्त-वह-बंधणं
मणुय-जम्मम्मि दोहग्ग-छवि-छेयणं सील-पब्भट्ठ पावंति बहु वेयणं १०
मणुय-जम्मम्मि सरयब्भ-चंचलतरे गिरि-नई-वेग-सरिसम्मि जुव्वण-भरे
असुइ-तुच्छेसु विसएसु नर लुद्धया मुक्ख-सुक्खाइं हारंति ही मुद्धया १२
सुहम-नव-लक्ख-जीवाण संहारणं देह-धण-कित्ति-धम्माण खय-कारणं
सयल-दुह-मूढ-महुबिंदु-सम-सुक्खयं विसय-सुह चयहु अहिलसहु जइ मुक्खयं १४
विसय विस सील अमयाण फलु बुज्झिओ सील-भट्ठाण संसग्गमवि उज्झिओ
सुद्ध-सीलम्मि ठावेह अप्पागयं जेम अचिरेण पावेह निव्वाणयं १६

घत्ता

इय सीलह संधी अइय सुबंधो जयसेहरसूरि-सीस-कय
भवियहु निसुणेविणु हियइ धरेविणु सील-धम्मि उज्जमु करहु[3] ॥१७

1. A नम्मया० 2. A कंखिहि 3. अंतः A.B. इति सीलसंधि समाप्ता ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६. उवहाण–संधि

[कर्ता: जयशेखरसूरि-शिष्य रचना-समय: ई. स. १४०० पूर्व]

ध्रुवक

फलवद्धिय-मंडणु दुह-सय-खंडणु पास–जिणिं[द] नमेवि करि
जिण-धम्म-पहाणहं तव-उवहाणहं संधि सुणहु जण कन्नु धरि ॥१

[१]

सिरि-चरम-जिणेसर-वद्धमाणि पभणिउ जह गोयम महुर-वाणि
सिद्धंत-मज्झि जसु पढम लोह तसु भणिउ पमाणु महानिसीह २
जह गिरिहिं मेरु गह-गणहं चंदु निवईण चक्कि सुर-गणि सुरिंदु
तह वीर-जिणेसरि तव-पहाणु उवहाणु भणिउ गुण-गण-निहाणु ४
जे निम्मल-वयण जण सोलवंत सम्मत्त-कलिय तह धुन्नवंत
नीरोग-देह दढ-धम्म-गेह तव-सत्ति-जुत्त परिचत्त-गेह ६
एवंविह सावय साविया य उवहाण वहहिं कय भावि भाव
साहज्जिण नियय कुडुंबयस्स सामग्गि सुगुरु निम्मल-वयस्स ८
आरंभ नंदि-चेईहरम्मि कारावहिं भवियण उत्स(च्छ)वम्मि
गुरु सीसि वासु तसु पक्खिवंति परमिट्ठि पंच तव उद्दिसंति १०

घत्ता

साहम्मिय-वच्छलु कारवि निम्मलु सुगुरु-पासि पोसहु लियहि
समभाव-सइत्तउ जयण करंतउ तव करेह निज्जिय-करणु ॥११

[२]

अह पढमुवहाणि उवास पंच करि वायण गिण्हइ पयह पंच
अंबिल अड अट्ठमु तह य अंति बिय वायण पोसह सोलसंति २
पडिक्कमण-संधि बोयम्मि जाणि तवु वायण पोसह पढम-माणि
पण-संपय-वायण एग इत्थ बोया तिहुं संपय होइ तित्थ ४
भावारिहंत सक्क-थयम्मि अट्ठमि तवि वायण पढम जम्मि
तो सोलस अंबिल वायणा य पुण सोलस करि फलु लेहि काय ६
वायण तिहुं तिहुं संपएहिं पणतीसिहिं पुज्जहि संपोसएहिं
अरिहंत-वइण उववास अंति अंबिल तिय पोसह चउ हवंति ८
इय वायण अह पंचम-तवम्मि गुरि वायणि दिज्जहिं तिन्नि तम्मि
अट्ठमु अनु अंबिल पंचवीस पोसह पूरिज्जहि अट्ठवीस १०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

उवहाणु सुपत्थइ चित्ति पसत्थइ करि चउत्थु पण अंबिलइ
पोसहु पालेविणु वायण लेविणु मणुयत्तणु सहलउं करइ ॥१२

[३]

इहु मणि उवहाण तवु पहाणु इक्कासी अंबिल जासु माणु
उववास इत्थ चउवीस हुंति पोसह पंचुत्तर सउ लियंति २
अह बाल वुड्ढु तव-सत्ति-हीणु न हु सक्कइ इणि परि करि निहीणु
सो अंबिल निवि य इगासणेहिं पूरइ उववास बि-आसणेहिं ४
पासाइ कलसु बिंबिहिं पइट्ठ सोहइ जह देउलु वय विसिट्ठ
भोयणु तंबोलि वर-तिलउ भालि तिमु सोहइ तवु उज्जमण-कालि ६
उवहाण वहिवि जे माल लिंति ते सिद्धि-सुक्ख निच्छइ लहंति
ते अन्न-जम्मि न हु दास पेस मणुयत्ति न पावहिं दुह-विसेस ८
अह रु(क)णय माल जिण कारवेवि साहम्मी गुरजण बंधु लेवि
कारंति नंदि अइ-उच्छवम्मि नक्खत्त-जोग सुंदर-दिणम्मि १०

घत्ता

भोयण-तंबोलिण वत्थ-विसेसिण सम्माणवि साहम्मि-जण
पुरि उत्स(च्छ)वु कारहिं संघु हकारहिं गुरु पडिलाहहिं सुद्ध-मण ॥११

[४]

अह तिन्नि पयक्खिण जिण करेवि वंदेविणु चेइय वास लेवि
गुरु मंत-मुट्ठि तसु सिरि खिवेइ 'तित्थारग पारग पारगु' तं भणेइ २
तो नियम देइ देसण करेइ कर-अंजलि सो विरइवि सुणेइ
'भो तइं फलु [ल]द्धउ मणुय-जम्म अरु दिन्नु जलंजलि असुह-कम्म ४
जम्मंतरि तुहुं हुअ सुलह बोहि भव-भ[म]ण-पाव किय तइं विसोहि
अह संघ चउव्विह वास लेवि तं धन्नु सुलक्खणु भणि खिवेइ ६
सुगंध कुसुम वा(?) माल ताम तसु बंधु ठवेइ कंठि जाम
वज्जंति गहिर तं पंच-सद्दि नच्चहिं अनु गायहिं अइ सु-सद्दि ८
उवहाण पवरु तव इम करेइ निय-धण-तणु-जीविय-फलु गहेवि
जइ सिद्धि न पावहिं काल-जोगि सुहु लहहिं तह वि गय अमर-लोगि १०

घत्ता

इय तव-उवहाणह संधि पहाणह जयसेहरसूरि-सीसि कय
जे पढहिं पढावहिं अनु मनि भावहिं ते पावहिं सुह-परम-पय ॥११

अंतः ॥ इति उपधान-संधि ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७. हेमतिलयसूरि-संधि

[कर्ता : अज्ञात रचना-समयः ई.स.१४०० पूर्व]

ध्रुवक

पाय पणवि सिरि-वीर-जिणिंदहं अनु सिरि-गोयम-सामि-मुणिंदो(दहं)
हेमतिलयसूरिहिं गुण-लेसो संधि-बंधि हउं किं पि भणेसो ॥१

[१]

अत्थि नयरु नायोरु पसिद्धउ धण-कण-कंचण-रयण-समिद्धउ
तहिं निवसइ गंधीय-कुल-मंडणु वीजउ साहु दुहिय-दुह-खंडणु २
असत तसु घरि घरणि पहाणी सीलि विमल किरि सीता राणी
तासु उयर-सरि हंस-समाणू पुत्तु उवन्नउ पुन्न-पहाणू ४
दोलउ नामु निरुपम-लक्खणु सरल-सहावु विणीय वियक्खणु
कंचण-गोर सरीर प्रमाणू(?) दिणि दिणि वढइ सोहग-सारू ६

घत्ता

सो कलिय-कलागमु रूवि मयण-समु चउद वरिसनउ जं थियउ
तं जण-मण मोहइ महियलि सोहइ सुर-कुमारु जं अवयरिउ ॥७

[२]

वड्डइ गछि वाइयदेवसूरि अणुक्रमि सिरि-जयसेहरसूरि
सुविहिय-विहिहिं विमुहि(?वसुहि)विहरंता अन्न-दिवसि नायउरि पहूता २
तहि भवियण-जण मण आणंदिहिं गरुव महूसव गुरु-पय वंदिहिं
देसण सुणहिं मुणहिं किवि तत्तू लियहिं विरति किवि किवि सम्मत्तू ४
दोलउ कुमरु निसुणि गुरु-वाणी 'संजमु लेसु' इसउ मनि जाणी
माय ताय कहमवि मुकलावइ गुरह पासि व्रतु लेवा आवइ ६
गुरु वीनवि थापिउ सुमुहुत्त मेलिउ दस-दिसि संघ बहुत्त
कुडुट्ट-नयरि रिसह-जिण-मंदिरि नंदि रचिय उछवि अइ-सुंदरि ८

घत्ता

तेरह तेवन्नइ (१३५३) वरिस रवन्नइ समण-धम्मु दोलए लियइ
तहिं संघि बइट्ठइ सुह-गुरि तुट्ठइ हेमकलसु तसु नाम किउ ॥९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३]

अह अहिणव मुणिवर सेवंतउ पंच-महव्वय-भारु वहंतउ
किरिय-कलावि सयावि अचुक्कउ कसु कसु कुणइ न चित्ति चमक्कउ २
पंच-समिय तिहुं गुत्तिहिं गुत्तउ दस-विह-समण-धम्म-उववत्तउ
दिट्ठइ तिणि अहिणव मुणिराए संघह मणि न हु हरिस समाए ४
जयणा-जणिय-जगज्जिय-रक्खणु अमिय-महुर-मिय-वयणु सुलक्खणु
निम्मल-सीलि कलिउ भवि सारउ सो मुणि थिउ मुणिवरहं पियारउ ६
जिम जिम सुद्ध-सहावु सऊजमु हेमकलस-मुनि पालइ संजमु
तिम तिम सुह-गुर-चित्ति वइट्ठउ एहु मुणि होस्यइ गुणिहिं गरिट्ठउ ८

घत्ता

तो सो मुणि धन्नउ सुह-गुरि दिन्नउ पढण-कज्जि सुय-सिरि-हरहं
कय-सपय-पइट्ठह मुणि-मण-इट्ठह वयरसेण-सूरीसरहं ॥ ९

[४]

तो सिरि-वयरसेणसुरि-राओ तासु उवरि कय-गरुय-पसाओ
झत्ति पढावइ क(?प)य-वक्ख-माणू आगम-लक्खण-छंद-प्रमाणू २
सुविहिय-विहि सवि जोग वहाविय सयल सुद्ध सिद्धंत वचाविय
सुहम विचार-सार सिक्खवियउ हेमकलसु तो गणि-पदु(दि) ठवियउ ४
सुह-गुरु-साथिहिं तित्थ नमंतउ देस-दिसंतरि विहि विहरंतउ
वेयावच्चु विणउ पयडंतउ हेमकलसु थिउ गणि विहरंतउ ६
अह सुह-गुरु सांभरिहिं पत्ता तत्थ साह पाल्हइ विन्नत्ता
'इकु पसाउ सामिय महु दिज्जउ हेमकलसु वाणारिउ किज्जउ' ८

घत्ता

तो सुह-गुरि वित्थरि सत्तरइ वच्छरि किउ वाणारिउ हेम गणि
तहिं संघु हकारिउ उच्छउ कारिउ पाल्हइ साहि विसुद्ध-मणि ॥ ९

[५]

आसोजहिं जिम [घण?] गंभीरो सोम जिम सुपसन्न सरीरो
रूवि मयण जिम मणु मोहंतउ तव-तेयहिं रवि जिम दिप्पंतउ २
हेमकलस गणि पंडिय-राउ संजम-सिरि-थिर-कय-अणुराउ
महियलि विह[र?]इ विछाय-पमाउ भज्जंतउ वदिय-भडिवाउ ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जत्थ जत्थ पुरि पट्टणि आवइ तत्थ तत्थ संघह मणि भावइ
जिम जिम आगम-तत्तु पयासइ तिम तिम मिच्छा-मग्गु पणासइ ६
ठामि ठामि उन्नइ कारंतउ पंडिय-राउ एम विहरंतउ
अन्न-दिवसि सुह-गुरि तेडाव्यउ कय-बहु-उच्छवि अहिपुरि आयउ ८

घत्ता

तहिं गुरु नमेविणु आइसु लेविणु दियइ संघ उवएस-वरो
तं सुणि जणु जंपइ होसइ संपइ एहु जि सुह-गुरु-पट्टधरो ॥९

[६]

तहिं पुरि नाहड-वंस-पसिद्धउ संघाहिव फम्मणु सुसमिद्धउ
अमर मेह पित्थड तसु पुत्ता वयरसेणसूरि-गुरु-पय-भत्ता २
अचु दोलउ जढियइ(?) कुल-मंडणु गुरु-पय-भत्तु दीण-दुह-खंडणु
सधिय साह गोपति जसु भाई धम्मह कज्जि विसेस सहाइ ४
ते विन्नवहिं सुगुरु 'पहु एहु, हेमकलसु निय-पट्टि ठवेहू'
तं तूठइ सुह-गुरि अणुमन्निउ रलियाइत थिय साह ति विन्नउ ६
चउहत्तरइ वरिसि जि हासिय वीयहं संघ मिलिय मण हरिसिय
वीर-भुवणि महिपाल-पुरंतरि वट्टंतइ आणंदि निरंतरि ८

घत्ता

वज्जंतइ तूरिहिं वयरसेणसूरिहि हेमकलस सुपट्टिटहिं ठविउ
अनु तसु जगि सारउ मंगल-कारउ हेमतिलकसूरि नाम किउ ॥९

[७]

हेमतिलयसूरि पट्टि बयट्ठहं बहुविह-लद्धि-समिद्धि-विसिट्ठहं
भविय-लोय पडिबोह करंतहं बार वरिस जं गय विहरंतहं २
तो तसु सुह-गुरु भरु अप्पेविणु आरासणि निय आउ मुणेविणु
दस-दिण-अणसणु पालि निरुत्तउ वयरसेणसूरि सग्गि पहुत्तउ ४
तक्खणि मिल्हवि मणह विसाउ हेमतिलकसूरि गणहर-राउ
महि-मंडल विहरइ गुणवंतउ दिणि दिणि गच्छ-सहिउ जयवंतउ ६
तो गुरि बहु मुणि साहुणि दिक्खिय झत्ति पढाविय विहि-मुह सिक्खिय
तंह तणा गुण जाणि जहिट्ठिय मुणि साहुणि जह-जुग्गि पइट्ठिय ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

वीलाडइ पुर-वरि मणु-सय-अच्छरि पदमि साहि उच्छवु कियउ
तहिं पढतहिं भट्टिहिं सुगुरु-सुपट्टिहिं रयणसिहरसूरि थप्पियउ ॥९

[८]

अह गुणि गरुवउ सो गणधारू निरइयार-विहि-विह(हि)य-[वि]हारू
थेरा-वसि नायउरि पहूतउ आउ जाणि तो भणइ निरुत्तउ २
साठि वरिस व्रतु पालिउ निम्मलु सात जात करि लियउ चरण-फलु
अम्हइ सत्ताउ वरिस चहुत्तरि मास तिन्नि ते पूरिय सत्वरि ४
हव पुण थाकई जे दिण केई सफल करउं ते अणसणु लेई
इम भणि संघु क(ख)मावइ सुह-मणु एगारस दिण पालइ अणसणु ६
मुणिहिं गुणीनइ समइ सुहारभि बाह(रु?)त्तरइ माह वदि बारसि
गच्छ सीख देविणु सुह-चित्तू हेमतिलकसूरि दिव संपत्तू ८

घत्ता

जसु महिम करंतइ जणि गुणवंतइ जिण-सासणि(?णु) उज्जोइयउ
सो गुरु निय-गच्छहं अणु मुणि-सत्थहं संघइ मण-वंछिय दियउ ॥९

अंत : ॥इति श्री हेमतिलकसूरि संधि ॥

१८ तव-संधि

[कर्ता: विशालराजसूरि-शिष्य रचना-समय:ई.स.१४०० पूर्व, लेखन-समय:ई.स.१४४९]

ध्रुवक

सायर-पणमिर-सुर-वीर-जिणेसर पणमवि पणय-पसन्न-मण
तव-तिव्व-हुआसण-हुअ-कम्मिघण जो संपत्तउ नाण-घण ॥१

[१]

रे जीव तविज्जइ तव पहाण पामिज्जइ निम्मल जेण नाण
जाणिअ जिणमय तव बार-भेअ निन्नासिअ भव-भव-भमण-खेअ २
अमय-आहार सुर-जम्मि किद्ध अनइ नर-जम्मि परमन्न निद्ध
मोदक-दल सुत्तिअ सेव सिद्ध खज्जाइ खद्ध घेउर पसिद्ध ४
सालीय-दालि-घय-घोल-दुद्ध फल-जाई बहुपरि खद्ध मुद्ध
तह वि न हु तित्तीअ तुज्झ जाय रे जीव कीव पामिसि अपाय ६
किं किज्जइ जइ तइं भणिअ सत्थ किं किज्जइ जाणिअ बहुअ [1]अत्थ
महुरा-मंगू अवि निउण-लीह रलिउ रस-गिद्धिइं अजिअ-जीह ८
पच्छाअ वि सोअसि विगय-सन्नु भरुअच्छ महिस जह हुअ रिहन्नु
अवगणिअ जणय वयण इं जो अ अकय-तव-चरण संपत्त-सोअ १०
तणु-मिसिए अरि तुह जाण लग्ग जउ सबलउ तउ तंउ नरय मग्ग
अह निबलउ तउ छोडीवि देह लहु पहुचिसि जिअ निअ-मुत्ति-गेह १२
वरिसाण सहस पालेवि दिक्ख तव-दूमिअ छंडिअ-सुद्ध-भिक्ख
रस-गिद्धि-वसिइं कंडरीअ मुक्ख संपत्तउ सत्तम-नरय-दुक्ख १४
रे जीह रंकि तुह [2]किसिउं कज्ज सहु लेसिइ ए उदर जि अलज्ज
सरस सरस सवि आहार सार गल-तलि लेई करिसिइ असार १६
लंघण विणु जिम नवि कोइ अत्थ अप्पइ अप्पउ[4] लहणउ जि इत्थ
तिम किम विणु असणह रोइ एह अप्पेसिइ सिव-सुह नरह देह १८
भवि भवि तुं खायसि पियसि जीव पुण जिणमय-तव न तवेसि कीव
तुह खद्धुं नवि तोलाइ सेलि तुह पिद्धुं नावइ[5] गणण-मेलि २०

घत्ता

[6]इय चिंतिअ रे जिअ करि नं निअ-हिअ बार-भेअ-तव-तवण-पर
[7]तवि नवि पडिबद्धय जे रस-गिद्धय [8]लहिसिइं ते नर दुक्ख-भर ॥२१

1. A. असत्थ 2 A तुं न० 3. A. किसउं 4 A अप्पणउ 5. A. भावइ 6. B. अचिंतिअ 7. B तव 8 A लहसिइं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२]

मुक्ख रे जीव भुक्खाइ दुक्खं सयं नर य जम्मम्मि पत्तम्मि जं पत्तयं
तस्स दुक्खस्स णं तस्स माणं पुणो केवलन्नाणि जाणेइ नन्नो [1]जणो २
मेरु-हिमवंत-वेअड्ढ-पमुहा सुआ लोग-मज्झम्मि जे पव्वया विस्सुआ
तेह माणेहिं अन्नाइं कु वियप्पए सयल सलिलं समुद्दाण पुण [2]घप्पए ४
तह वि नरएसु सव्वेसु जे सत्तया पुव्व-कम्माण दोसेण संपत्तया
कह वि तेहिं तु तित्तो न संपज्जए तेण आहार-रस-गिद्धि न हु किज्जए ६
पुण वि सुणि जोव तिरिअत्तणे पत्तए सहिअ दुक्खे अकामेण रे जं तए
हत्थि-जम्मम्मि भुक्खाइ [3]सुक्काडिओ गलिअ-गत्तो सि गत्तासु तं पाडिओ ८
[4]खर-करहेसु महिसेसु आसे विसे संबरे सूअरे वेसरे तह ससे
बहुअ दिवसेसु असणं न वा पाणयं पाविअं नवि अ इट्ठं [5]तए ठाणयं १०
जलय-मच्छाइ-जम्मम्मि रस-गिद्धओ गलिय-गय-आमिसह कज्जि गलि विद्धओ
खयर-मज्झम्मि कण-कज्जि जालं गओ गहिय अन्नेहिं वड्ढिओ अ कालं गओ १२
तह य विगलिंदि-चउरिंदि-तेइंदिए जाय तं जीव [6]बेइंदि-एगिंदिए
एह आहार-कज्जेण बहु बहु परे पत्त-मरणो सि असरण्ण कालंतरे १४
जस्स देवेसु उववाय न हु अन्नओ सो वि हरिवास-वासि वि हो जुगलिओ
वेरि-देवेण भरहम्मि इह आणिओ करिअ पावाइं रस-गिद्धि कुगइं गओ १६
जस्स भीआउ मुद्धाभिसित्ता गया नयण-नीराभिसिच्चंत सेसं गया
बाल-मंसम्मि रसिओ स-रज्जं पि सो हारिउं जाय सोदास वणि रक्खसो १८
इंद-आएसि धणएण जा निम्मिआ बारवइ-नयरि निवसंत-बहु-धम्मिआ
जा य दीवायण-क्खित्त-जलणामया मज्ज-दोसेण तक्काल गय-नामया २०
कन्ह-सेणी-पमुइ सुद्ध-सम्मत्तया तित्थकर-वयण-नीरेण संसित्तया
बार-भेअं तवं सूअ-रूवं विणा सग्ग-अपवग्ग-फल-रहिअ हुअ तक्खणा २२

घत्ता

इणि[7] परि गुरु संपइ महु हिअ जंपइ कंपइ भव-भड-भइण मण
ता निरुवम सत्तिअ तव-वर खत्तिअ झत्ति अ किज्जइ निअ सरण ॥ २३

1. B. जिणो 2. B. थप्पए 3. B. मुक्काडिओ 4. B. करह 5 B. अइट्ठं 6. B. जाइ 7. A इणपरि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३]

अह बार-भेअ-तव-तवण-लग्ग छंडेविणु घर-पुर-रमणि-वग्ग
अणुक्कमि अणुमोअसु[1] साहु-सत्थ तुह होइ जेण[2] जीहा पसत्थ २
छम्मास भमंतइं गामि गामि मोदक मिसि जिणि निअ-कम्म पामि
चूरिअं[3] ऊरीकय णाण-सार समरिज्जइ सो ढंढणकुमार ४
ऊणोअरिआ तव तविअ जेहिं सग्ग-अपवग्ग-सुह लहिअ तेहिं
गोसालाइसु जे पुण विसेस तं जाणेवउं[5] तव-महिम लेस ६
जो चउ निअ-निअमह भंग-भीरु न[6]-नरय-स्त्रयर-तिरि-जम्म-वीरु
उज्झिय गय सुरगइं धम्म-मूल सो नंदउ नंदउ वंकचूल ८
साहिअ समग्ग भवहेण जेण तणु जाणिय परवस अ मयेण
रस-छंडिअ वसि-किअ-लद्धि-सिद्ध गय सग्गि सणंकुमारो पसिद्ध १०
जिणि तत्त-सिलोवरि निअ-सरीर सुक्काडिअ लहु किय तेण धीर
पत्तउ उत्तम-सव्वट्ठ-सिद्धि सो सालिभद्द आसन्न-सिद्धि १२
सिवि[7] रहिवुं अचल अणंत काल तिणि कूव-पट्ठि जो उब्भिआल
सिक्खेइ थिरत्तण [8]चउर मास संभूति-सीस सो दुह-विणास १४
निअ-कम्मकार मण-वयण-काय तसु दोस जणाविअ सु गुरु-राय
तिन्नि वि छंडिअ जो मुत्त जाय सो जयउ सुज्ज सिव-सुह-सहाय १६
विणएण जेण सिरे-वीर-सामि पामिअ कामिअ किअ वेरि नामि
सो पुप्फसाल[9] वय-गह-रसाल जयवंत विणइ-जण-कुसुममाल १८
जिणि वाहिअ वेआवच्चि देह [10]दासह जिम भाडउं दिद्ध एह
सुर-भोग पवर-रमणी-सिणेह सो नंदिसेण होसिइ अदेह २०
विग्गह किअ जिणि हठि वरिस बार निय-देह-दुग्ग-ठिअ कम्म-वार
अक्खर-बलि कड्ढिअ पत्त-नाण सो मास-तुसउ [11]मुणि-सुहड जाण २२
दढ झाण जस्स जाणेवि खे वि सुर-नर निअ-सिर धूणंति ते वि
जाणिअ निसेह तिणि सिद्धि-पत्त सु पसन्नचंद-रिसि भव-विरत्त २४
सोवन्न-सेल-सम-पह-थिरस्स उस्सग्ग-रंगि जसु संठिअस्स
पासे धुव जिम धुव-दीव जाय सो नंदउ चंदवडिंस राय २६

1. B. अणुमोहसु 2. A. जेम 3. A. चूरी 4. A. सग्गाप० 5. A. जाणेसु 6. A. तिरय 7 B. सिव 8. A चयारि 9. A पुप्पमाल 10. A दीसहि 11. B. रिसि 12. B सुंदर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

इय जीव वियाणिय संवर आणिय माणिय गुरु-वय अमय-सम
बहुविह कम्मासय अइ उद्दामय नामय निय-सत्तिइं विसम । २७

[४]

सुणि-न रे जीव तं किं पि कोऊहलं [1]अह व पालेसि निच्चं वयं निम्मलं
अहव जत्ताउ तित्थेसु कारेसि रे देसि दाणं जणाणंदणं बहुपरे २
बारसंगाइं सव्वो वि सिद्धंतओ भणिअ जाणेसि अत्थे पसत्थे तओ
सत्त-खित्तेसु सत्तोइ दव्व व्वयं अहव पालेसि सम्मत्तयं सुव्वयं ४
एग गिद्धिं न छंडेसि जइ जीव रे तो तया निम्मिआ धम्मु सव्वे परे
किं पयं देसु एअस्स रसगिद्धिणो चिंतयंता इमं नेव फलवद्धिणो ६
भवण-वंतर जहन्नम्मि देवे भवे एह आहार दिवसंतरा संभवे
मज्झिमाणं तहा [2]जोइसाणं जए दिण पुहुत्तेण आहार वन्निज्जए ८
भवणवइ-चमर-इंदाइ जम्मे पुणो वरिस-सहसेण जाएइ असणे मणो
पढम-बिइअम्मि सग्गम्मि [3]दोहिं तहा तइय-चउत्थम्मि सहसेहिं सत्तहिं खु हा १०
दसहिं तह चउदसहिं पंचमे छट्ठए सत्तमे सतर-सहसेहिं मण-इट्ठए
इगिग-सहसेण जाणिज्ज वुड्ढी इमा सेस-सग्गेसु गीवेअगेसु क्कमा १२
जाव नवमम्मि आहार गेविज्जए एगतीसेहिं सहसेहिं वन्निज्जए
तह य तित्तीस-सहसेहिं तेणुत्तरा विहिअ आहार-कामा मणेणं सुरा १४
चक्कवट्टिस्स देवाइ-साहण-क्कए ठाण-ठाणम्मि अट्ठम-तवो किज्जए
वासुदेवा बला मंडलस्सामिणो कज्ज दुस्साह साहंति तव-कारिणो १६
मुत्तिल्ल पत्ताण सत्ताण पाणासणं नत्थि णंते वि काले वि कइआ वि णं
एह ठाणाणं अन्नं पयं सोहणं नत्थि तेलुक्कि सुक्खाण आरोहणं १८
जइ वि एआण अन्नयर पय दिज्जए तो वि एसो विसीएइ किमु किज्जए
तेण एयस्स तिरिअत्तणं जुज्जए जत्थ [6]रत्तिम्मि दीसम्मि पुण खज्जए २०
सव्व पावाइं कम्माइं दुट्ठा गहा कास-सासाइ-कुट्ठाइ दुक्खावहा
[5]जोइणी-साइणी-भूअ-वेआलया तिव्व-तव-[7]सोणुभावेण सव्वे गया २२

1. B. जइ वि 2. B जा इसाणं 3. B. येहिं 4 B. ठाणो ण 5. B जत्ता 6. A. जाइणी 7. B सोणु०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सो न मंतो न [1]ततो न जंतो वि सो सो न देवो न सो दाणवो रक्खसो
तं न कज्जं न सुक्खं जए विज्जए जं न तवसा खणेणावि संपज्जए २४
नारयाईण दुक्खाण वि णिवारणं सग्ग-अपवग्ग-सुक्खाण पुण कारणं
तवउ तिव्वं तवं भविअ भावुज्जुआ जं तुमं सिद्धि ईहेइ रिद्धि जुआ २६

घत्ता

सिरि-सोमसुंदर गुरु-पुरंदर- पाय-पंकय-हंसओ
सिरि-विसालराया सूरि-राया चंद-गच्छवयंसओ ॥ २७
पय-नमिय सीसिइ तासु सीसिइ एस संधी निम्मिआ
सिव-सुक्ख कारण दुह-निवारण तव-उवएसिइ वम्मिया ॥ २८

1. B. मंतो 2 अंतः A. इति श्री तपःसंधि समाप्त । सं. १५०५ वर्षे ॥
B. इति श्री तपस्संधि लिखिता देवकुले श्री तपापक्षे कृतमास्ते ॥ छ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१९. अणाहि-महरिसि-संधि

[कर्ता : अज्ञात रचना-समय : ई. स. १४०० पूर्व, लेखन-समय : ई. स. १४३०]

ध्रुवक

पय पणमवि सिद्धह नाग-समिद्धह सासय-ठाण-पयट्ठियह
साहू गुणवंतह चरण-पवित्तह जोव अणाह सणाह किय ॥ १

[१]

धम्मत्थ-गई निसुणेहु तत्तु पयडेइ सुगुरु निय-गुणहिं जुत्तु
जीविहि ममत्त-मोहिय-मणाहं[1] अणुसट्ठि देइ सुय भणिय ताहं[2] २
इह जंबु-दीवि भारहु पसिद्धु तहिं मगह-देसु धण-कण-समिद्धु
तहिं गहिर-पुरिहिं पायार-तुंगु रायगिहुं[3] नयरु निणहरहिं चंगु ४
नरवइ तहिं[4] सेणिउ करइ रज्जु[5] हय-गय-रह-चड भड-कोडि-सज्जु
अन्नह दिणि राउ विहार-भूमि गउ मंडकुच्छि वर-वेइयम्मि ६
उज्जाण पलोइय चूय-चारु चपय-असोय-वड-[6]पीययारु (?)
नालियर केलि नारिंग जाइ पाडल सेवत्तिय केवि जाइ ८
कोकिल-कुल बहु सारंग मोर कलहंस कीर वायस चकोर
तहिं रुक्ख दक्ख नाणाविहाण जोअंत जाइ तरु फल-निहाण १०

घत्ता

नंदणवण-[7]उवम्मु सुट्ठु मणोरमु तहिं पिक्खइ मुणि गुण-निलउ
[8]दय-खंति-संजुत्तउ गुत्तिहिं गुत्तउ जिण दिट्ठइ पावह विलउ ॥ ११

[२]

पिक्खवि मुणि मणि चिंतइ नरिंदु किं खेयरु किं सुरु अह सुरिंदु
अह सोम-मुत्ति संपुन्न-चंदु तव-तेयवंतु किरि दिणयरिंदु २
सुकुमालु[9] केलि-गब्भह समाणु वपु देह-कंति-लक्खणह ठाणु
वपु दंतु खंतु गंभीर धीरु मुणि अमल-चित्तु जह सरय-निरु ४
उवसम-निहाणु संचत्त संगु निच्छइ सुणिअइ मणि धरिउ रंगु
वंदेइ पयाहिण पुण करेउ उवविसइ नरेसरु नर-समेउ ६
अइ दूरि नवि य आसन्न-ठाउ मुणि पुच्छइ अंजलि करिउ राउ

अशुद्ध मूल पाठ: 1. मणांहु 2. तांह 3. रायग्गिहु 4. त्तहिं 5. रजु 6. पीयायारु 7 उवसमु० 8. दिय 9. सुकमालु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'अज्ज वि पहु तरुणउ जुव्वणत्थु काम-ऽत्थ-भोग-भुंजण[1]-समत्थु ८
सामन्नु एहु किम वहसि अज्ज तरुणत्तणि अइ दुक्कर पवज्ज
महु कहहि सयलु निय-चरिउ एहु किम मुक्क दारु धण सयण गेहु' १०

घत्ता

मुणि रायह अग्गइं कहइ समग्गइ निय-वित्तंतु सुमहुरै[3]-झुणि
'कारण सामन्नहं भव-निव्विन्नहं निसुणहि नरवर एग-मणि ॥ ११

[३]

हउं अणाहो य नवि नाह महं[4] कु वि जए
कुणवि अणुकंप अह सरणु पडिवज्जए'
हसवि वयणं च पभणेइ मगहाहिवो
'एस तुह इड्ढिमंतस्स[5] नवि नाहओ २
होमि हउं नाह तुह विलसि सुह-संपया
पंचविह विसय मणहरण सह-भज्जया
देमि तव रज्जु पसाय[6] हय गय भडा
सेज वर-तूल तंबोल रस विच्छडा' ४
'पढम अप्पणु अणाहो सि तुहुं[7] नरवरा
नाहु किम होसि अवरहं[8] पुहवीसरा'
भणिउ रिसि एव जा सेणिइ वयणयं
चित्ति संभंतु[9] पडिभणइ भिन्नं हियं ६
'वयणु सुणि नाह तुह एहु अपुव्वयं
भणिसि जं मं अणाहो य सुह-संपयं
मज्झ हय हत्थि रह जोह पुहई[10] धणं
दास दासी य वर कामिणी परियणं ८
आणवडिभो य वट्टेइ मह परिअणो
एरिसा रुद्धि भुंजेमि सुह-गय-मणो
सव्व गुण काम महु रुद्धि हं नरवई
कह अणाहो [ह]उं भणसि जुट्ठं जई' १०

1. भुजण 2. अयइ 3. सुमुहर 4. महि 5. इच्छिमं० 6. पसाइ हइ ग० 7. तुह
8. अवरांह 9. संजंतु 10. पुहइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

[1]नवि मुणवि अणाहह अहव सणाहह नवि लब्भहि परमत्थु निव
जिम होइ अणाहु वि अहवँ सणाहु वि सुणि अक्खउं हउं तुम्हि तिव ॥११

[४]

निसुणि अं वित्तु मह पुच्छए तुह कहं
जिम अणाहो य जण-मज्झि हउं दुह सहं
नयरि कोसंबि धण[3]-रिद्धि-जण-संकुला
पुरि पायारि मंदिरिहिं रयणुज्जला २
करइ तहि रज्जु मह बप्पु जण-सुहकरो
तुरय-गय-लक्ख भड-कोडि अरि-खयकरो
तत्थ मह देहि उद्दंड[4] हूय वेयणा
पीड सव्वंग दाहेण[5] गय चेयणा ४
तिक्ख-सत्थेण देहस्स अब्भिंतरे
कुविउ जिम अरि विदारेइ उयरंतरे
अट्ठि-चम्मावसेसो निराणंदओ
रयणि-दिवसाइं वोलेइ गय-निद्दओ ६
मज्झ दुक्खेहि मह जणउ तल्लिच्छओ
जेम सिल तत्त उवरम्मि जल-मच्छओ
राय-वयणेण आँयरिय[6] बहु आगया
विज्ज मंतेहिं तेगिच्छ गह-कुसलया ८
[7]नरवरिंदेण भणिया य तेगच्छिणो
कुणहु ज्ज[8] होई नीरोगु मह नंदणो
देमि तुम्ह रज्जु सार-भु(?) विउलं घणं
देस नगराइं[9] वर-कन्न-रयणं कणं १०

घत्ता

एवं ते निसुणवि मंतगविग्ग वि निय निय सत्थ समायरहिं
जसु कित्ति सुणंतह धनु इच्छंतह निय-आगम-बुद्धिहिं सहियँ[10] ॥ ११

1. वब्भहि 2. अहवि स० 3. धधण 4. उडंडं हुय 5. दोहेण 6. आइरिय 7. नरवारिदे० 8. जोइ 9. नवारांइं व० 10. सहिया

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[५]

गह-गणिउ भणहिं जो जोइसीय रवि-राह-पीड सुणि विप्प ईय
पूयइं बुहु मंगलु राहु केउ नव-गह-पूया कीरंति ते उं २
मंतिग जोइप पिंगल भणंति जल-रक्खसु रय-पीडा करंति
चउअट्टइ य मंडल पूयंति बलि दीव कुसुम नवि पीड जंति ४
अवरे वि मास-जव-सरिसवाइं ताडंति लवण जलणस्स माहिं
गुग्गल दहंति मुद्दा धरेउ नवि सकइ पीड को अवहरेउ[3] ६
जुज्जंति बिज्ज सीयल पलेव चंदण-पउमणि-जल-जोय सेय
काढेइ रस [4]दिज्जहिं चंदणाइं सक्कर परितिज्जइ चाउजाइं ८
पाईज्जहि सीयल एल-नीर घल्लिज्जइ अच्छण अल्ल चीर
कय होम-संति दिय चाउवेय दिज्जंति दाण बहु विविइ-भेय १०
घय-लिल्ल कुंभ गाविहिं सवच्छ बहु उडद लोण तिल रोह रच्छ
जुत्ता हल वाहण भूमि-दाण दिज्जहिं तेडवि दियवर-पहाण १२

घत्ता

एवंविह विज्जह राय सविज्जह गय निप्फल उववाय सवि
वेयण नवि फिट्टइ दाहु न त्रुट्टइ हउं[6] चिंतेमि अणाहु भुवि ॥१३

[६]

इत्थंतरि महु माय समागय पुत्त-सोगि रोएवा लग्गिय
भणइ वच्छ तुइ कइ कइ दुक्खइ सोगु करइ पुणु दुक्खु न रक्खइ २
बंधव जिट्ठ फिरहिं चउ-पक्खिहिं[7] हुय सन्नद्ध-बद्ध भड-लक्खिहिं
जे समत्थ अरि-दल संहारहिं मह अणाह ते पीड न वारहिं ४
जे कणिट्ठ मह वल्लह भाई य ते महु दुक्ख सुणवि सहु आविय
लइहिं भणहिं किं भाइय किज्ज तो नवि वेयण लइ न हु विविज्ज (?) ६
जिट्ठ बहिण मंगलु बोलंती य सुणवि पीड मह पासि पहुत्तिय
अवरि कणिट्ठ सगी य सवक्किय दाहु न फिट्टइ कन्हइ थक्किय ८
अन्न वि सुसर-वग्ग सालय-जण माहव-माउल मिलिय सदुह-मण
मित्त चयहिं जे जीउ मह कारणि ते निरत्थ दुह-सायर-तारणि १०

1. हिं 2. कुसम 3. अवदारेउ 4. दिज्जा चं० 5. पायज्जहि 6. हउ 7. पक्खय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चुल्ल-माइ भउजाई य फूई य भज्ज-जणणि पित्रिय-मा बहिणि य
मंगल-रक्ख करहिं बहु भंगिहि तो वड्ढइ दोहु[1] सव्वंगिहिं १२

घत्ता

इउ इत्तउ मिलियउ जणु कलकलियउ तो अणाहु हउं मगह-निव
जा मह वल्लह पिय सा कन्हइ थकिय गयणि मयंकह जुण्ह जिव ॥१३

[७]

दुक्खि मह पत्त सा रायवह कन्नया नेउ पासाउठेइ (?) आदन्नया (?)[2]
चलण[3] चंपेइ फरसेइ सिरु करयलं पिट्ठि[4] जंघोरु उयरं च वच्छत्थलं[5] २
ताण मुक्कं असण-पाण-तंबोलयं गंध-मल्लं च ण्हाणं च वर-तूलियं
पइहि सिरु देवि नीसासु गुरु मुंचए अंसु-पुण्णेहिं नयणेहिं उरु सिंचए ४
मुक्कु सिंगारु नवि विरयए[6] केसया सुसिय सव्वंग हुय अट्ठि-तय-सेसया
भणिउ मइं मिल्लि पिय सोगु पइ अन्नयं भणइ तुह सरिसु जलु असणु जिउ मरणयं[7] ६
जिम[8] जिम देहि वड्ढेइ मह वेयणा पडइ मुच्छाइ विच्छाय निच्चेयणा
धाह मिल्हेवि पभणेइ पिय-सामिणो पियर-कुल-देवि विन्नवइ सुरवर-गणो ८
मज्ज नाहस्स फेडेइ पीडा दुहं दासि तुम्हं तिम करहु जिम होइ[9] सुहं
कुरु घिउ दुद्धु न भुंजेमि तंबोलयं देमि तुम्ह भोगु बलि सय-सहस-मुल्लयं १०
एस मंह[10] भज्ज अणुरत्त-रूवं सया पियइ नवि नीरु जेमेइ अणुमन्निया
नेय दुक्खाउ मोएइ बहु भत्तया मह अणाहस्स दुह पीड सव-गत्तया १२

घत्ता

जा फिट्टइ नवि दुहु होइ न मह सुहु ता मइं चिंतिउ जइ किमइ
रोगिहि मिल्लिज्जउ ता पडिवज्जउं जिणह दिक्ख पसरइ[11] तिमइ ॥१३

[८]

जाव चिंतेवि जिण-दिक्ख मइं[12] निय-मणे ताव सुह लग्गु पसरणह सिरि तक्खणे
उरह उयरस्स ऊरूण जंघाउयं जेम विसु मंत-जोएण तिम दुइ गयं २
एम निसि खयह गय वेयणा खय गया सच्छ निय-देहि संलद्ध मइं[13] निद्दया
ता पभायम्मि पिय-माइ बंधव-जणो अंगि न हु माइ हरसिउ सयलु परियणो ४
विज्ज-[14]मंतिग य नेमित्त-जोइस-जणा सयल निय सत्ति[15] फोरवहिं हरसिय-मणा

1. दीहु 2. भ्रष्ट पंक्ति 3. चल्लण 4. पिट्ठि 5. वच्छच्छेलं 6. वियरए 7. जेम 8. तुम्हा 9. हुइ 10. महब्भज्ज अणु॰ 11. ॰रह ति॰ 12 मइ 13 मिइं 14. मंलग 15. सति फोखहि.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भणिउं मइं वहउ मा को वि मणि गव्वयं अवरु नं ओसहं जेण मह दुह गयं ६
जाव जीवं च सेवेमि तं [1]ओसहं सव्व-सावज्ज-जोगे य वज्जियमहं
करि पसाउ य मुक्कलहुं मइ बंधवा लेमि जिम दिक्ख महवयइ चत्तासया ८
नेह-नियलाइं भंजेमि गुरु दुक्खिणा चत्त-संगो य कय जलं व कुक्खिणा (?)
गहिवि जिण-[2]दिक्ख दस-भेउ जई[3]-धम्मओ समीइं[4]-गुत्तिय-उत्त समभावओ १०
पुढवि जल जलण वा[5]उ य वणकाइणं बि-त्ति य चउरिंदि-पंचिंदिय-पाणिणं
जाउ हउं नाहु अप्पाण अन्नु वि जणे वसुह विहरंतु संपत्त तव काणणे १२

घत्ता

कम्मह खय-कारणु भव-दुह-वारणु सरणु सहायउ रायवर
जिण-वयणु सुणंतह चरणु धरंतह अप्प इ अप्पउ नाह वर ॥१३

[९]

अप्पा च नरय-गइ-दुक्खु देइ अप्पउ सासय-सुहि मुक्खि नेहि
अप्पउ नंदणवणु कामधेणु निय-अप्प दुट्ठु अरु सुट्ठु सयणु २
बंधइ अणवट्ठिउ असुह-कम्मु अप्पा सुपइट्ठइ करइ धम्मु
विसु अमीउ सहोयरु सत्तु[6] लोइ भव-मुक्ख[7]-हेउ सुणि जेम होइ ४
जे गहवि दिक्ख महवयइं लेवि सामन्नु धरहिं [8]अंगीकरेवि
रस-गिद्धि न अप्पउ वसि करंति बंधेवि कम्मु भव-दुह सहंति ६
उवउत्त न जे इरिया[9]यँ भास न हु वज्जइ बायालीस दोस
आयाण-समीइं[10] नोसग्गयाहिं ते मूढ न जिण-मग्गेण जाहिं[11] ८
चिरु लिंगु धरहि तव-नियम-हीण अप्पं च किलेसहिं मूढ दीण
[12]उस्सुत्त कहहिं कुडो कहाहिं वीससिय जंतु लिउ नरय जाहिं १०
कोऊहल जो जोइस सुमिण मंत लक्खण य कुहेडय विज्ज तंत
आवज्जहि गारव-गिद्ध जि जणु दुहिं पत्तइ ते न हु [13]हुंति सरणु १२

घत्ता

न वि करइ त केसरि विसु अरि अहि करि नवि वेयालु न जल-जलणु
दय-खंति-विवज्जिउ अप्पु न निज्जिउ करइ जु जीवह दुट्ठ-मणु ॥१३

1. उसहं 2. ०हिक्ख 3. जय–धम्मउ 4. समीय 5. वाऊ य 6. सन्नु 7. मुक्खु
8. अगीं० 9. इ 10. ०मीय 11. जांएहिं 12. उसत्त 13. हूति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१०]

आहारु उवहि जे वसहि पत्तु — अणएसण भुंजहिं राइ-भत्तु
विमुयहि सचित्त अचित्त कुद्ध — हुयवह-पायरम्मि तन्ह लुद्ध २
तणु पोसहिं धोवहिं भूसहिं गत्तु — ते अप्पणि अप्पइ हुंति सत्तु
कुलि गामि वसहिं ममत्तु करहिं — सयलु वि अणिच्चु नवि चित्तु धरहिं ४
अन्न वि मुणि जे जिण-आण-जुत्त — विहरहिं जगि निस्सह सर्मय गुत्त
बलु सत्ति न गोवहिं वीरियारु — निय-सत्ति वहहिं सीलंग-भारु ६
पाणि-वहु अदत्तु लीउ वज्जइ अदत्त — मेहुन्न परिग्गह जं दुट्ठ भत्त
वज्जहिं कसाय इंदिय दमंति — ते अप्प-नाहु अप्पह करंति ८
नाणिणे दंसणि चरिणिण तवेण — वीरिय भावण सत्तिण बलेण
दसविह-जइ-धम्मु करंति धीर — उवसग्ग-परीसह-सहण-वीर १०
आवस्सग्गहणासेवणं ति — अपमत्त काल-पडिलेहणं ति
उज्जुय पर-उवयारिहि निरोह — अखुभिय-चित्त जह पवर सीह १२

घत्ता

छट्ठ—ऽट्ठम-पक्खिहिं — मासुववासिहिं — णाणाविहेहिं अभिग्गहहिं
जे तवि तणु सोसहिं — संजमु पोसहिं — लीलइ वच्चइं सिव-सुहइ ॥१३

[११]

कहिउ तुह राय निय-सयल-वित्तंतया
जिम अणाहा सणाहा य जगि सत्तया
रक्खियव्वो पमाउ य तणु-वय-मणो
लद्धि कुल-जम्मि खित्तम्मि आरिय-जणे २
धम्मु जिणनाह रूवं अरोग्गत्तणं
साहु-सामग्गि सद्धा य जिण-सासणं
धम्मु अणगारु गिह-धम्मु निय-सत्तिणा
धारियव्वा य भावण सुह-कंखिणा' ४

1. नाणिणी 2 अक्खु० 3 ०विहइ अभिअहहिं 4 अणाहां सणाही य जंगि 5 सद्धा 6. अहिमारु 7. ०व्वो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुट्ठु नरनाहु कय-अंजलि पभणए
'कहिउ जहट्ठिउ अणाहत्तयं मह तए
खमसु पहु जाण-वाघाउ जो तुह कउ
खोहु आयासु आसायणा अविणउ ६
कामभोगेहिं जं मूढ न हु तिप्पए'
कुणवि पयाहिणं पुणु वि पुणु खामए
भत्तिसारं च पणमेइ मुणि सेणिउ
पत्तु निय-नयरि दिण गमइ जिण-धमि रउ ८
मुक्क-संगो य मुनि विहरए महियलं
सुद्ध-चरणेण मणु सरिस सारय-जलं
भविय बोहंतु रक्खंतु वर-संजमो
सिद्धि वहु-संगमत्थं करंतुज्जमो १०
अत्थु पुत्तस्स (?) संमुह रिसि वइयरो
कहिउ निय-मणं-सुहो अवर-जण-सुहयरो
चरिउ मुणिराय जे सुणहिं भावहिं मणे
ताहं न दुहु होइ सुहु लहहिं अणुदिणु जणे १२

घत्ता

रिसी-चरिउ सुणेविणु चरणु मुणेविणु होहु भविय स-मुत्ति थिर
चंदुथ(ज्ज ?)लु मणु करि समुपसिठायरि (?) खमहु कम्म संचिय जि चिर[4] ॥१३

---

1. साएयनलं 2 संमह वि रि० 3. मणु 4 अन्तः ॥ इतिः श्री अनाथी महर्षि संधि समाप्तः । श्लोक-संख्या १११ ॥८०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०. उवएस-संधि

[कर्ता : हेमसार रचना-समय : ई. स. १५०० पूर्व]

ध्रुवक

[1]ससहर-सम-वयणी दीहर-नयणो हंस-गमणि सरसइ समरे
जिण धम्म-[2]पसिद्धिअ निम्मल-बुद्धीय भणिसु संधि उवएस [3]वरे ॥ १

[१]

रे जीव तणी गति विसम जाणि [4]हिंडइ [5]चउरासी लक्ख खाणि
जिम अंजलि-धारिउं गलइ नीर तिम परिअण धण जोविअ सरीर २
तो[6] दुलहु लहेविणु मणु[य]-जम्मु सावय-कुल करुणा-रम्म-धम्मु
[7]सम्मत्त-रयणु तिहुं भुवणि सार बारहं[8] वय पालहुं[9] निरईयार ४
पालीजइ जीवदया विसाल भासिज्जइ हासा-मिसि न आल
[10]नं हु चोरी कीजइ नरय-कार पालीजइ सीलु अखंड-धार ६
अति लोभ न कीजइ हिअय-सूलु[11] संतोस धरीजइ[12] धरम मूलु
दमि इंदिअ चचल [13]चंल-सहाव [14]धाईजइ न स्त्री-हावभाव ८
लोपोजइ न हु गुरु-वचन-लीह बोलीजइ मधुरी वाणि जीह
न [15]वंसीजइ नट-विट-खूंट-संगि उवयार करीजइ विविह भंगि १०

घत्ता

नवकार सरीजइ मनि समरीजइ [16]एक-झाणि अरिहंत पर
सुह-गुरु पणमीजइ भाव धरीजइ सुह-गुरु-देसण अणुसरहो[17] ॥११

[२]

अह हियइ धरीजइ सुगुरु-वाणि अविमासिउ[18] काज न जाइ ठाणि
भासिज्जइ नवि पर-मम्म[19]-मोस अक्कोस न दीजइ [20]आल दोस २
[21]तह धरीइ मनि सम्मत्त सार पामीजइ जिम संसार-पार
नवि दीण-वयण [22]जंपिअइ लोइ जीविज्जइ जां [23]लगि जीव-लोइ[24] ४

---

1. B. ससिहर 2. B. पसिद्धि बुद्धि-समिद्धी 3. B० पर 4 B. हींडइ 5. A चुरासी 6. B भो 7 A. सम्मत्त रयण तिहि भुवण सार 8. A वारर इ 9. A पालउ निरतिचार 10. A चोरी नवि को० 11 A. हिअइ मूल 12. A. गुणह मूल 13 A. तर-स० 14 A. मूकिजइ स्त्री-जन-हाव० 15. A वइसीजई 16. A. इक्क झाण 17 A. ०सरउ ए 18 A. कीउं 19. A. मर्म 20 A कह वि दोस 21. B ता 22. A बोलिइ लोय 23. A लगइ 24. B लोगि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

न हु कीजइ [1]पत्थणहारु भंग टालेजइ दुज्जण जण कुसंग
अप्पाण पसंसा मा करेह सिंगार सउब्भड मा धरेह ६
[2]नवि कीजइ वयरी-जण-विसास नवि कीजइ वीससिआं-विणास[3]
जगि कीजइ गुणिजण-गोठि रंगि[4] आराहि जिणागम [5]नवल-रंगि ८
छंडिज्जइ न निय-कुल-आचार ववहार [6]सरीजइ दय-धम्म-सार[7]
मन रोस [8]कसाय न करि कलीय इम दीजइ[9] दुक्ख जलंजली य १०

घत्ता[10]

जस-माल वरीजइ धन वेचीजइ [11]सत्त-खेत्ति सइ हत्थि करे
तप-दान सरीजइ भाव धरीजइ भावण भावहु[12] विविह परे ॥ ११

[२]

अह गारव-माया-मय निरासि सिद्धंत सुणीजइ सुगुरु-पासि
[13]भावणु उवहोजइ [14]धम्म-मूल जो वसीकरण[15] विणु-मंत-मूल २
[16]ववहार करइ जो घण-पमाणि जो[17] बुल्लइ अवसर जाणि वाणि
जो जाणइ निय-पर-जण-विसेस तसु सेव करइं दुज्जण असेस ४
पर-गेहि म [18]वच्चहु प्रीतिहीणु जम्मंतरि[19] भासि म वयण हीण
अवगणीइ नवि नर राय रंक जिम जोवह[20] न चडइ दोस-पंक ६
परु गणीइ अप्प-समाणु जीव नवि कूडउं वचन न दोह कीव
पडिवन्नउ[21] पालइ वयणु लोइ तसु जीव न दुक्ख कयावि होइ ८
झाइज्झइ[22] एकु जि वीयराउ जिण-आण-भणी धरि चिति भाउ
इम बुद्धि[23] धरंतां रयणि-दीस सवि पूजइं मनि आसी[24] जगीस १०

1 A धम्महं भंग भंग 2.B न करीजइ 3. A विणाण 4. A रंगु 5. A सहसि जि रंगि 6. B सरिस दय धम्म 7. A. भार 8 B. कसाया करि 9 A. दोष 10. A. वस्तु 11 A. सप्त क्षेत्रि B, सत्त खेति 12. A. भावउ 13. A. सोविण य वही० 14. B धरम 15. B. वसीकरणा 16 B. विवहार करे 17. A. बोलइ 18. A. जाइसि 19. B. न हु दाखी अइ हीणु । 20. A. जीव न चुहरइ 21. A ०न्न वयण पालइ ज लोय 22 B इक्क वि 23. A. करंत 24 B आसा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घत्ता

उवएसह संधिअ[1] निरमल-बुद्धिअ हेमसार इम[2] रिसि कहइ
जो[3] पढइ पढावइ सुह-मणि भावइ [4]वसुह रुद्धि वद्धि सो लहइ[5] ॥ ११

*

1. B संधि निरमल बंधी 2. A इम वीनवई ए 3. A सुणइ सुणावइ 4 A सिवसुह
5. अंतः AB इसि उपदेस संधि समाप्त ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्दकोश

[अहीं महत्त्वपूर्ण शब्दो ज, संधि, कडवक अने पंक्तिना निर्देश साथे नोंध्या छे. ते ते शब्दोना संस्कृत पर्याय गोळ कौंसमां अने गुजराती अर्थ कौंस बहार आप्या छे. देश्य शब्दोनो मात्र अर्थ आप्यो छे. जरूरी विशेष नोंध गुजराती अर्थ पछी चोरस कौंसमां आपी छे. शंकास्पद शब्द के अर्थ (?) चिह्न वडे सूचवेल छे.

संक्षेप÷ अप०=अपभ्रंश, जू० गु०=जूनी गुजराती, जै० परि०=जैन परिभाषा, तुल०=तुलनीय, दे० ना०=देशी-नाममाला, पासम०=पाइअ-सद्द-महण्णवो, प्रा०=प्राकृत, प्रा० व्या०=प्राकृत व्याकरण (सिद्धहेमगत अष्टम अध्याय), म०=मराठी, रवा०=रवानुकारी शब्द, राज०=राजस्थानी, वै० सं०=वैदिक संस्कृत, सं०=संस्कृत, स्त्री०=स्त्री लिङ्ग, हिं०=हिंदी]

अउज्झ १.१.२ अयोध्या
अउर १.१३.२ (अपरं) अवर, हिं० और
अंक २.३.७ (अङ्क) रत्न-विशेष
अंध १०.२.५ आंध्रदेशीय मनुष्य
अंबिल १६.२.२ (आचाम्ल, प्रा० आयंबिल) आंबिल, तप-विशेष
अंबोडय २.११.३ (केशकलाप) अंबोडो
अक्खुडिय ११.९.११ (अखण्डित) अखूट
अखलिय ९.६.१ अस्खलित
अगड १२.३.१६ (कूप) कूवो
अगाह ६.५.४ अगाध
अग्गल १.२.९ अधिक
अग्गलि ११.४.२, १२.४.२ (अग्र+ल+इ=समीपे) आगळ
अग्गि (स्त्री०) १३.८.१ (अग्नि) आग (स्त्री०)
अच्छइ १३.१३.२ (प्रा० व्या० ४.२५), **अछइ** १३.११.२, **छइ** १३.११.३ (अस्ति) छे.
अच्छण १९.५.९ आसन ?
अजीरमाण ४.२.६ (अजीर्यमाण) पच्या विनानुं
अठ १६.२.२ (अष्ट) आठ
अड्ड–२.८.९, ४.८.१० (-आरोपय्) धारण करवुं
अढार १२.३.९ (अष्टादश) अढार
अणच्छ २.३.६ अनल्प
अणेसण ७.२.७ (अन्+एषण=एषणा-रहित) शुद्धि – रहित [जै०परि०]
अनइ १८.१.३ (अन्यदपि) अने
अनु ६.२.७ (अन्यद्) अने
अत्थिजण १.३.८ (अर्थि-जन) याचक
अद्द १४.४.५ (आर्द्र) आदु
अप्पणि १९.१०.३ (आत्मना) पोते
अप्पाराम ७. १ १ आत्माराम
अम्मा-पिइ ९.१.८ (अम्बा-पितृ) माता-पिता
अरबाग १०.२.४ (अरबक) आरब
अराल ५.३.३ (अराल) वांकडियुं
अरिह १०.५ २३ अर्हत्
अरु १.१२.९, १.१३.६ (अपरं च, प्रा० हिं० अरु) अने
अलस ११.५.४ (अलस) अळसियुं
अवट्ट ५.९.९ (आवर्त्त) वमळ
अवरीर १.४.४ (अपर) अन्य
अवसु २.१०.५ अवश्य
अहिनाण ९- ३.१३ (अभिज्ञान) एंधाण
आउट्टि ११.५.१५ (आकुट्टि) हिंसा
आगइ १२.६.६ (अग्रे) आगळ, हिं० आगे
आणवडिअ १९.३.९ आज्ञावर्ती
आपणपउं १३.६.३ पोताने
आराडिअ १४.४.१४ चीत्कार करतुं
आरिअ १०.२.११ आर्य
आल २.६·८, **आलि** १०.३.१६ (व्यर्थ) एळे
आलस १०.३.३ (आलस्य) आळस
आवारिअ ४.१२.३ (आवरित) पहेराव्युं
आस १३.९.४ अश्व

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आसवार २.७.७ (अश्ववार) असवार
आसोज १७.५.१ (आश्वयुज) आसो, हिं० आसौज
इंदियाल १४.१.२ इन्द्रजाल
इउ १९.६.१३ (इदम्) आ
इक्कल्ल १४.१.४ (एक+ल्ल) एकलुं
इक्कासी १६.३.१ (एकाशीति) एकाशी
इट्टा ३.१२.४ (इष्टका) ईंट
इणि १६.३.३ (एन) एणे
इम ११.१.२ (एवम्) एम
इसउ १७.२.५ (इदृश) एवुं, हिं. ऐसा
ईह्-१३.१४.६, १८.४.२६ (ईक्ष्-ईह्-) जोवुं
उंबर २.५.६ (उदुम्बर) उंबरो
उगसेण १५.३.१० उग्रसेन
उजुवालिया २.१९.८ ऋजुवालिका, नदी-विशेष
उज्जम-१०.४.११ (उद्यम) उद्यम करवो
उज्जाल-१.८.१ (उज्ज्वालय्) उजाळवुं
उज्जिंत ३.१.११ (उज्जयन्त) गिरनार
उछव १७.२.८ उत्सव
उठाइउ १२.९.१९ (उत्थापित) ऊठाव्युं, ऊँचु कर्युं
उडद १९.५.११ (माष) अडद
उण्हालअ १.७.१ (उष्णकाल) उन्हाळो
उतिम्म ११.४.४ उत्तम
उत्तरझयण १३.१.१ (उत्तराध्ययन) आगम-ग्रंथ-विशेष
उत्तरितु ५.४.८ (अवतरत्) ऊतरतुं
उन्भिआल १८.३.१३ ऊमेलुं
उमागि १३.९.१ उन्मार्गे
उयपट्ट ४.४.७, ४६.७ (उदकपट्ट ?) वस्त्र-विशेष
उल्हाविअ १३.८.२, १५.४.२ (निर्वापित) ओलव्युं
० उवम्म १९.१.११ (०उपम) -नी उपमावाळुं
उववाय १९.५.१३ उपाय
उवहाण १६.१.१ उपधान, तप-विशेष
उवास १६.२.१ उपवास
उस्सूर २.१०.९ (उत्सूर) असूरुं, मोडुं
ऊखल ११.६.९ (उदूखल) ऊखळ, खांडणियो
ऊरीकय १८.३.४ (ऊरीकृत) अंगीकृत
एकलडइ १३.५.२ (एकाकिना) एकलडे, एकलाए
एवड ९.३ १३ एवुं
एह १७.३ ८ (एषः) आ, हिं० यह
ओघउ ११.३.९ (उपकरणविशेष, रजोहरण) ओघो [जै० परि०]
ओलक्ख-२ १७.६ (उपलक्षय्-) ओळखवुं
ओलोअण ९.१.२१ अवलोकन
कइ १२.४.८ के
कउतिग २.१.६ कौतुक
कउल २.१३.३ कपोल
कंटी ५.६.५ कांट
कंथारी ५.६.५ (कन्थारी) वनस्पति-विशेष
कंबो २.११.९ (यष्टि) कांब, लाकडी
कटरि १.८.५ **कटरे** २.१४.६ (आश्चर्यम्) आश्चर्योद्गार [अप०, प्रा०व्या० ४.३५०]
कडयड १४.५.९ (कडकड-रवानुकारी ध्वनि) कडकड अवाज करवो
कढकढंत १४.५.१० कडकडतुं
कणइर ९.३.२५ कणेर
कणकणिर ५.१ ३ (रवा०) कण कण अवाज करतुं
कन्नाडी ६.५.१० (कर्णाटी) कानडी, कर्णाटक-देशीय स्त्री
कन्ह १८.२.२१ (कृष्ण) कहान
कन्हइ १९.६.८ (समीपे) कने
कलाय ११.१.१८ (कलाय) वटाणा
कवण १२ ३.६ (कः पुनः) कोण
कस १५.२.९ (कस्य) कोनुं
कहकह-१२.२.८ (रवा०) कह कह अवाज करवो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कहण लग्ग १२.८ २३ कहेवा लाग्या, हिं० कहने लगे
काउसग्ग १.६.२ (कायोत्सर्ग) शरीरनी निश्चलता साथेनुं ध्यान [जैन. परि.]
काढ–१९.५.८ (कर्ष) काढवुं
काणि १.३.५ लज्जा, संकोच
कारु २.१३.७ (कारु) कारीगर
कासिय १० २.४ काशिक, काशी देशनो
कासु १.१२.४ (कस्य) कोनुं
किद्धु ११.६.८, **किद्धउ** १२.६.३ (कृतम्) कीधुं, कर्युं
किमु १८.४.१९ (किम्) केम
कियाणउं ४.७.९ (क्रयानकम्) करियाणुं
किरि १७.१.३ (किल, प्रा० किर) खरे
किरिय १०.४.४ क्रिया
किरियाणग १२.१.५ (क्रयानक) करियाणुं
किल १०.२.४ मनुष्य-जाति-विशेष
किसउ १३.६.४ (किदृशम्) केवुं, हिं० कैसा
किसिय १२ २.१९ (किदृशी) शी, हिं० कैसी
कील १०.२.१३ (कील) खीलो
कुंच १०.२.६ क्रौञ्च, मनुष्य-जाति-विशेष
कुडंग ५.६.५ झाडी
कुडी १९.९.१० (कुटिला) कूट, कपटी
कुमर १.८.५ (कुमार) कुंवर
कुलख १०.२.५ मनुष्य-जाति-विशेष
कुहाडी १४.४.८ (कुठारी) कुहाडी
कुहेडय १९.९.११ (कुहेटक) कोयडो
कूडउं २०.३.७ (कूटं) कूडुं
केकइय १०.२.६ (कैकय) मनुष्य-जाति-विशेष [केकय-देशीय]
केरउ ५.४.२ (-सम्बन्धिन्, -सत्क)-केरुं (अप०, प्रा० व्या० ४२२.२०)
खंदग ३.११.५ (स्कन्दक) मुनि-विशेष
खंधरा २.१६.१ (कन्धर) खांध
खंपण १२.१.१९ (लाञ्छन) खांपण, खोड
खज्जूरय ११.५.५ (खर्जूरक) कानखजूरो
खर ४.११.५ खरो, खरेखरो
खल २.१०.४ खोळ [खली, दे० ना० २ ६६]
खल्ल १२.४.८ (उपानह) जोडां
खस १०.२.४ खासी, मनुष्य-जाति-विशेष
खाइय-दंसण २.१९.८ (क्षायिक-दर्शन) **खायग-सम्म-दिट्ठि** ३.१.८ (क्षायिक-सम्यक्-दृष्टि) कर्मक्षयथी प्राप्त सम्यग् दर्शन [जै० परि०]
खाल ९.३.३४ खाळ
खित्त २.७.१ क्षेत्र
खीरी १.१०.८ (क्षैरेयी) खीर
खुडहडिया १४ ५.४ नाळियेरनुं कोपरुं ?
खुडुक्क–३.६.११ (शल्याय-) खटकवुं, म० खुडकणें [प्रा० व्या० ४.३९५]
खुड्डाग ८.१.६ (क्षुल्लक) नानुं, हलकुं
खुंट २०.१.१० माथाभारे माणस ?
खूण ४.९. ४ (क्षूण) न्यूनता
खेल्लण ३.९.२ (क्रीडनक) रमकडुं हिं० खिलौना
गउडी ६.५.१० (गौडी) गौड-देशीय स्त्री
गंजणकर १२.६.२७ (गञ्जनकर) हलकुं पाडनार
गंधीय १७.१.२ (गान्धिक) गांधी
गछ १७.२.१ (गच्छ) गच्छ
गज्जर १४.४.५ (गृञ्जन) गाजर
गड्डा १४.३.६ (गर्त्ता) खाडो, हिं० गड्ढा
गड्डुय ३ २.६ (शकट) गाडुं
गणण-मेल १८.१.२० (गणना-मेल) गणतरीनो मेळ
गहिली ९.३ ३९ **गहिलिआ** ९.४.५ (ग्रहिल+ई) घेली
गुडिय १२.८.२३ गुडयुं, घोडा व० ने कवचथी सज्ज कर्या
गुड्ड १०.२.३ गौड, मनुष्य-जाति-विशेष

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुड्डी १.१२.९ (पताका) नानो ध्वजा, म. गुडी
गुणिआ ९.३ ३८ गणिका
गोठि २०.२.८ (गोष्ठि) गोठडी
गोस २.२०.९ प्रभात
घंघसाल ५.२.८ अनाथालय
घट्टिल (?) १४.३.६ हडकायुं
घडियाल १४.५.४ (घटिकालय) नारकनुं उत्पत्ति-स्थान [जै० परि०]
घडी १२.६.१४ (घटिका, लघु घट) नानो घडो
घणडं ३.५.८ घणु
घल्ल–९.३.१५ घालवुं
घिअ १९.७.१० (घृत) घी
घुंट–८.१.१८ (पिब्) पिवुं
घेउरय ११.१.१९ (घृतपूरक) घेबर
चउअट्ट १९.५.४ (चतुष्वर्त्म) चौटुं
चउथ १८.४.१० (चतुर्थ) चोथुं
चउद २.१९.९ (चतुर्वर्त्म) चउद
चउरासी १.१५.७ (चतुरशीति) चोराशी, हिं० चौरासी
चंगअ ४.२.११ **चंग** १.१४-५ सुन्दर [दे० ना० ३.१]
चंचुय १०.२.६ (चञ्चूक) मनुष्य-जाति-विशेष
चंडक्किय २.११.६ रोष-युक्त
चंदोदय ४.६.२ (चन्द्रातप) चंदरवा
चक्क २.३.७ (चक्र) आभूषण-विशेष, चाक
चच्चर ५.१.२ (चत्वर) चाचर, चोक
चट्ट ३.८.९ चेलो
चडण १२.५.२२ (आरोहण) चडाण
चमक्क १.१३.४ **चमक्कअ** १७.३.२ चमत्कार, विस्मय
चलवलंत ४.८.४ (चञ्चल) चळवळतुं
चवेडा ३.११.६ (चपेटा) थपाट, हिं० चपेट
चहु १३.१.१ (चतुर्) चार
चहुट्ट–११.३.२ चौंटवुं
चाणग १०.१.५ चाणक्य
चार–४.१.३ (चारय्) चारवुं
चारग २.११.९ कारागार [दे० ना० ३.११]
चारहडी २.१.९ (चारभटी) शौर्यवृत्ति
चिड ११.५.६ पक्षी, हि. चिडिया
चियारि ११.१.१० (चत्वारि) चार
चिलाय १०.२.५ (किरात) मनुष्य-जाति-विशेष
चीण १०.२.६ (चीन) मनुष्य-जाति-विशेष, चीना
चीण-चीर ४.६.२ (चीन-चीर=चीनाङ्शुक) चीनी रेशमी वस्त्र
चुक्क–३ ११.९ (भ्रश्य) चूकवुं
चुप्प १२.८.१७ चूप
चेडाराय २.६.२ चेटक राजा
चेलुक्खेव २.१५.४ (चेलोत्क्षेप) वस्त्र उछाळवां
चेल्लुग ५.११.६ (शिशु) बच्चुं [चिल्ल, दे० ना० ३.१०]
चोट्टि ३.८.९ चोटली
चोडी ६.५.१० (चोली) चोलदेशीय स्त्री
चोप्पड ३.८.९ तेल, स्निग्ध द्रव्य
चोरिक्क ३ ५ ८ (चौर्य) चोरी
छ ३.५.३ (षष्) छ
छंट–१.५.८ (सिच्) छांटवुं
छडिय ४ ६.९ (सिञ्चित) छांटेल
छड्ड-१.१३.९ (छर्दय् = मुच्) छोडवुं
छल ४.११.८ (छल) बहानुं
छह १५.३.७ (षष्) छ, हिं० छह
छिड्ड १०.१.१८ (छिद्र) दोष
छेह १.७.८ (छेद) छेडो, अंत
जइ २.६.९ (यति) जति
जगडिअ ७.११ **जगडीअ** १०.३.१० (कदर्थित) पीडित
जडिय १.८५ (जटित) जडेल

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जणद्दण ३.१३.१ जनार्दन
जणेर ५.११.७ (जनयितृ) जनक
जत्ताहल १०.२.३० यात्राफल
जम्मण १४.४.१९ जन्म
जवण १८.२.३ यवन, मनुष्य-जाति-विशेष
जां लगि २०.२.४ (यावत्) ज्यां लगी
जायव ३.१२.११ यादव
जिम- ४.२.५ (जिम् = भुज्) जमवु
जिय ८.१.१ जीव
जींइ १५.३.९ (यया) जेणे
जीम-११ ३.८ **जीमाव** -११.२.९
 द्रष्टव्य—'**जिम**'
जुट्ठ ११.८ १५ (असत्य) जुट्ठुं, हिं० झूठ
जेमण ४.२.६ (भोजन) जमण
जोडिय ३.१०.२ (योजित) जोड्युं-जोडेल
जोहार- २.१६.४ (नमस्कृ) जुहारवुं,
 हिं० जुहारना
जोहार २.१८.१ (नमस्कार) जुहार
झंपण १२.१.१९ (आक्रमण) आक्रमक
झणहृण—६.५.६ (रवा०) झणहणवुं
झरहरझर- ४.१०.९ (रवा०) झरहर
झलक्किर ५.१.५ (दिप्त) झळकतुं
झलहल-१२.९.२७ (जाज्वल्) झळहळवुं
झवाल १.१३.१९ आटोप ?
झामिय २.१८.९ (दग्ध) बळेल
झिल्ल- १२.९.१२ नहावुं
झूर- ३.६.४ (खिद्) झूरवुं [प्रा० व्या० ४.१३२]
टंक ४.१५.५ (टङ्क) खडकाळ भोंय
टंक १४.४.१० टांकणुं [दे० ना० ४.४]
टगमग १.१२.८, ३.४.११ टगर टगर
टल- २.५.७, ४.७.१२, २०.२.५
 टळवुं
टलवल- ४ १०.५ टळवळवुं
ठाव ३.५.६, ३.८.९ (स्थान, वै०सं० स्थाम) ठाम, ठेकाणुं

डंभ १४.३.१९ (दाह) डाम
डाल १०.२.२१ (शाखा) डाळ, हिं० डाल
डुंब १२.५.२४ (डोम्ब) चंडाल, हिं० डोम
डुंबिय १२.५.३४ एक प्रकारनो साप
डुड्डुड १०.२.३ मनुष्य-जाति विशेष
डोल- १३.१०.२ (दोलय्) डोलवुं
डोहलअ ४.३.४ (दोहद) दोहलो [प्रा० व्या० १.२१९]
ढंक १४.५.९ (वायस) कागडो
ढाल- ३.११.१ ढाळवुं
ढाल १२.४.४ गति, प्रकृति [तुल० गु० ढाळ]
ढुक्क- २.४.६ (ढौक्) ढूकवुं
ढुलुहुलढुल २.१३.३, ३.६.६(रवा०)
 दडदडवुं
ढुलिअ १२.५.३२ ढोळाईने
ढोअ - ४.७.४,४.७.१३ (ढौक्) वहन करवुं, हिं० ढोना
ढोयणीआ ४.७ ४, ४.७.१३ उपहार, भेट
तइज्जअ ३.२.१० तृतीय
तंबग १२.९.२९ (वाद्य-विशेष) त्रंबाळुं
तंबोलिय २.१६.३ (ताम्बूलिक) तंबोळी
तक्खणि १३.१३.४(तत्क्षणे) ते समये
तच्छ-१५.२.११ (तक्ष्) त्रोफवुं, छोलवुं,
 [प्रा० व्या० ४.१९४]
तडफड १४.५.९ तडफडवुं
तडयड- १४.५.१० (रवा०) तड तड अवाज करवो
तणउ ३.५.८, १२.६.१२, **तणु** ५.९.११ (-सत्क, सम्बन्धिन) [अप०, प्रा० व्या० ४२२.२०] तणुं
तलार १२.३.१७ (नगर-रक्षक) कोटवाळ
तल्लिच्छअ १५.२.४, १९.४.७ तत्पर
 [दे० ना० ५.३]
ताड- १९.५.५ अग्निमां नाखवुं के छांटवुं, होमवुं ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तार तारु ४.३.८ अतिशय तार-स्वरे
तालं दिय- २.११.९ तालु देवुं
तास १२.३.२७ त्रास
तिड्ड ११.५.५ (शलभ) तीड
तिणि १.३.८ तेणे
तिम्मण ११ १.२० (तेमन) भोजननो प्रकारविशेष
तियासी १.४.१ (त्र्यशीति) त्यासी
तिल-जंत ३.११.५ (तैल-यंत्र) घाणी
तीह १७.७.८ (तस्य) तेनुं
तुक्खार १.६.५ (अश्व) तोखार
तुहारउ २.१६.५ (त्वदीय) तारुं
तूं १८.१.१९ (त्वम्) तूं
तूली ४.१०.८ (शय्या) तळाई
तेगिच्छ १९.४.८ **तेगच्छिण** १९.४.९ चिकित्सक
तेड- ९.३.११, १७.५.८ (आकारय्) तेडवुं, बोलाववुं
तोरुक्क ११.१.१६ (तुरुष्क) लोबान
तोल- १८.१.२० (तोलय्) तोळवुं
त्रुट्ट- १९.५.१३ (त्रुट्) तूटवुं
थक्किय १९.६.८ (स्थित) रह्युं
थट्ट १.१३.६ समूह [तुल०गु० ठठ]
थप्पियअ १७.७.९, **थवियअ** २.१३.५ **थापिअ** १७.२.७ (स्थापित) थाप्युं
थय १६.२.५ स्तव
थरहर- १.७.३, १२.२.९ (रवा०) थरथरवुं
थाम ३.३.३ (स्थान) ठेकाणुं
थाली ४.१३.८ (लघु घट) तुल०गु० थाळी
थिअ १७.३.६, **थियउ** १७.१.७ थयुं
थी ९.४.१९ स्त्री
थेरा-वसि १७ ८.२ (स्थविर-वसति) उपाश्रय
दंग १.१०.२ (द्रङ्ग) नगर
दंतण ११.१ १३ (दन्त-पवन) दातण [दंतवण, दे० ना० २.१२]
दमिल १०.२.५ द्रविड, जाति-विशेष
दाउ १०.१.९ (घात ?) दाव
दालि ११.१.२ (दालि) दाळ, हिं० दाल
दावणी २ ७.५ (दामनी) दामणी
दिच्छ- ५.५.८ (दीक्ष्य्) दीक्षा आपवी
दिद्ध ११.६.११ (दत्त) दीधु
दिय ३.९.६ द्विज
दीस १८.४.२० दिवस
दुइज्ज २.१२.५ (द्वितीय) बीजुं, हिं० दूजा
दुकय १४ ६.१७, **दुकड** १०.५.२३ (दुष्कृत) दुष्कर्म
दुगुणा १ २.९ (द्विगुण) बेगणुं, हिं० दो गुना
दुजाइ ३.१०.७ (द्विजाति=द्विज) ब्राह्मण
दुज्झ- २.१६.८ (दुह्) दूझवुं
दुम्मिल्ल १०.२.५ जाति-विशेष
दुलंभ १०.३.२९ **दुलह** १०.५.२, **दुलहअ** १०.२.१ दुर्लभ
दुवार १.१० ४ द्वार [प्रा० व्या० २.११२]
दुहेलअ १३.३.५ (दुर्लभ) दोहलुं
देव-दूस २.१८.५ (देव-दुष्य) दिव्य वस्त्र
दो ३.१०.१ (द्वि) बे, हिं० दो
धगधगंत १०.३.११ (रवा०) धगधगतुं
धम ११.५.२ धमणनो वायु
धम १९.११.८ धर्म
धमधमिअ १२.८.३ धमधम्युं
धरम २०.३.२ धर्म
धसक्किय २.१०.२ श्वासको पडेल
धाअ- २०.१.८ (ध्या) ध्यान करवुं
धुत्तारउ १२.३.२० (धूर्त) धूतारो
धुरि १५.३-१४ (प्रारम्भे) मोखरे [तुल० गु० धरथी, धरमूळथी]
धूलहडी १२.६.१२ धूळेटी
धा- ४.२.५ धरावुं
नड ७.२.१७ (पीड्) नडवुं
नत्थियवाइय १२.५.२५ नास्तिक
नरीसर ६.१.८ नरेश्वर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवकार १०.५.२५ (नमस्कार) मंत्र-विशेष, नवकार [जैन०-परि०]
नवि १०.१.१२ (न अपि) नव, नहीं
नहुल्लिहण ४.१२.२ (नखोल्लेखन ?) नख कापवा
नालिय २.१६.३ (नालिक) कोईक नीचो व्यवसाय करनार, नाळी
नालेर १४.५.४ (नालिकेर) नाळियेर
निअत्ति १२.३.२२ निवृत्ति
नितु ४.८.१०, ११.९.१२ (नित्य) नित
निप्पट्ट ४.१२.४ केवळ, संपूर्ण, हिं. नीपट
निरुतउ १.५.१ निश्चित [प्रा० निरुत्त, दे० ना० ४.३०]
निलुक्क २.११.५ (निलीन) छुपायेल, हिं० लुका हुआ
निस्सम १.१५.११, ३.९.१० (निःसम) असाधारण
नीइ-वमिउ १२.९.५ (नीति-वान्त) नीति-रहित
नीहर ६.१.१५ (निर् + सु) नीकळवुं
नेत्तपट्ट ४.४.७, ४.६.७ (नेत्रपट्ट) वस्त्र-विशेष
नो-इंदिय ७.१.२१ (नो-इन्द्रिय) मन [जै० परि०]
न्हाविअ २.११.९ (नापित) नाई
पइठाविअ ६.४.१३ (प्रतिष्ठापित) प्रतिष्ठा करी
पक्कणिय १०.२.३ अनार्य-देशीय मनुष्य-जाति-विशेष
पक्खरिय १२.८.२६ (संनद्ध) कवचथी सज्ज करेल
पखि १३.१.५ पक्षे
पच्छल ९.३.१५ पाछळ
पट्टंसुय ४.१२.४ (पट्टाङ्शुक) रेशमी वस्त्र-विशेष
पट्ट-हीर २ १५.८ हीरनु वस्त्र
पडि- २.१५.८ वस्त्र — विशेष
पडिख- २.३.२ (प्रति+ ईक्ष्) प्रतीक्षा करवी
पडिछंद ९.३.१२ (प्रतिच्छन्द) मुख ?
पट्टोल १.४ ३ (पट्टकुल) पटोळुं
पत्तल २.९.२ पातळुं [दे० ना० ६.१४]
पन्नत्ति- विज्जा ६.२.६ प्रज्ञप्ति विद्या
पन्नवणाउपंग १५.१.१२ (प्रज्ञापना उपाङ्ग) आगमिक-ग्रंथ-विशेष
पयक्खिण १६.४.१ प्रदक्षिणा
पय-वक्क-माण १७.४.२ (पद-वाक्य-मान) न्यायशास्त्र
पराणिअ २.१७.४ (प्राप्त) पहोंच्युं
पलित्त ५.१०.३ (प्रदिप्त) तुल. गु० पलितो
पलुट्ट— १.११.६ (परि + अस्) नीचे पडवुं (प्रा० व्या० ४.२०० पलोट्ट-)
पल्लंकि ११.१.२० पालक नो भाजी
पवयणह माय १०.४.९ (प्रवचन-माता) पांच समिति अने त्रण गुप्तिरूप धर्म (जै० परि०)
पसर ३.४.७ प्रभात
पसुमेह जन्न १०.२.२७ पशुमेध यज्ञ
पहिल १२.८.२० (प्रथम) पहेलुं,हिं० पहिला
पहुच—१८.१.१२ **पहुच्च** ४.१३.५ पहुच्च २.१७ २ (प्र +भू) पहोचवुं, हिं० पहुचना
पहूत १७.२.२, पहुतअ ९.१.१८ (प्रभूत) पहोंच्युं
पाइक २.८.४ (पादातिक) पायक, पायदळनो सिपाई
पाउल १.१३.८, ३.८.१०, ४.६.११ (पापकुल, पा.स.म) राजसेवामां रहेल कनिष्ठ अनुचर
पाडय १२.३ ८ (पाटक) पाडो, महोल्लो
पायछित्त १२.४.२६ प्रायश्चित
पारण २ १.१ (पारण) पारणुं
पारस १०.२.४ (पारस) जाति विशेष, पारसी
पासंड ३.१०.९ (पाखण्ड) व्रत
पाहण १.१२.७ पाषाण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पिअ-हर ९.४.९, **पिइयहर** २.१३.८, **पियर** ९.४.१० (पितृ-गृह) पियर
पिंगल १९.५.३ (पिङ्गल) मंत्रोच्चार
पिक ९ १.२२ पाननी पीचकारी, हिं. गु. पीक
पियारअ ३.१.५ (प्रियतरक) प्यारुं
पिल्लग ५.६.७ **पेल्लग** ५.६.८ वच्चुं
पीययार १९.१ ७ (प्रियाल ?) वनस्पति-विशेष
पीलण ३ ११ ५ पीडन
पुत्थय १०.५.१४ पुस्तक
पुयर ११.५.४ (कीट-विशेष)
पुलिंद १०.२.४ पुलिन्द, मनुष्य-जाति-विशेष
पुव्विल्ल ९.४.१४ (पूर्व + इल्ल) पहेलानुं
पूरी २.१४.६ (पूर्णा) पूरी
पोअत्त ९.२.२८ (पोत) जलयान
पोइणी १.५.८ (पद्मिनी) पोयणी
पोक्कार ३.१३.४ (पुत्कार) पोकार
पोली १.९.२, १२.१.३ (प्रतोली) पोळ
पोसाल ११.२.८ पौषधशाला [जै० परि०]
फाड- ९ ३.३६ (पाट्य) फाडवुं
फालिह ५.३.५ स्फटिक
फिर- ६.३ १५, ११.८.४ (भ्रम्) फरवुं, हिं० फिरना
फिरि फिरि ३.८.१० फरी फरी
फूई १९.६.१२ (पितृ-स्वसा) फूई
फेर १२.१.७ (भ्रमण) फेरो
फोरव- १९.८ ५ (स्फोर्) निरन्तर प्रवृत्त करवुं, फोरववुं [जै० परि०]
बइस- १३.२.२ (उपविश्) बेसवुं, हिं० बैसना
बपु रि २ १५.५, ४ २.४ आश्चर्योद्गार [तुल० गु० बाप रे]
बब्बरय १०.२.३ बर्बरक, जाति-विशेष
बलिमड्ड १.१२.५ बलात्कार
बहिण १९ ६.७ (भगिनी) बहेन, हिं. बहिन
बहु परि १८.१.५ **बहु परे** १८.२.१४ (अनेकविध) बहु पेरे
बार ११.७ ५ (द्वादश) बार
बारि २.११ ७ (द्वारे) बारे, बहार
बारवई ३.१.१ (द्वारावती) द्वारका
बाली २.१०.५ (बाला) नानी
बावीस ११.६.७ (द्वाविंशति) बावीश
बाहत्तरी २.२०.६ (द्वासप्तति) बोंतेर
बाहिर २.१४ ७ (बहिर्) बहार, हिं० बाहर
बि-आसण १६.३.४ (द्वि-अशन) बेसणुं दिवसमां मात्र बे वार जमवुं [जै० परि०]
बिंब १६ ३.५ (बिम्ब) जिन-प्रतिमा
बिहप्फइ ६.५.१८ बृहस्पति
बीड १.१३.४ **बीडी** १.६.६ (बीट) बीडुं, बीडी
बुक्कस १०.२ ५ अनार्य-जाति-विशेष, चंडाल
बूझ – १३ ६.६ (बुध्) बूझवुं, जाणवुं
बेट्टउ ४.१.७ (पुत्र) बेटो, हिं० बेटा
बेडी १३.१२.२ **बेडुलडी** १३ १२.१ (लघु नौका) बेडी, बेडली
बोड २.११.८ (मुण्डित) बोडुं
बुल्ल १२.२.६ **बोल** ३.४.१० (कथय्) बोलवुं
भडारअ ३.१.७ (भट्टारक) पूजनीय
भडिवाय १५.२.९, १७.५.४ (भटवाद) सुभटपणुं
भणी २०.३.९ (प्रति) भणी
भत्तिज्जी २.६.३ (भातृव्या) भत्रीजी, हिं भतिजी
भद्द ४.३.६ (भद्र = वर्धापन उत्सव) वधामणु
भमड- १३.१०.१ (भ्रम्) भमवुं
भमर १०.२ ५ अनार्यजाति-विशेष
भराडउ ३.२.१३ (भट्टारक ?) पूजनीय
भविय १.१.१ (भव्य) मोक्ष पामवाने शक्तिमान [जै० परि.]
भवियण ८.१.३१ (भव्य + जन) भविजन, मोक्ष पामवाने शक्तिमान [जै. परि.]
भसुया ५.९.५ (श्वशुरी) मादा शीयाळ [दे० ना० ६. १०१]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भाइणिज्ज २.१७.९ (भागिनेया) भाणेजी
भाडअ १८.३.१७ (भाटक) भाडुं
भिट्ट – १२.६.२९ भेटवुं
भिल्ल १०.२.५ भील, जाति-विशेष
भुंड १४.५.१३ भुंडुं
भुय ३.१०.१ (धुत ?) नष्ट, विगत
भुल्ली २.१३.४ (भ्रमिता) भुली
भेडि १२.६.२६ झगडो [तुल० हिं० मुठभेड]
मंड २७.७ **मंडी** २.५.९ (खाद्य-पक्वान्न-विशेष) राज० मांडा
मंड – १२.६ २६ (आरभ्) मांडवुं
मंडुकि ११.१.२० (मण्डूकिका) वनस्पति-विशेष
मंतिग १९.५.३ (मान्त्रिक) मंत्रवादी
मक्कड १०.२·२१ (मर्कट) माकडुं
मगहा ४.७.११ मगध
मग्गाइम २.३.९ (मार्ग = मार्गशीष + आदिम = शुक्ल) मागशर सुदि
मज्झ १.९.९ (मध्य) मुज
मट्टी ११.५.१ (मृत्तिका) माटो
मणियारअ १२.४.११ (मणिकार) मणियार
म न १४.१.६-७ मा मा
मन्नाव – २.३.२ (मन्य्–मानय्) मनाववुं
मयगल ३.८.४ (मदकल) मेगळ, हाथी
मयहरी २.१९.६ (महत्तरा) मुख्य साध्वी, गणिनी
मल कन्नगाइं (?) १०.४.१२ मल-कन्यादि परिषह [जै० परि०]
मसाण ३.१०.४, ५.९.४ (श्मसान) मसाण
महत्तारो ४.१३.१२ (महत्तरा) माता
महल्ल १०.३.२१ (महत्) मोटुं
महार ३.४.५ (मदीय) मारुं
महियारी ४.१३.६ महियारी
महेसि १३.२.९ महर्षि
मा ३.९.४ (माता) मा
मा – १.१०.२ (मा–) मावुं, समावुं
माअ २.१६.४ (माया) कपट
माग १३.१० १ (मार्ग) धर्म
माझु १३.३.८ (मह्यम्) मुज
माण – ७.१.४ (मानय्) माणवुं
मासखमण ४.१.१० **मासखवण** ४.१३.१ (मासक्षपण) महिनाना उपवास
माहा १.१५.११ (माघ) महा मास
०माहि ११.८.१८, १२.८.३ (मध्ये) मांहि
मिच्छ १०.२.८ (म्लेच्छ) यवन, अनार्य
मिच्छक्कड ११.६.१२ (मिथ्याकृत) मिथ्या थयेलुं
मिच्छत्तिअ ९.१.५ (मिथ्यात्वी + क) मिथ्यात्वी [जै० परि०]
मिल्हणअ १२.४.२२ मिलन
मिल्ह – १४.१.१ (मुच्) मेलवुं, मूकी देवुं
० मिसि २०.१.५ (० मिषेन) ० बहानाथी
मीसिअ १०.१.७ मिश्रित
मुकलाव – ९.२.२, १२.२.६, १७.२.६ मोकलावबुं, विदाय आपवी
मुक्कल – १९.८.८ (मुच्) छूटुं करवुं, रजा आपवी, तुल. गु. मोकळुं करवुं
मुक्ख ६.५.१२ मोक्ष
मुहपति ११.३.९ (मुखपात्रिका) मुहपत्ति [जैन परि०]
मुहाणइ १.१५.६ (मुख्य-स्थाने ?) गणधरपदे
मूं १२.३.२९, १२.८.११ (मम) मने
मूझ् – १३.६.६ (मुह्य) मुंझावुं
मून १२.५ ३७, **मूण** १२.८.१५ मौन
मूल १४.४.५ (कन्द-विशेष) मूळो
मेल्ह – १७.२.७ (मेल्) मेळववुं, एकठुं करवुं
मोक्कल ५.३.९ (मुक्त + ल) मोकळुं
मोग्गर २.१३.१ (मुद्गर) मोगरी
मोर २.१५.६ (मयूर) मोर
मोस २०.२.२ (मृषा) असत्य

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रंगावली ४.६.५ (रंगावली) रंगोळी
रक्ख १४.६.११ राक्षस
रच्च – १४.१.७, १४.२.१६ (रञ्ज्) राचवुं
रच्छ १९.५.११ राच–रचीलुं ?
रय-पीडा १९.५.३ (रजःपीडा) ?
रलिअ १८.१.८ रोळ्युं ?
रलियाइत १७.६.६ रळियात, रळियामणुं
रह – ९ १.९, १८.३.१३ रहेवुं
राउल ३.१४.४ (राजकुल) राजा, तुल० रावळ
राणउ २.१.९ (राजक) राणो, राजा
राणी १.२.७ (राज्ञी) राणी
राव ९.४ ६ राव , फरियाद
रास ८.१.३ (राशि) समूह
राहाडी २.१४.६ इच्छा ?
रिहन्न १८.१.९ व्यक्ति-विशेष ?
रुणझुण–७.१.९ आक्रंद करवुं
रुप्पिणी ३.१.९ रूक्मिणी
रुय १०.२.६ जाति-विशेष
रेवय ३.९.९ (रैवतक) गिरनार
० रेसी ३.५.२,१०.२.१२ ने कारणे, ने वास्ते (तादर्थ्ये निपात, अप०) [प्रा. व्या० ४. ४२५]
रेसु १२.५.१४ (लेश)
रोअ १९.६.१, **रोय** २.१७.६ (रुद्-रोद्) रोवुं
रोमय १०.२.४ (रोमक) जाति-विशेष, रोमन
रोह १९.५.११ अश्व आदि वाहन ?
ल – २.९.४ (ला) लेवुं
लउस १०.२.३ जाति-विशेष
लंकिल्लअ ५.३.७ (कटितट) लांक
लंख – ९.३.३७ (क्षिप्) नाखवुं
लक्खण १७.१.५ लक्षण
लट्ट -- १४.३.८ (लुड्) प्रवृत्त थवुं
लड्ड १९.६.६ (लालन) लाड
लड्डुय २.५.१० (मोदक) लाडु
लल्लुर ३.९.२ (लल्लर) काळुंघेलुं
लवित्त ६.१.४ (लवित्र) दातरडुं
लहणअ १८.१.१७ (लभनक) लहेणुं
लाडी ६.५.११ (लाटी) लाटदेशीय स्त्री
लावय ११.५.६ (लावक) पक्षि-विशेष
लिंपण ९.३.३५ (लेपन) लिंपण
लिय् – ३.१०.९ (ला) लेवुं
लिल्ल १९.५.११ पूर्ण, भरेल
लुअ – १४.६.२ (लू) कापवुं
लूणिय १४.५.६ (नवनीत ?) माखन ? [म० लोण]
लूहण ११.५.१५ (प्रोञ्छन) लूछणुं
लोण १९.५.११ (लवण) मीठुं
लोप – २०.१.९ (लुप् –) लोपवुं
लहसीअ १०.१.१० (स्रस्त) सरी गयेल
वइरिअं ३.१०.११ (वैरम्) वेर
वइस १.१३.८ वेश्या
वंक १४.३.१९, **वंकुड** १३.३.४ (वक्र) वांकु, वांकडुं
वंदुरवाल २.१५.४ (वन्दनमाला) तोरण, हिं० बंदनवार
वखाण – १३.१०.३ (व्याख्यानय्) विवरण करवुं, व्याख्या करवी
वच्छर १.७.८ (वत्सर) वर्ष
वच्छरु ४.१.३ (वत्स) वाछरु
वच्छायण १०.२.१५ वात्स्यायन
वजाव – १२.८.२४ (वादय्) बजाववुं, वगाडवुं
वट्ट ३.१०.१० (वर्त्मन्) वाट
वट्ट–१२.७.१० वाटवुं
वढ १७.१.६ (वृध-वर्ध) वधवुं, हिं० बढना
वणसइ ११.५.३ वनस्पति
वणिउत्त ९.१.७ वणिकपुत्र
वणिजारअ ४.४.११ (वाणिज्यकारक) वणजारो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वणी ४.५.८ (वणिक) वाणियो, वेपारी
वत्थुल १४.४.६ (वस्तुल) बथवानी भाजी
वदी १७.८.६ (बहुलपक्ष-दिन) वदि
वद्दिय १७.५.४ (वादिन्) वादी
वद्धार – १.१३.८ (वर्धापय्) वधाववुं
वधार – ६.२.५ (वर्धय्) वधारवुं
वम्मिय १८.४.२८ (वर्मित) कवचयुक्त करेल
वयणुल ३.९.२ (वचन + उल) वचन
वयमिय ६.५.२५ (व्रत-मित) पांच
वराडिया १०.१.२७ (वराटिका) कोडी
वलि ११.१.२० वाल ?
वहु १२.३.१ (वधू) वहु
वाडी १.१.६ (वाटिका) वाडी
वाणारिअ १७.४.८ (वाचनाचार्य) उपाध्याय [जै० परि०]
वायणा १६.२.१ (वाचना) शास्त्रपाठ [जै० परि०]
वारअ १०.१.३ (वारक) वारो
वासिअ २.७.५ उपवासित
विंछी ११.५.५ (वृश्चिक) वींछी
विगहा १०.३.१४ विकथा
विगोइअ १२ ६.१२ (विगोपित) वगोव्युं
विट्ठि १०.३.२३, १२.५.२९ वेठ
विट्ठु ३.७.९ विट्ठल, कृष्ण
विससिअ २०.२.७ विश्वस्त
वीरिअ १०.३.३३ (वीर्य) पुरुषार्थ
वीसमित्त १५.२.१४ विश्वामित्र
सउन्न १.९.३ (स्वप्न) सोणुं
संघाडअ ३.२.१० (संघाटक) संघाडो, मुनि-युगल
संधि १३.१.१ **संधी** १४.६.२१ सर्ग, विभाग
संधिबंध १.१.१, १३.१.१ संधिबद्ध
संभर – १४.४.२ (सं + स्मृ –) संभारवुं
संभल – १२.६.१० (श्रु –) सांभळवुं
सग १०.२.३ (शक) जाति-विशेष
सच्चहा ३.१.९ सत्यभामा
सतरह १०.४.१ **सत्तरस** १०.४.१५ (सप्तदश) सत्तर
सत्तण २.१७.१ (सक्त ?) आसक्त ?
सत्तावरी १४.४.५ शतावरी
सनीड ४.४.८ (सनीड) समीप
सबर १०.२.५ शबर, जाति-विशेष
समित्त ४.१४.६ समेत
सयाणिअ २.६.१ शतानिक
सयाणिअ २.६.८ (सज्ञान) शाणो
सयाणो २.१२.७ (शज्ञाना) शाणी
सरसइ २०.१.१ सरस्वती
सरीखअ १३.११.५ (सदृक्ष:) सरखुं
सलसलतां १४.३.१९ (रवा०) सडसडतां
सवरसत्थ १४.४.१० (शवर-शास्त्र शवरोनां शास्त्र
सवि ७.२.१७ (सर्वे) सर्व
सह – ३.१०.४ (सहू) सहेवुं
साचइ १३.१४ ६ (सत्यमेव) साचे
सात १७ ८.३ (सात) सुख
साथ १७.४.५ (सं. सार्थ, प्रा० सत्थ) साथ
सामिसाल २.५.२ स्वामि [अप०]
सार १२.२ १५ (सार) सार, संभाळ
साव १ १.२, ३.१.१ (सर्व) साव [प्रा० व्या० ४.४२०]
साव ९.१.२८ शाप
सासुरय ९.१.१९ (श्वसुर)
साहम्मी १६.३.९ (साधर्मिक) समान धर्मवाळुं, धर्मबंधु
सिउं १०.१.९ (समं) साथे
सिंहकेसर ३.२.६ (सिंहकेशर) लाडु नो एक प्रकार
सियाणी २.८.४ (सज्ञाना) शाणी
सिराह – २.१६.४ (श्लाघ्) वखाणवुं, हिं० सराहना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सीख १७.८.८ (शिक्षा) शीख
सीयालअ १.७.५ (शीतकाल) शीयाळो
सुंकसाला २.२०.३ (शुल्कशाला) जकात-नाकुं
सुकड १०.५.२३ (सुकृत) सत्कृत्य
सुक्क ३.११.३ (शुक्ल) श्वेत
सुक्काडिअ १८.२.८ सूकव्युं
सुजम २६.९ (सुयम) व्रतधारी,
सुज्ज १८.३.१६ व्यक्ति-विशेष
सुद्धि ९.३.१८ शोध
सुपरि १.५.९, **सुप्परि** १.१५.८ सुपेरे
सुय-माइय ३.८.९ (श्रुत-मातृका) बाराखडी
सुविणअ ३.८.४ स्वप्न
सुहा – २.९९ (सुखापय्) सुखी करवुं
सेवत्तिया १९.१८ (शतपत्रिका ?) शतपत्र कमळ ?
सोमाण ११.९.७ सोपान
सोवाग १२.७.१८ (श्वपाक) चंडाळ
सावालअ ५.३.७ (सुकुमार) सुंवाळुं
हउं १.१४.७ (अहं) हुं
हक्कारण २.१३.७ (आकारण) हकारवुं, बोलावबुं
हठ १८.३.२१ हठ
हव १७.८.५, **हिव** १२.९.२२, **हेव** ८.१.२५, १२.५.१९ (अधुना) हवे
हासा-मिसि २०१.५ (हास्यमिषे) हसवाना बहाने
हियडउं २.८.७, ५.४.७ (हृदयम्) हैडुं
हिआविअ ४.११.१४ (हितविद् ?) हित करनारुं
हीरउ ५.११.२ (हिरक) हिरो
हीरपट्ट ४.४.७ होरनुं वस्त्र
हुं ६.२.१० (अहम्) हुं
हुम्मिअ १०.१.२१ फूंक्युं
हेला ४.११.४ (शीघ्रता) सहेलाई [दे० ना० ८.७१]
होडियअ ४.११.१४ होड करी
होण १०.२.४ हूण, जाति-विशेष

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शुद्धि-पत्र

भूमिका

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१०	माटे ज	माटे ज.
४	२२	महानिग्रंथाय	महानिग्रंथीय
६	२७	खना स.	रचना सं.
७	टिप्पण १ मां उमेरोः— पृ. १९१.		
८	४	सं त्	संवत्

मूळ पाठ

संधि	कडवक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	२	४	सुनदं	सुनंद
१	५	५	जिणि–दिन्नी	जिण–दिन्नी
१	६	११	हिडइ	हिंडइ
१	८	५	बिंबंह	बिंबहं
२	१	२	ग-तार	तुंग-तार
२	४	६	दति दतग्गल	दंति दंतग्गल
२	५	६	उबरु	–उंबरु
२	८	३	अगि ... सउ दूठउ	अंगि ... सउ मुद्ठउ
२	८	६	कलकु कलती हियउ	कलंकु कलंती हियउं
२	९	४	न पेल्लिउ	नं पेल्लिउ
२	१०	९	कहि	कहिं
२	११	७	कतु सकलकु सहावउ	कंतु सकलंकु सहावउं
२	११	९	कबिहि	कंबिहिं
२	१२	४	हु	हुं
२	१३	२	ताल	तालं
२	१३	५	सइ	सइं
२	१४	२	कचणु	कंचणु
२	१४	७	उबर	उंबर
२	१५	१	सपत्तइ	संपत्तइ
२	१५	१४	वदुर	वंदुर
२	१६	५	सुदरि सुदरु	सुंदरि सुंदरु
२	१८	४	चडाविउ ...मदिरि	चडाविअ....मंदिरि
२	१९	१	तस्सावहति	तस्सावहंति
२	१९	९	लछियउ	लंछियउ
२	२०	१	कुव्वतु...गजिउ	कुव्वंतु...गंजिउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संधि	कडवक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	२०	३	सुकसालाए	सुंकसालाए
३	५	४	सइ	सइं
३	५	६	काचखड	काचखंड
३	५	९	ज	जं
३	६	१	सजमु	संजमु
३	६	३	हउ...ज सत्तहिं	हउं...जं सत्तहिं
३	६	४	झूरत	झूरंत
३	६	६	सोयघयार	सोयंधयार
३	६	१०	अब अविलब	अंब अविलंब
४	२	११	चगउ...अगउ	चंगउ...अंगउ
४	३	२	पलब	पलंब
४	३	३	सगमु	संगमु
४	३	४	अगि	अंगि
४	३	७	भणति	भणंति
४	३	१०	नदण–	नंदण–
४	४	३	अलकिउ	अलंकिउ
४	५	१०	भद्द	भद्दं
४	६	५	चग–	चंग–
४	६	९	सव्वसा	सव्वसो
४	९	४	ज...सपन्नु	जं...संपन्नु
४	१०	२	भगुर	भंगुर
४	११	७	रोयतिया...सतत्तिया	रोयंतिया...संतत्तिया
४	११	१०	पव्वइस्स	पव्वइस्सं
४	११	११	अचए	अंचए
४	१२	३	कुडल–किरिडाइ	कुंडल–किरीडाइ
४	१२	४	सलीणओ	संलीणओ
४	१३	२	जपिउ	जंपिउ
४	१३	४	दसण–उक्कठिय...वदण	दंसण-उक्कंठिय...वंदण
४	१३	७	रोमचिय	रोमंचिय
४	१३	१०	हउ	हउं
४	१५	३	भवणगणि	भवणंगणि
४	१५	८	तुहु	तुंहु
४	१५	९	मरणति	मरणंति
५	१	१	अवति...सहति	अवंति...सहंति
५	२	५	मति	मंति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संधि	कडवक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५	२	१०	सुसवुड़	सुसंवुड
५	३	४	न	नं
५	३	५	मयक–मडलि	मयंक–मंडलि
५	३	६	न	नं
५	३	७	–दहु	–दंहु
५	४	३	निसुणतउ	निसुणंतउ
५	४	४	तुबुरु...रुटठउ...झणि... निसुणतउ	तुंबुरु...रुट्ठउ...झुणि... निसुणंतउ
५	५	२	पयडमेव...परूवतया	पयडमेवं...परूवंतया
५	५	४	त जारिस....त तारिस	तं जारिसं...तं तारिसं
५	५	५	ग्मच्चतमुक्कठिओ...पहेण	ग्मच्चंतमुक्कंठिओ...पहेणं
५	५	६	सम्म	सम्मं
५	५	७	दिक्ख च सिक्ख च सपइ	दिक्खं च सिक्खं च संपइ
५	५	८	त	तं
५	५	९	नाह	नाहं
५	६	२	ससाहणं	संसोहणं
५	६	४	भोग् सुगो सपय	भोगूसुगो संपयं
५	६	५	कथारि	कंथारि
५	६	७	गघेण	गंघेण
५	७	२	कथारि कुडगहि अतरालि	कंथारि-कुडंगहिं अंतरालि
५	७	३	कुकुम	कुंकुम
५	९	५	कुडं	कुडंग
६	१	४	चदजसु	चंदजसु
६	१	७	इत्थतरि	इत्थंतरि
६	४	३	वदइ	वंदइ
६	४	४	सदेहा०	संदेहा०
६	४	९	वदिय	वंदिय
६	४	१६	सुदसणपुरि	सुदंसणपुरि
६	४	१७	णि जाइउ	णिजाइउ
७	१	४	हउ	हउं
७	१	७	वछीउ	वंछीउ
९	२	१५	भक्खण	भक्खणं
९	२	१६	पत्तय	पत्तयं
९	२	१८	दुह	दुहं
९	३	१७	सुदरि	सुंदरि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संधि	कडवक	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९	३	३१	नरिंदु	नरिंदुं
१०	१	२७	धम्मु	धम्मि
१०	२	२३	लिगियाण	लिंगियाण
१०	२	२८	ंचिउ	सिंचिउ
११	४	७	परिवाय	परवाय
११	५	५	चउरिंदिय	चउरिंदिय
१२	१	७	दोह	दीह
१२	१	१२	करइ	करइं
१२	२	६	हिंडंत	हिंडंति
१२	३	७	सा	सो
१२	३	२५	चउरो	चउरो
१४	६	७	सुगयसुकुमालओ	सु गयसुकुमालओ
१५	१	८	लहहि	लहहिं
१५	१	१२	सुरलोय	सुरलोइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org